॥नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स॥

अभिधानप्पदीपिका

बुद्धप्पणामो

१. तथागतो यो करुणाकरो करो,
पयात'मोसज्ज सुखप्पदं पदं।
अका परत्थं कलिसम्भवे भवे,
नमामि तं केवलदुक्करं करं॥

धम्मप्पणामो

२. अपूजयुं यं मुनिकुञ्जरा जरा,
रुजादिमुत्ता यहिमुत्तरे तरे।
ठिता तिवट्टम्बुनिधिं नरानरा,
तरिंसु तं धम्ममघप्पहं पहं॥

सङ्घप्पणामो

३. गतं मुनिन्दो'रससूनुतं नुतं,
सुपुञ्ञखेत्तं भुवने सुतं सुतं।
गणम्पि पाणीकतसंवरं वरं,
सदा गुणोघेन निरन्तर'न्तरं॥

पटिञ्ञा

४. नामलिङ्गेसु कोसल्ल, मत्थनिच्छयकारणं।
यतो महब्बलं बुद्ध, वचने पाटवत्थिनं॥

५. नामलिङ्गान्य'तो बुद्ध, भासितस्सा'रहान्य'हं।
दस्सयन्तो पकासेस्स, **मभिधानप्पदीपिकं॥**

परिभासा

६. भिय्यो **रूपन्तरा साह, चरियेन** च कत्थचि।
क्वचा' **हच्चविधानेन** ञेय्यं थीपुन्नपुंसकं॥

७. अभिन्नलिङ्गानंयेव, द्वन्दो च, लिङ्गवाचका।
गाथापादन्तमज्झट्ठा, पुब्बं यन्त्यपरे परं॥

८. पुमित्थियं पदं **द्वीसु,** सब्बलिङ्गे च **तीस्विति**।
अभिधानन्तरारम्भे, ञेय्यं **त्व**'न्त **मथा**दि च॥

९. भिय्यो पयोग मागम्म, सोगते **आगमे** क्वचि।
निघण्डु युत्ति ञ्चानीय, नामलिङ्गं कथीयतीति॥

१. सग्गकण्ड

१. बुद्धो दसबलो सत्था, सब्बञ्ञू द्विपदुत्तमो।
मुनिन्दो भगवा नाथो, चक्खुम'ङ्गीरसो मुनि॥

२. लोकनाथो' नधिवरो, महेसि च विनायको।
समन्तचक्खु सुगतो, भूरिपञ्ञो च मारजि॥

३. नरसीहो नरवरो, धम्मराजा महामुनि।
देवदेवो लोकगरु, धम्मस्सामी तथागतो॥

४. सयम्भू सम्मासम्बुद्धो, वरपञ्ञो च नायको।
जिनो, सक्को तु सिद्धत्थो, सुद्धोदनि च गोतमो॥

५. सक्यसीहो तथा सक्य, मुनि चादिच्चबन्धु च।
६. मोक्खो निरोधो निब्बानं, दीपो तण्हक्खयो परं।
ताणं लेण मरूपञ्च, सन्तं सच्च मनालयं॥

७. असङ्खतं सिव ममतं सुदुद्दसं,
परायणं सरण मनीतिकं तथा।
अनासवं धुव मनिदस्सना' कता,
पलोकितं निपुण मनन्त मक्खरं॥

८. दुक्खक्खयो ब्याबज्झञ्च [ब्यापज्जं (टीका)], विवट्टं खेम केवलं।
अपवग्गो विरागो च, पणीत मच्चुतं पदं॥

९. योगक्खेमो पार मपि, मुत्ति सन्ति विसुद्धियो।
विमुत्य' सङ्खतधातु, सुद्धि निब्बुतियो सियुं॥

१०. खीणासवो त्व'सेक्खो च, वीतरागो तथा' रहा।
देवलोको दिवो सग्गो [नाको (सी॰)],
तिदिवो तिदसालयो॥

११. तिदसा त्व'मरा देवा, विबुधा च सुधासिनो।
सुरा मरू दिवोका चा, मतपा सग्गवासिनो॥

१२. निज्जरा' निमिसा दिब्बा, अपुमे देवतानि च [देवता एव देवतानि, सकत्थे निपच्चयो (टीका)]।
१३. सिद्धो भूतो च गन्धब्बो, गुय्हको यक्ख रक्खसा।
कुम्भण्डो च पिसाचा'दी, निद्दिट्ठा **देवयोनियो॥**

१४. पुब्बदेवा सुररिपू, असुरा दानवा पुमे।
तब्बिसेसा पहारादो, सम्बरो बलिआदयो॥

१५. पितामहो पिता ब्रह्मा, लोकेसो कमलासनो।
तथा हिरञ्ञगब्भो च, सुरजेट्ठो पजापति॥

१६. वासुदेवो हरि [हरी (टीका)] कण्हो, केसवो चक्कपाण्य'थ।
महिस्सरो सिवो सूली, इस्सरो पसुपत्य'पि॥

१७. हरो वुत्तो कुमारो तु, खन्धो सत्तिधरो भवे।
१८. सक्को पुरिन्ददो देव, राजा वजिरपाणि च।
सुजम्पति सहस्सक्खो, महिन्दो वजिरावुधो॥

१९. वासवो च दससत, नयनो तिदिवाधिभू।
सुरनाथो च वजिर, हत्थो च भूतपत्य'पि॥

२०. मघवा कोसियो इन्दो, वत्रभू पाकसासनो।
विडोजो थ **सुजा** तस्स [सुजाता'स्स (टीका)], भरिया थ पुरं भवे॥

२१. मसक्कसारा [मसक्कसारो (सी॰)] वस्सोक, सारा चेवा' मरावती।
वेजयन्तो तु पासादो,
सुधम्मा तु सभा मता॥

२२. **वेजयन्तो** रथो तस्स,
वुत्तो **मातलि** सारथि।
एरावणो गजो **पण्डु, कम्बलो** तु सिलासनं॥

२३. **सुवीरो**च्चादयो पुत्ता, **नन्दा** पोक्खरणी भवे।
नन्दनं मिस्सकं चित्त, लता फारुसकं **वना**॥

२४. असनि द्वीसु कुलिसं, वजिरं पुन्नपुंसके।
अच्छरायोत्थियं वुत्ता, रम्भा अलम्बुसादयो।
देवित्थियो थ गन्धब्बा, **पञ्चसिखो**ति आदयो॥

२५. विमानो नित्थियं ब्यम्हं, पीयूसं त्वमतं सुधा।
सिनेरु मेरु तिदिवा, धारो नेरु सुमेरु च॥

२६. युगन्धरो ईसधरो, करवीको सुदस्सनो।
नेमिन्धरो विनतको, अस्सकण्णो **कुलाचला**॥

२७. मन्दाकिनी तथा'कास, गङ्गा सुरनदी प्यथ।
२८. कोविळारो तथा पारि, च्छत्तको पारिजातको।
कप्परुक्खो तु सन्ताना, दयो **देवद्दुमा** सियुं॥

२९. पाची पतीच्चु' दीचि'त्थी, पुब्ब पच्छिम उत्तरा।
दिसाथ दक्खिणा' पाची, विदिसा'नुदिसा भवे॥

३०. एरावतो [एरावणो (सी॰), अमरकोसे पन एरावतो एव अत्थि] पुण्डरीको, वामनो कुमुदो' ञ्जनो।
पुप्फदन्तो सब्बभुम्मो, सुप्पतीको **दिसागजा**॥

३१. **धतरट्ठो** च गन्धब्बा, धिपो, कुम्भण्डसामि तु।
विरुळ्हको, विरूपक्खो, तु नागाधिपतीरितो॥

३२. यक्खाधिपो वेस्सवणो, **कुवेरो** नरवाहनो।
अळका [अलका (अमरकोस)] **ळकमन्दा**स्स, पुरी, पहरणं **गदा।**
चतुद्दिसान मधिपा, पुब्बादीनं कमा इमे॥

३३. जातवेदो सिखी जोति, पावको दहनो' नलो।
हुतावहो' च्चिमा धूम, केत्व'ग्गि गिनि भानुमा॥

३४. तेजो धूमसिखो वायु, सखो च कण्हवत्तनी।
वेस्सानरो हुतासो थ, सिखाजाल'च्चि चापुमे॥

३५. विप्फुलिङ्गं फुलिङ्गञ्च, भस्मा ['भस्मा' तिपदं राजादिगणे परियापन्नं (रूपसिद्धि-उणादि), भस्मं (सी॰)] तु सेट्ठि

छारिका।

३६. **कुक्कुळो** तु'ण्हभस्मस्मि, मङ्गारो'लात मुम्मुकं [तिकं दित्तकट्ठादिन्धने (टीका)]।
समिधा इधुमं चे'धो, उपादानं तथिन्धनं॥

३७. अथो'भासो पकासो चा,
'लोको'ज्जोता'तपा समा।
मालुतो पवनो वायु, वातो'निल समीरणा।
गन्धवाहो तथा वायो, समीरो च सदागति॥

३८. **वायुभेदा** इमे छु'द्ध, ङ्गमो चाधोगमो तथा।
कुच्छिट्ठो च कोट्ठासयो, अस्सासङ्गानुसारिनो॥

३९. अथो अपानं पस्सासो,
अस्सासो आन मुच्चते॥

४०. वेगो जवो रयो खिप्पं, तु सीघं तुरितं लहु।
आसु तुण्ण मरं चावि, लम्बितं तुवटंपि च॥

४१. सततं निच्च मविरता, नारत सन्तत मनवरतञ्च धुवं।
भुस मतिसयो च दळ्हं, तिब्बे'कन्ता'तिमत्त, बाळ्हानि।
खिप्पादी पण्डके दब्बे, दब्बगा तेसु ये तिसु॥

४२. अविग्गहो तु कामो च, मनोभू मदनो भवे।
अन्तको वसवत्ती च, पापिमा च पजापति॥

४३. पमत्तबन्धु कण्हो च, मारो नमुचि, तस्स तु।
तण्हा'रती रगा **धीतू,** हत्थी तु **गिरिमेखलो॥**

४४. यमराजा च वेसायी, यमो'स्स **नयना**वुधं।
वेपचित्ति पुलोमो च, किम्पुरिसो तु किन्नरो॥

४५. अन्तलिक्खं ख'मादिच्च, पथो'ब्भं गगन'म्बरं।
वेहासो चानिलपथो, आकासो नित्थियं नभं॥

४६. देवो वेहायसो तारा,
पथो सुरपथो अघं॥

४७. मेघो वलाहको देवो, पज्जुन्नो'म्बुधरो घनो।

धाराधरो च जीमूतो, वारिवाहो तथा'म्बुदो॥

४८. अब्भं तीस्वथ वस्सञ्च, वस्सनं वुट्ठि नारियं।
सतेरता'क्खणा विज्जु, विज्जुता चाचिरप्पभा॥

४९. मेघनादे तु धनितं, गज्जितं रसितादि च।
इन्दावुधं इन्दधनु, वातक्खित्तम्बु सीकरो॥

५०. आसारो धारा सम्पातो,
करका तु घनोपलं।
दुद्दिनं मेघच्छन्नाहे, पिधानं त्वपधारणं॥

५१. तिरोधान'न्तरधाना, पिधान छादनानि च।
इन्दु चन्दो च नक्खत्त, राजा सोमो निसाकरो॥

५२. ओसधीसो हिमरंसि, ससङ्को चन्दिमा ससी।
सीतरंसि निसानाथो, उळुराजा च मा पुमे॥

५३. **कला** सोळसमो भागो, बिम्बं तु मण्डलं भवे।
अड्ढो त्वद्धो उपड्ढो च, वा खण्डं सकलं पुमे॥

५४. **अद्धं** वुत्तं समे भागे, पसादो तु पसन्नता।
कोमुदी चन्दिका जुण्हा, कन्ति सोभा जुति च्छवि॥

५५. कलङ्को लञ्छनं लक्खं, अङ्को'भिञ्ञाण लक्खणं।
चिहनं चापि सोभा तु, परमा **सुसमा** थ च॥

५६. सीतं गुणे, गुणिलिङ्गा, सीत सिसिर सीतला।
हिमं तुहिन मुस्सावो, नीहारो महिका प्यथ॥

५७. नक्खत्तं जोति भं तारा, अपुमे तारको'ळु च।
५८. अस्सयुजो भरणित्थी, सकत्तिका रोहिणी पिच।
मिगसिर [मगसिर (सी०)] मद्दा च पुनब्बसु, फुस्सो [पुस्सो (टी०)] चासिलेस'पि॥

५९. माघा [मघ (सी०)] च फग्गुनी द्वे च, हत्था चित्ता च स्वातिपि।
विसाखा' नुराधा जेट्ठा, मूला' साळ्हा दुवे तथा॥

६०. सवणो च धनिट्ठा च, सतभिसजो पुब्बु'त्तरभद्दपदा।

रेवत्यपीति कमतो, **सत्ताधिकवीसनक्खत्ता**॥

६१. सोब्भानु कथितो राहु, **सूरा**दी तु नवग्गहा।
रासि **मेसा**दिको भद्द, पदा पोट्ठपदा समा॥

६२. आदिच्चो सूरियो सूरो, सतरंसि दिवाकरो।
वेरोचनो दिनकरो, उण्हरंसि पभङ्करो॥

६३. अंसुमाली दिनपति, तपनो रवि भानुमा।
रंसिमा भाकरो भानु, अक्को सहस्सरंसि च॥

६४. रंसि आभा पभा दित्ति, रुचि भा जुति दीधिति।
मरीचि द्वीसु भान्वं'सु, मयूखो किरणो करो॥

६५. परिधि परिवेसो थ, मरीचि मिगतण्हिका।
सूरस्सोदयतो पुब्बु', द्वितरंसि सिया' **रुणो**॥

६६. कालो'द्धा समयो वेला,
तब्बिसेसा खणादयो।
खणो दसच्छराकालो,
खणा दस **लयो** भवे॥

६७. लया दस **खणलयो,**
मुहुत्तो ते सिया दस।
दस **खणमुहुत्तो** ते, दिवसो तु अहं दिनं॥

६८. पभातञ्च विभातञ्च, पच्चूसो कल्ल मप्यथ।
अभिदोसो पदोसो थ,
सायो सञ्झा दिनच्चयो॥

६९. निसा च रजनी रत्ति, तियामा संवरी भवे।
जुण्हा तु चन्दिकायुत्ता, तमुस्सन्ना **तिमिसिका**॥

७०. निसीथो मज्झिमा रत्ति, अड्ढरत्तो महानिसा।
अन्धकारो तमो नित्थी, तिमिसं तिमिरं मतं॥

७१. **चतुरङ्गतमं** एवं, काळपक्खचतुद्दसी।
वनसण्डो घनो मेघ, पटलं चा'ड्ढरत्ति च॥

७२. **अन्धतमं** घनतमे, पहारो याम, सञ्ञितो।
पाटिपदो तु दुतिया, ततियादी **तिथी** [तिथि], तायति पालेतीति तिथि, ता+इति (ण्वादि) द्विसु॥

७३. पन्नरसी पञ्चदसी, पुण्णमासी तु पुण्णमा।
अमावसी प्यमावासी, थियं पन्नरसी' परा॥

७४. घटिका सट्ठ्य' **होरत्तो, पक्खो** ते दस पञ्च च।
ते तु पुब्बापरा **सुक्क,**
काळा, मासो तु ते दुवे॥

७५. चित्तो वेसाख, जेट्ठो चा, साळ्हो द्वीसु च सावणो।
पोट्ठपाद'स्सयुजा च, मासा द्वादस कत्तिको॥

७६. मागसिरो तथा फुस्सो, कमेन माघ फग्गुणा।
कत्तिक'स्सयुजा मासा, पच्छिम पुब्बकत्तिका॥

७७. सावणो **निक्खमनीयो,**
चित्तमासो तु **रम्मको॥**

७८. चतुरो चतुरो मासा, कत्तिककाळपक्खतो।
कमा **हेमन्त गिम्हान, वस्साना** उतुयो द्विसु॥

७९. **हेमन्तो सिसिर** मुतू,
छ वा **वसन्तो** च **गिम्ह वस्साना।**
सरदोति कमा मासा, द्वे द्वे वुत्तानुसारेन॥

८०. उण्हो निदाघो गिम्होथ,
वस्सो वस्सान पावुसा।
उतूहि तीहि वस्साना, दिकेहि **दक्खिणायनं॥**

८१. **उत्तरायन** मञ्ञेहि, तीहि वस्सायनद्वयं।
वस्स संवच्छरा नित्थी, सरदो हायनो समा॥

८२. कप्पक्खयो तु संवट्टो, युगन्त पलया अपि।
अलक्खी कालकण्णित्थी, अथ लक्खी सिरि'त्थियं॥

८३. दनु दानवमाता थ, देवमाता पना'दिति।
८४.

पापञ्च किब्बिसं वेरा, घं दुच्चरित दुक्कटं।
अपुञ्ञा'कुसलं कण्हं, कलुसं दुरिता'गु च॥

८५. कुसलं सुकतं सुक्कं, पुञ्ञं धम्म मनित्थियं।
सुचरित मथो दिट्ठ, धम्मिकं इहलोकिकं॥

८६. सन्दिट्ठिक मथो पार, लोकिकं सम्परायिकं।
तक्कालं तु तदात्वं चो,
त्तरकालो तु आयति॥

८७. हासो' त्तमनता पीति, वित्ति तुट्ठि च नारियं।
आनन्दो पमुदा'मोदो, सन्तोसो नन्दि सम्मदो॥

८८. पामोज्जञ्च पमोदो थ, सुखं सातञ्च फास्व'थ।
भद्दं सेय्यो सुभं खेमं, कल्याणं मङ्गलं सिवं॥

८९. दुक्खञ्च कसिरं किच्छं, नीघो च ब्यसनं अघं।
दब्बे तु पापपुञ्ञानि, तीस्वाकिच्छं सुखादि च॥

९०. भाग्यं नियति भागो च, भागधेय्यं विधी'रितो।
अथो उप्पत्ति निब्बत्ति, जाति जनन मुब्भवो॥

९१. निमित्तं कारणं ठानं, पदं बीजं निबन्धनं।
निदानं पभवो हेतु, सम्भवो सेतु पच्चयो॥

९२. कारणं यं समासन्नं, **पदट्ठान**न्ति तं मतं।
जीवो तु पुरिसो'त्ता थ, पधानं पकतित्थियं॥

९३. पाणो सरीरी भूतं वा, सत्तो देही च पुग्गलो।
जीवो पाणी पजा जन्तु,
जनो लोको तथागतो॥

९४. रूपं सद्दो गन्ध रसा, फस्सो धम्मो च गोचरा।
आलम्बा विसया ते छा, रम्मणा लम्बणानि च॥

९५. सुक्को गोरो सितो'दाता,
धवलो सेत, पण्डरा।
सोणो तु लोहितो रत्तो,

तम्ब मञ्जिट्ठ रोहिता॥

९६. नीलो कण्हा'सिता काळो,
मेचको साम सामला।
सितपीतेतु **पण्डु**'त्तो, ईसंपण्डुतु **धूसरो॥**

९७. **अरुणो** किञ्चिरत्तो थ,
पाटलो सेतलोहितो।
अथो पीतो हलिद्याभो,
पलासो हरितो हरि॥

९८. **कळारो कपिलो** नील, पीते थ रोचनप्पभे।
पिङ्गो पिसङ्गो प्यथवा, कळारादी तु पिङ्गले॥

९९. कम्मासो सबलो चित्तो,
सावो तु कण्हपीतके।
वाच्चलिङ्गा गुणिन्येते, गुणे सुक्कादयो पुमे॥

१००.नच्चं नट्टञ्च नटनं, नत्तनं लासनं भवे।
नच्चं तु वादितं गीत, मिति **नाटु**मिदं तयं॥

१०१.नच्चट्ठानं सिया **रङ्गो, भिनयो** सूच्यसूचनं।
अङ्गहारो'ङ्गविक्खेपो, नट्टको नटको नटो॥

१०२.सिङ्गारो करुणो वीर, ब्भुत हस्स भयानका।
सन्तो बीभच्छ रुद्दानि, नव **नाट्यरसा** इमे॥

१०३.पोसस्स नारियं पोसे, इत्थिया सङ्गमं पति।
या पिहा एस **सिङ्गारो,** रतिकीळादिकारणो॥

१०४.उत्तम प्पकतिप्पायो, इत्थिपुरिसहेतुको।
सो **सम्भोगो वियोगो**ति,
सिङ्गारो दुविधो मतो॥

१०५.भासितं लपितं भासा, वोहारो वचनं वचो।
उत्ति वाचा गिरा वाणी, भारती कथिता [कथा (कत्थचि)] वची॥

१०६.एकाख्यातो पदचयो, सिया **वाक्यं**सकारको।

आमेडितन्ति विञ्ञेय्यं, द्वत्तिक्खत्तु मुदीरणं॥

१०७.भये कोधे पसंसायं, तुरिते कोतूहले'च्छरे।
हासे सोके पसादे च, करे आमेडितं बुधो॥

१०८.**इरु** नारी **यजु साम,** मिति वेदा तयो सियुं।
एते एव तयी नारी, वेदो मन्तो सुतित्थियं॥

१०९.अट्ठको वामको वाम, देवो चङ्गीरसो भगु।
यमदग्गि च वासिट्ठो, भारद्वाजो च कस्सपो।
वेस्सामित्तोति मन्तानं, कत्तारो इसयो इमे॥

११०.कप्पो ब्याकरणं जोति, सत्थं सिक्खा निरुत्ति च।
छन्दोविचिति चेतानि, **वेदङ्गानि** वदन्ति छ॥

१११. **इतिहासो** पुरावुत्त, प्पबन्धो भारतादिको।
नामप्पकासकं सत्थं, रुक्खादीनं **निघण्डु** सो॥

११२. वितण्डसत्थं विञ्ञेय्यं, यं तं **लोकायतं** इति।
केटुभं तु क्रियाकप्प, विकप्पो कविनं हितो॥

११३. **आख्यायिको**पलद्धत्था, पबन्धकप्पना **कथा।**
दण्डनीत्य'त्थसत्थस्मिं, वुत्तन्तो तु पवत्ति च॥

११४.सञ्ञा, ख्या, व्हा समञ्ञा चा, भिधानं नाम मव्हयो।
नामधेय्या' धिवचनं, पटिवाक्यं तु उत्तरं॥

११५.पञ्हो तीस्व नुयोगो च, पुच्छा प्यथ निदस्सनं।
उपोग्घातो च दिट्ठन्तो, तथो'दाहरणं भवे॥

११६.समा सङ्खेप संहारा, समासो सङ्गहो प्यथ।
सतं धारयसी त्याद्य, **ब्भक्खानं** तुच्छभासनं॥

११७.वोहारो तु विवादो थ, सपनं सपथोपि च।
यसो सिलोको कित्तित्थी,
घोसना तु'च्चसद्दनं॥

११८.पटिघोसो पटिरवो, थो' पञ्ञासो वचीमुखं।

कत्थना च सिलाघा च, वण्णना च नुति त्थुति॥

११९. थोमनञ्च [थोमनं वा (कत्थचि थोमनं थोमना द्विलिङ्गे)] पसंसाथ, **केका** नादो सिखण्डिनं।
गजानं **कोञ्च**नादो थ,
मता **हेसा** हयद्धनि॥

१२०.परियायो वेवचनं, साकच्छा तु च संकथा।
उपवादो चु'पक्कोसा, वण्णवादा'नुवादो च।
जनवादा'पवादापि, परिवादो च तुल्यत्था॥

१२१. खेपो निन्दा तथा कुच्छा, जिगुच्छा गरहा भवे।
निन्दापुब्बो उपारम्भो, **परिभासन** मुच्चते॥

१२२.अट्ठानरियवोहार, वसेन या पवत्तिता।
अभिवाक्यं सिया वाचा, सा वीतिक्कमदीपनी॥

१२३.मुहुंभासा **नुलापो**थ, **पलापो** नत्थिका गिरा।
आदोभासन **मालापो,**
विलापो तु परिद्दवो॥

१२४.विप्पलापो विरोधोत्ति, सन्देसोत्ति तु वाचिकं।
सम्भासनं तु **सल्लापो,** विरोधरहितं मिथु॥

१२५.**फरुसं** निट्ठुरं वाक्यं, मनुञ्ञं **हदयङ्गमं।**
संकुलं तु **किलिट्ठ**ञ्च, पुब्बापरविरोधिनी॥

१२६.समुदायत्थरहितं, **अबद्ध**मिति [अबन्ध (क०)] कित्तितं।
वितथं तु मुसा चाथ [आहतं तु मुसात्थकं (कत्थचि, अमरकोसे)], फरुसादी तिलिङ्गिका॥

१२७.सम्मा ब्ययञ्चा वितथं, सच्चं तच्छं यथातथं।
तब्बन्ता तीस्व लीकं त्व, सच्चं मिच्छा मुसा ब्ययं॥

१२८.रवो निनादो निनदो च सद्दो,
निग्घोस नाद द्धनयो च रावो।
आराव संराव विराव घोसा,
रवा सुतित्थी सर निस्सना च॥

१२९.विस्सट्ठ मञ्जु विञ्ञेय्या, सवनीया विसारिनो।

बिन्दु गम्भीर निन्नादी, त्येव **मट्ठङ्गिको सरो॥**

१३०.तिरच्छानगतानञ्हि, रुतं **वस्सित** मुच्चते।
कोलाहलो कलहलो,
गीतं गानञ्च गीतिका॥

१३१. सरा सत्त तयो गामा, चेकवीसति मुच्छना।
ताना [ठानानि (बहूसु)] चेकूनपञ्ञास, इच्चेतं **सरमण्डलं॥**

१३२.उसभो धेवतो चेव, छज्ज गन्धार मज्झिमा।
पञ्चमो च निसादोति, **सत्ते**'ते गदिता सरा॥

१३३.नदन्ति **उसभं** गावो, तुरगा **धेवतं** तथा।
छज्जं मयूरा **गन्धार,** मजा कोञ्चा च **मज्झिमं॥**

१३४.**पञ्चमं** परपुट्ठादी, **निसादम्पि** च वारणा।
छज्जो च **मज्झिमो** गामा,
तयो **साधारणो**ति च॥

१३५.सरेसु तेसु पच्चेके, तिस्सो तिस्सो हि मुच्छना।
सियुं तथेव तानानि [ठानानि (बहूसु)], सत्त सत्तेव लब्भरे॥

१३६.तिस्सो दुवे चतस्सो च, चतस्सो कमतो सरे।
तिस्सो दुवे चतस्सोति, **द्वावीसति** सुती सियुं॥

१३७.उच्चतरे रवे **तारो,** थाब्यत्ते मधुरे **कलो।**
गम्भीरे तु रवे **मन्दो,** तारादी तीस्वथो कले।
काकली सुखुमे वुत्तो,
क्रियादिसमता **लयो॥**

१३८.वीणा च वल्लकी सत्त, तन्ती सा **परिवादिनी।**
पोक्खरो दोणि वीणाय,
उपवीणो तु वेठको॥

१३९.आततञ्चेव वितत, माततविततं घनं।
सुसिरं चेति **तूरियं, पञ्चङ्गिक** मुदीरितं॥

१४०.**आततं** नाम चम्माव, नद्धेसु भेरियादिसु।

तले'केकयुतं कुम्भ, थुण दद्दरिकादिकं॥

१४१.**विततं** चो'भयतलं, तूरियं मुरजादिकं।
आततविततं सब्ब, विनद्धं पणवादिकं॥

१४२.**सुसिरं** वंससङ्खादि, सम्मतालादिकं **घनं।**
आतोज्जं तु च वादित्तं, वादितं वज्ज मुच्चते॥

१४३.भेरी (भेरि) दुन्दुभि वुत्तो थ,
मुदिङ्गो मुरजोस्स तु।
आलिङ्ग, ङ्क्यो, द्धका भेदा,
तिणवो तु च डिण्डिमो॥

१४४आलम्बरो तु पणवो, **कोणो** वीणादिवादनं।
दद्दरी पटहो भेरि, प्पभेदा **मद्दला**दयो॥

१४५ज्ञनप्पिये विमद्दुट्ठे, गन्धे **परिमलो** भवे।
सो त्वा **मोदो** दूरगामी, विस्सन्ता तीस्वितो परं॥

१४६इट्ठगन्धो च सुरभि, सुगन्धो च सुगन्धि च।
पूतिगन्धि तु दुग्गन्धो, थ विस्सं आमगन्धि यं॥

१४७कुङ्कुमञ्चेव यवन, पुप्फञ्च तगरं तथा।
तुरुक्खोति **चतुज्जाति, गन्धा** एते पकासिता॥

१४८क्सावो नित्थियं तित्तो, मधुरो लवणो इमे।
अम्बिलो कटुको चेति, **छ रसा** तब्बती तिसु॥

१४९.सिया फस्सो च फोट्ठब्बो,
विसयी त्वक्ख मिन्द्रियं।
नयनं त्वक्खि नेत्तञ्च, लोचनं च'च्छि चक्खु च॥

१५०.सोतं सद्दग्गहो कण्णो, सवनं सुति नत्थु तु।
नासा च नासिका घानं, जिव्हातु रसना भवे॥

१५१.सरीरं वपु गत्तञ्चा, त्तभावो बोन्दि विग्गहो।
देहं वा पुरिसे कायो, थियं तनु कळेवरं॥

१५२.चित्तं चेतो मनो नित्थी, विञ्ञाणं हदयं तथा।
मानसं धी तु पञ्ञा च, बुद्धि मेधा मति मुति॥

१५३.भूरी मन्ता च पञ्ञाणं, ञाणं विज्जा च योनि च।
पटिभान ममोहो थ, पञ्ञाभेदा **विपस्सना॥**

१५४**सम्मादिट्ठि** पभुतिका, वीमंसा तु विचारणा।
सम्पजञ्ञं तु नेपक्कं, वेदयितं तु वेदना॥

१५५तक्को वितक्को सङ्कप्पो,
प्पनो' हा' यु तु जीवितं।
एकग्गता तु समथो, अविक्खेपो समाधि च॥

१५६.उस्साहा' तप्प पग्गाहा, वायामो च परक्कमो।
पधानं वीरियं चेहा, उय्यामो च धिति त्थियं॥

१५७चत्तारि **वीरियङ्गानि,** तचस्स च नहारुनो।
अवसिस्सन मट्ठिस्स, मंसलोहितसुस्सनं॥

१५८.**उस्सोळ्ही** त्व धिमत्तेहा, सति त्व नुस्सति त्थिय।
लज्जा हिरी समाना थ, ओत्तप्पं पापभीरुता॥

१५९.मज्झत्तता तु'पेक्खा च, अदुक्खमसुखा सिया।
चित्ताभोगो मनक्कारो,
अधिमोक्खो तु निच्छयो॥

१६०.दया' नुकम्पा कारुञ्ञं, करुणा च अनुद्दया।
थियं वेरमणी चेव, विरत्या' रति चाप्यथ॥

१६१.तितिक्खा खन्ति खमनं, खमा मेत्ता तु मेत्य'थ।
दस्सनं दिट्ठि लद्धित्थी, सिद्धन्तो समयो भवे॥

१६२.तण्हा च तसिणा एजा, जालिनी च विसत्तिका।
छन्दो जटा निकन्त्या'सा, सिब्बिनी भवनेत्ति च॥

१६३.अभिज्झा वनथो वानं, लोभो रागो च आलयो।
पिहा मनोरथो इच्छा, भिलासो काम दोहळा।
आकङ्खा रुचि वुत्ता सा, त्वधिका **लालसा** द्विसु॥

१६४.वेरं विरोधो विद्देसो, दोसो च पटिघञ्च वा।
कोधा' घाता कोप रोसा,
ब्यापादो' नभिरद्धि च॥

१६५.बद्धवेर मुपनाहो, सिया सोको तु सोचनं।
रोदितं कन्दितं रुण्णं, परिदेवो परिद्दवो॥

१६६.भीतित्थि भय मुत्तासो, भेरवं तु महब्भयं।
१६७.भेरवं भीसनं भीमं, दारुणञ्च भयानकं।
घोरं पटिभयं भेस्मं, भयङ्कर मिमे तीसु॥

१६८.इस्सा उसूया मच्छेरं, तु मच्छरिय मच्छरं।
मोहो'विज्जा तथा'ञाणं, मानो विधा च उन्नति॥

१६९.उद्धच्च मुद्धटं चाथ [उद्धवंउद्धं धावति चित्त मेतेनाति उद्धवं (टीका)], तापो कुक्कुच्चमेव च।
पच्छातापो नुतापो च, विप्पटिसारो पकासितो॥

१७०.मनोविलेख सन्देहा, संसयो च कथंकथा।
द्वेळ्हकं विचिकिच्छा च, कङ्खा सङ्का विमत्यपि॥

१७१.गब्बो भिमानो'हंकारो, चिन्तातु झान मुच्चते।
निच्छयो निण्णयो वुत्तो, पटिञ्ञा तु पटिस्सवो॥

१७२.अवमानं तिरक्कारो, परिभवो प्य' नादरो।
पराभवो प्य' वञ्ञा थ, उम्मादो चित्तविब्भमो॥

१७३.पेमं सिनेहो स्नेहो थ, चित्तपीळा विसञ्ञिता।
पमादो सतिवोस्सग्गो, कोतूहलं कुतूहलं॥

१७४.विलासो ललितं लीला, हावो हेळा च विब्भमो।
इच्चादिका सियुं नारि, सिङ्गारभावजा किरिया॥

१७५.हसनं हसितं हासो, मन्दो सो मिहितं सितं।
अट्टहासो महाहासो,
रोमञ्चो लोमहंसनं॥

१७६.परिहासो दवो खिड्डा, केळि कीळा च कीळितं।

निद्दा तु सुपिनं सोप्पं, मिद्धञ्च पचलायिका॥

१७७थियं निकति कूटञ्च, दम्भो साठ्यञ्च केतवं।
सभावो तु निस्सग्गो च, सरूपं पकतित्थियं॥

१७८.सीलञ्च लक्खणं भावो,
उस्सवो तु छणो महो [मतो (टी॰)]॥

१७९.धारेन्तो जन्तु सस्नेह, मभिधानप्पदीपिकं।
खुद्दकाद्यत्थजातानि [खुद्दकान्यत्थजातानि (क॰)], सम्पस्सति यथासुखं॥

सग्गकण्डो निट्ठितो।

२. भूकण्ड

१. भूमिवग्ग

१८०.वग्गा भूमि, पुरी, मच्च, चतुब्बण्ण, वनादिहि।
पातालेन च वुच्चन्ते, सङ्गो'पङ्गेहि'ध'क्कमा॥

१८१.वसुन्धरा छमा भूमि, पथवी मेदनी मही।
उब्बी वसुमती गो कु, वसुधा धरणी धरा।
पुथवी जगती भूरी, भू च भूतधरा' वनी॥

१८२.खारा तु मत्तिका **ऊसो,** ऊसवा तूसरो तिसु।
थलं थलीत्थी भूभागे, थद्धलूखम्हि **जङ्गलो॥**

१८३.पुब्बविदेहो चापर, गोयानं जम्बुदीपो च।
उत्तरकुरु चेति सियुं, चत्तारोमे **महादीपा॥**

१८४पुम्बहुत्ते कुरू सक्का, कोसला मगधा सिवी।
कलिङ्गा'वन्ति पञ्चाला, वज्जी गन्धार चेतयो॥

१८५.वङ्गा विदेहा कम्बोजा, मद्दा भग्ग'ङ्ग सीहळा।
कस्मीरा कासि पण्डवादी, सियुं **जनपदन्तरा॥**

१८६.लोको च भुवनं वुत्तं, देसो तु विसयो प्यथ।
मिलक्खदेसो पच्चन्तो, मज्झदेसो तु मज्झिमो॥

१८७.अनूपो सलिलप्पायो, कच्छं पुम नपुंसके।
सद्दलो हरिते देसे, तिणेना, भिनवेन हि॥

१८८.नद्यम्बुजीवनो देसो, वुट्ठिनिप्पज्जसस्सको।
यो **नदीमातिको देव,**
मातिको च कमेन सो॥

१८९.तीस्वनूपाद्यथो चन्द, सूरादो **सस्सती**रितो।
रट्ठं तु विजितञ्चाथ, पुरिसे सेतु आलियं॥

१९०.उपान्तभू **परिसरो,** गोट्ठं तु गोकुलं वजो।
मग्गो पन्थो पथो अद्धा, अञ्जसं वटुमं तथा॥

१९१. पज्जो [पज्जा.... (क०)], यनञ्च पदवी, वत्तनी पद्धतित्थियं।
तब्भेदा जङ्घ, सकट, मग्गा ते च **महद्धनि॥**

१९२.**एकपद्ये**कपदिके, कन्तारो तु च दुग्गमे।
१९३.पटिमग्गो पटिपथो, **अद्धानं** दीघ मञ्जसं।
सुप्पथो तु सुपन्थो च, उप्पथं त्वपथं भवे॥

१९४ छत्तिंसपरमाणून, मेको **णु** च छत्तिंस ते।
तज्जारी तापि छत्तिंस, **रथरेणु** छत्तिंस ते॥

१९५.**लिक्खा**ता सत्त **ऊका** ता, **धञ्ञमासो**ति सत्त ते।
सत्त **ङ्गुल**’ ममु द्विच्छ, **विदत्थि** ता दुवे सियुं॥

१९६.**रतनं** तानि सत्तेव, यट्ठि ता वीसतू **सभं।**
गावुत मुसभासीति, **योजनं** चतुगावुतं॥

१९७.धनुपञ्चसतं **कोसो, करीसं** चतुरम्बणं।
अब्भन्तरं तु हत्थान, मट्ठवीस पमाणतो॥

भूमिवग्गो निट्ठितो।

२. भूकण्ड

२. पुरवग्ग

१९८.पुरं नगर मित्थी वा, ठानीयं पुटभेदनं।
थियं तु राजधानी [राजठानी (टी०)] च, खन्धावारो भवे थ च॥

१९९.**साखानगर** मञ्ञत्र, यं तं मूलपुरा पुरं।
बाराणसी च सावत्थि, वेसाली मिथिला, ळवी॥

२००.कोसम्बु, ज्जेनियो तक्क, सिला चम्पा च सागलं।
सुसुमारगिरं [संसुमार (टीका)] राज, गहं कपिलवत्थु च॥

२०१.साकेत, मिन्दपत्थञ्चो, क्कट्ठा पाटलिपुत्तकं।
जेतुत्तरञ्च सङ्कस्सं, कुसिनारादयो पुरी॥

२०२.रच्छा च विसिखा वुत्ता, रथिका वीथि चाप्यथ।
ब्यूहो रच्छा अनिब्बिद्धा, निब्बिद्धा तु **पथद्धि** च॥

२०३.चतुक्कं चच्चरे मग्ग, सन्धि सिङ्घाटकं भवे।
पाकारो वरणो चाथ, उदापो [उद्दाप, उद्वाप] उपकारिका॥

२०४कुट्टं तु भित्ति नारी थ, गोपुरं द्वारकोट्ठको।
एसिका इन्दखीलो च, अट्टो त्वट्टालको भवे॥

२०५तोरणं तु बहिद्वारं, परिखातु च दीघिका।
मन्दिरं सदना, गारं, निकायो निलया, लयो॥

२०६.आवासो भवनं वेस्मं, निकेतनं निवेसनं।
घरं गहञ्चा, वसथो, सरणञ्च पतिस्सयो॥

२०७ओकं साला खयो वासो, थियं कुटि वसत्य'पि।
गेहञ्चा, नित्थि सदुमं, चेतिया, यतनानि तु॥

२०८.पासादो चेव यूपो थ, मुण्डच्छदो च हम्मियं।
यूपोतु गजकुम्भम्हि, **हत्थिनखो** पतिट्ठितो॥

२०९.सुपण्णवङ्कच्छदन, **मङ्कयोगो** सिया थ च।
एककूटयुतो **माळो,**
पासादो चतुरस्सको॥

२१०.सभायञ्च सभा चाथ, मण्डपं वा जनालयो।

अथो आसनसालायं, **पटिक्कमन** मीरितं॥

२११. जिनस्स वासभवन, मित्थी **गन्धकुटि** प्यथ।
थियं रसवती पाक, ट्ठानञ्चेव महानसं॥

२१२. आवेसनं सिप्पसाला, **सोण्डा** तु पानमन्दिरं।
वच्चट्ठानं **वच्चकुटि,** मुनीनं ठान **मस्समो॥**

२१३. पण्यविक्कयसाला कु, आपणो पण्यवीथिका।
उदोसितो भण्डसाला, चङ्कमनं तु चङ्कमो॥

२१४ जन्ताघरं त्वग्गिसाला, पपा पानीयसालिका।
गब्भो ओवरको वासा, गारं तु सयनिग्गहं॥

२१५. इत्थागारं तु ओरोधो, सुद्धन्तो' न्तेपुरम्पि च।
असब्बविसयट्ठानं, रञ्ञं **कच्छन्तरं** मतं॥

२१६. सोपानो वा'रोहणञ्च,
निस्सेणी सा, धिरोहिणी।
वातपानं गवक्खो च, जालञ्च सीहपञ्जरं॥

२१७. आलोकसन्धि वुत्तो थ, लङ्गी'त्थी पलिघो भवे।
कपिसीसो, ग्गलत्थम्भो, **निब्बं** तु छद्दकोटियं॥

२१८. छदनं पटलं छद्द, मजिरं चच्चरो, ङ्गणं।
पघानो पघना, लिन्दो, पमुखं द्वारबन्धनं॥

२१९. पिट्ठसङ्घाटकं द्वार, बाहा कूटं तु कण्णिका।
द्वारञ्च पटिहारो थ, उम्मारो देहनी, त्थियं॥

२२०. एळको इन्दखीलो थ, थम्भो थूणो पुमित्थियं।
पाटिका, ड्ढेन्दुपासाणे, गिञ्जका तु च इट्ठका॥

२२१. वलभिच्छादिदारुम्हि, वङ्के **गोपानसी,** त्थियं।
कपोतपालिकायं तु, **विटङ्को** नित्थियं भवे॥

२२२. कुञ्चिकाविवरं ताळ, च्छिग्गलो प्यथ कुञ्चिका।
ताळो'वापुरणं चाथ, वेदिका वेदि कथ्यते॥

२२३.**सङ्घातो पक्खपासो** च, मन्दिरङ्गा **तुला** अपि।
थियं सम्मुज्जनी चेव, सम्मज्जनी च सोधनी॥

२२४.सङ्कटीरं तु सङ्कार, ट्ठानं सङ्कारकूटकं।
अथो कचवरो, क्लापो, सङ्कारो च कसम्बुपि॥

२२५.घरादिभूमि तं **वत्थु,** गामो संवसथो थ सो।
पाकटो **निगमो** भोग, मच्चादिभ्यो धि तूदितो ['अधिभू'ति ईरितो कथितो (टी०)]॥

२२६.सीमा च मरियादा थ,
घोसो गोपालगामकोति॥

पुरवग्गो निट्ठितो।

३. नरवग्ग

२२७.मनुस्सो मानुसो मच्चो, मानवो मनुजो नरो।
पोसो पुमा च पुरिसो,
पोरिसो प्यथ पण्डितो॥

२२८.बुधो विद्वा विभावी च, सन्तो सप्पञ्ञ कोविदा।
धीमा सुधी कवि ब्यत्तो, विचक्खणो विसारदो॥

२२९.मेधावी मतिमा पञ्ञो, विञ्ञू च विदूरो विदू।
धीरो विपस्सी दोसञ्ञू, बुद्धो च दब्ब विद्दसु॥

२३०.इत्थी सीमन्तिनी नारी, थी वधू वनिता, ङ्गना।
पमदा सुन्दरी कन्ता, रमणी दयिता, बला॥

२३१.मातुगामो च महिला, ललना भीरु कामिनी।
कुमारिका तु कञ्ञा थ, युवती तरुणी भवे॥

२३२.**महेसी** साभिसेकाञ्ञा,
भोगिनी राजनारियो।
धवत्थिनी तु सङ्केतं, याति या सा, **भिसारिका॥**

२३३.गणिका वेसिया वण्ण, दासी नगरसोभिनी।
रूपूपजीविनी वेसी, कुलटा तु च बन्धकी॥

२३४वरारोहो, त्तमा मत्त, कासिनी वरवण्णिनी।
पतिब्बता त्वपि सती, कुलित्थी कुलपालिका॥

२३५विधवा पतिसुञ्ञा थ, पतिम्बरा सयम्बरा।
विजाता तु पसूता च, जातापच्चा पसूतिका॥

२३६.दूती सञ्चारिका दासी, तु चेटी कुटधारिका।
वारुणी, क्खणिका तुल्या, खत्तियानी तु खत्तिया॥

२३७दारो जाया कलत्तञ्च, घरणी भरिया पिया,
पजापती च दुतिया, सा पादपरिचारिका॥

२३८.सखी त्वा'ली वयस्सा थ, जारी चेवा'तिचारिनी।
पुमे तू'तु रजो पुप्फं, उतुनी तु रजस्सला॥

२३९.पुप्फवती गरुगब्भा, पन्नसत्ता च गब्भिनी।
गब्भासयो जलाबुपि, कललं पुन्नपुंसके॥

२४०धवोतु सामिको भत्ता, कन्तो पति वरो पियो।
अथो पपति जारो था,
पच्चं पुत्तो'त्रजो सुतो॥

२४१तनुजो तनयो सूनु, पुत्तादी धीतरि'त्थियं।
नारियं दुहिता धीता,
सजातो त्वो'**रसो** सुतो॥

२४२जायापती जनिपती, जयम्पती तु दम्पती [दम्पतीति पदं पुल्लिङ्ग बहुवचनन्तं इकारन्तं, तुदम्पति (टी०)]।
अथ वस्सवरो वुत्तो, पण्डको च नपुंसकं॥

२४३बन्धवो बन्धु सजनो, सगोत्तो ञाति ञातको।
सालोहितो सपिण्डो च,
तातो तु जनको पिता॥

२४४अम्म, म्बा जननी माता, जनेत्ति जनिका भवे।
उपमाता तु धाति'त्थी,
सालो जायाय भातिको॥

२४५**ननन्दा** सामिभगिनी, मातामही तु अय्यिका।

मातुलो मातुभाता,स्स, **मातुलानी** पजापति॥

२४६ञायापतीनं जननी, **सस्सु** वुत्ताथ तप्पिता।
ससुरो भागिनेय्योतु, पुत्तो भगिनिया भवे॥

२४७नत्ता वुत्तो पपुत्तो थ, सामिभाता तु **देवरो।**
धीतुपति तु **जामाता,**
अय्यको तु पितामहो॥

२४८**मातुच्छा** मातुभगिनी, **पितुच्छा** भगिनी पितु।
पपितामहो पय्यको,
सुण्हा तु सुणिसा हुसा॥

२४९सोदरियो सगब्भो च, सोदरो सहजो प्यथ।
मातापितू ते **पितरो, पुत्ता** तु पुत्तधीतरो॥

२५०**ससुरा** सस्सुससुरा, भातुभगिनी **भातरो।**
बालत्तं बालता बाल्यं, योब्बञ्ञंतु च योब्बनं॥

२५१.सुक्का तु **पलितं** केसा, दयो थ जरता जरा।
पुथुको पिल्लको छापो, कुमारो बाल पोतका॥

२५२अथु' त्तानसयु'त्तान, सेय्यका थनपोपि च।
२५३तरुणो च वयट्ठो च, दहरो च युवा सुसु।
माणवोदारकोचाथ, सुकुमारो सुखेधितो॥

२५४महल्लको च वुड्ढो च, थेरो जिण्णो च जिण्णको।
अग्गजो पुब्बजो जेट्ठो, कनियो कनिट्ठो नुजो॥

२५५वलित्तचो तु वलिनो। तीसु'त्तानसयादयो।
२५६सीसो'त्तमङ्गानि सिरो, मुद्धा च मत्थको भवे।
केसो तु कुन्तलो वालो, त्तमङ्गरुह मुद्धजा॥

२५७**धम्मिल्लो** संयता केसा,
काकपक्खो सिखण्डको।
पासो हत्थो केसचये।
तापसानं तहिं **जटा॥**

२५८थियं वेणी पवेणी च।
अथो चूळा सिखा सिया।
सीमन्तो तु मतो नारि, केसमज्झम्हि पद्धति॥

२५९लोमं तनुरुहं रोमं, पम्हं पखुम मक्खिगं।
मस्सु वुत्तं पुममुखे, भू त्वित्थी भमुको भमु॥

२६०.ब्पो [खप्पो (टी॰)] नेत्तजल'स्सूनि, नेत्ततारा कनीनिका।
वदनं तु मुखं तुण्डं, वत्तं लपन माननं॥

२६१.द्विजो लपनजो दन्तो, दसनो रदनो रदो।
दाठा तुदन्तभेदस्मिं, **अपाङ्गो** त्वक्खिकोटिसु॥

२६२.दन्तावरण मोट्ठो चा, प्य'धरो दसनच्छदो।
गण्डो कपोलो हन्वित्थी [गण्डत्थी (टी॰) हन्वत्थी=हनु+इत्थी। हन+उ (ण्वादि)],
चुबुकं त्व' धरा अधो॥

२६३.गलो च कण्ठो गीवा च, कन्धरा च सिरोधरा।
कम्बुगीवा तु या गीवा, सुवण्णालिङ्गसन्निभा।
अङ्किता तीहि लेखाहि, **कम्बुगीवा** थवा मता॥

२६४अंसो नित्थी भुजसिरो, खन्धो तस्सन्धि **जत्तु** तं।
बाहुमूलं तु कच्छो, धो, त्व'स्स **पस्स** मनित्थियं॥

२६५बाहु भुजाद्वीसु बाहा, हत्थो तु कर पाणयो।
मणिबन्धो पकोट्ठन्तो, कप्परो तु कपोण्य'थ॥

२६६.मणिबन्ध कनिट्ठानं, पाणिस्स **करभो**,न्तरं।
करसाखा, ङ्गुली ता तु, **पञ्च,** ङ्गुट्ठो च तज्जनी।
मज्झिमा नामिका चापि, कनिट्ठा'ति कमा सियुं॥

२६७पदेसो तालगोकण्णा, विदत्थि,त्थी कमा तते।
तज्जन्यादियुते'ङ्गुट्ठे, **पसतो** पाणि कुञ्चितो॥

२६८.रतनं कुक्कु हत्थो थ, पुमे करपुटो,ञ्जलि।
करजो तु नखो नित्थी, खटको मुट्ठि च द्वीसु॥

२६९.**ब्यामो** सहकरा बाहु, द्वे पस्सद्वयवित्थता।

उद्धन्तत भुजपोस, प्पमाणे **पोरिसं** तिसु॥

२७०उरो च हदयं चाथ, थनो कुच पयोधरा।
चूचुकं तु थनग्गस्मिं, पिट्ठं तु पिट्ठि नारियं॥

२७१मज्झो'नित्थी विलग्गो च, मज्झिमं कुच्छि [चतुक्कं उदरे। ९४४-गाथापि पस्सितब्बा] तु द्विसु।
गहणीत्थ्युदरं गब्भो, कोट्ठोन्तो कुच्छिसम्भवे॥

२७२जघनं तु नितम्बो च, सोणी च कटि नारियं।
अङ्गजातं रहस्सङ्गं, वत्थगुय्हञ्च मेहनं॥

२७३निमित्तञ्च वरङ्गञ्च, बीजञ्च फलमेव च।
लिङ्गं अण्डं तु कोसो च,
योनि त्वित्थीपुमेभगं॥

२७४असुचि सम्भवो सुक्कं, पायु तु पुरिसे गुदं।
वा पुमे गूथ करीस, वच्चानि च मलं छकं॥

२७५उच्चारो मीळ्ह मुक्कारो, पस्सावो मुत्त मुच्चते।
पूतिमुत्तञ्च गोमुत्ते, स्सादीनं **छकणं** मले॥

२७६द्वीस्वधो नाभिया **वत्थि,** उच्छङ्ग'ङ्का तु'भो पुमे।
ऊरु सत्थि पुमे ऊरु, पब्बं तु जाणु जण्णु च॥

२७७गोप्फको पादगण्ठिपि, पुमे तु पण्हि पासणि।
पादग्गं पपदो पादो, तु पदो चरणञ्च वा॥

२७८अङ्गं'त्व'वयवो वुत्तो, फासुलिका तु फासुका।
पण्डके अट्ठि धात्वित्थी, गलन्तट्ठि तु **अक्खको॥**

२७९कप्परो तु कपालं वा, कण्डरा तु महासिरा।
पुमे न्हारु चित्थी सिरा, धमनी थ रसग्गसा॥

२८०रसहरण्य'थो मंस, मामिसं पिसितं भवे।
तिलिङ्गिकं तु वल्लूर, मुत्तत्तं अथ लोहितं॥

२८१.रुधिरं सोणितं रत्तं, लाला खेळो एला भवे।
पुरिसे मायु पित्तञ्च, सेम्हो नित्थी सिलेसुमो॥

२८२.वसा विलीनस्नेहो थ, मेदो चेव वपा भवे।
आकप्पो वेसो नेपच्छं, मण्डनं तु पसाधनं॥

२८३.विभूसनं चाभरणं, अलङ्कारो पिलन्धनं।
किरीट मकुटा'नित्थी, चूळामणि सिरोमणि॥

२८४सिरोवेठन मुण्हीसं, कुण्डलं कण्णवेठनं।
कण्णिका कण्णपूरो च, सिया कण्णविभूसनं॥

२८५कण्ठभूसा तु गीवेय्यं, हारो मुत्तावलि'त्थियं।
नियुरो वलयो नित्थी, कटकं परिहारकं॥

२८६.कङ्कणं करभूसा थ, किङ्किणी [किंकणी किं कणिका (क०)] खुद्दघण्टिका।
अङ्गुलीयक मङ्गुल्या, भरणं, **साक्खरं** तु तं॥

२८७मुद्दिका'ङ्गुलिमुद्दा थ, रसना मेखला भवे।
केयूर मङ्गदञ्चेव, बाहुमूलविभूसनं॥

२८८.पादङ्गदं तु मञ्जीरो, पादकटक नूपुरा।
२८९.अलङ्कारप्पभेदा तु, **मुखफुल्लं** तथो'**ण्णतं।**
उग्गत्थनं गिङ्गमक, मिच्चेवमादयो सियुं॥

२९०.चेल मच्छादनं वत्थं, वासो वसन मंसुकं।
अम्बरञ्च पटो नित्थी, दुस्सं चोलो च साटको॥

२९१.खोमं दुकूलं कोसेय्यं, पत्तुण्णं कम्बलो च वा।
साणं कोटम्बुरं भङ्ग, न्त्यादि **वत्थन्तरं** मतं॥

२९२.निवासन न्तरीयान्य, न्तरमन्तरवासको।
पावारो तु'त्तरासङ्गो, उपसंब्यान मुत्तरं॥

२९३.उत्तरीय मथो वत्थ, **महत**न्ति मतं नवं।
नन्तकं कप्पटो जिण्ण, वसनं तु पटच्चरं॥

२९४कञ्चुको वारवाणं वा, थ वत्थावयवे **दसा।**
नालिपट्टोति कथितो, उत्तमङ्गम्हि कञ्चुको॥

२९५.आयामो दीघता रोहो,

परिणाहो विसालता॥

२९६.अरहद्धजो च कासाय, कासावानि च चीवरं।
मण्डलं तु तदङ्गानि, **विवट्ट कुसि**आदयो॥

२९७फ़ल,त्तच, किमि, रोमा, न्येता वत्थस्स योनियो।
फालं **कप्पासिकं** तीसु, **खोमा**दी तु तचब्भवा॥

२९८.**कोसेय्यं** किमिजं, रोम, मयं तु **कम्बलं** भवे।
समानत्था जवनिका, सा तिरोकरणी प्यथ॥

२९९.पुन्नपुंसक मुल्लोचं, वितानं द्वय मीरितं।
नहानञ्च सिनाने थो, ब्बट्टनु'म्मज्जनं समं॥

३००.विसेसको तु तिलको, त्यूभो नित्थी च चित्तकं।
चन्दनो नित्थियं गन्ध, सारो मलयजो प्यथ॥

३०१.गोसीसं तेलपण्णिकं, पुमे वा हरिचन्दनं।
तिलपण्णी तु पत्तङ्ग, रञ्जनं रत्तचन्दनं॥

३०२.काळानुसारी काळियं, लोहं त्वा'गरु चा'गळु।
काळागरुतु काळे'स्मिं, तुरुक्खोतु च पिण्डको॥

३०३.कत्थूरिका मिगमदो, कुट्ठं तु अजपालकं।
लवङ्गं देवकुसुमं, कस्मीरजं तु कुङ्कुमं॥

३०४यक्खधूपो सज्जुलसो, तक्कोलं तु च कोलकं।
कोसफल मथो जाति, कोसं जातिफलं भवे॥

३०५घनसारो सितब्भो च, कप्पूरं पुन्नपुंसके।
अलत्तको यावको च, लाखा जतु नपुंसके॥

३०६.सिरिवासो तु सरल, द्दवो' ञ्जनं तु कज्जलं।
वासचुण्णं वासयोगो, वण्णकं तु विलेपनं॥

३०७गन्धमाल्यादिसङ्खारो, यो तं **वासन** मुच्चते।
माला माल्यं पुप्फदामे [पुप्फं दामं (क०)], भावितं वासितं तिसु॥

३०८.उत्तंसो सेखरा' वेळा, मुद्धमाल्ये वटंसको।
सेय्या च सयनं सेनं, पल्लङ्को तु च मञ्चको॥

३०९.मञ्चाधारो पटिपादो, मञ्चङ्गे **त्वटनी** त्थियं,
३१०.कुळीरपादो आहच्च, पादो चेव मसारको।
चत्तारो बुन्दिकाबद्धो, तिमे **मञ्चन्तरा** सियुं॥

३११.बिब्बोहनं चो' पधानं, पीठिका पीठ मासनं।
कोच्छं तु भद्दपीठे था, **सन्दी** पीठन्तरे मता॥

३१२.महन्तो कोजवो दीघ,
लोमको **गोनको** मतो।
उण्णामयं त्वत्थरणं, **चित्तकं** वानचित्तकं॥

३१३.घनपुप्फं **पटलिका,** सेतं तु **पटिका** प्यथ।
द्विदसेकदसान्यु' **द,लोमि एकन्तलोमि**नो॥

३१४.तदेव सोळसित्थीनं, नच्चयोग्गञ्हि **कुत्तकं।**
सीहब्यग्घादिरूपेहि, चित्तं **विकतिका** भवे॥

३१५.**कट्टिस्सं कोसेय्यं** रतन, परिसिब्बित मत्थरणं कमा।
कोसियकट्टिस्समयं, कोसियसुत्तेन पकतञ्च॥

३१६.दीपो पदीपो पज्जोतो, पुमे त्वादास दप्पणा।
गेण्डुको कण्डुको ताल, वण्टं तु बीजनीत्थियं॥

३१७.चङ्कोटको करण्डो च, समुग्गो सम्पुटो भवे।
गामधम्मो असद्धम्मो, ब्यवायो मेथुनं रति॥

३१८.विवाहो पयमा पाणि, ग्गहो परिणयो प्यथ।
तिवग्गो धम्म, काम,त्था, **चतुवग्गो** समोक्खका॥

३१९.खुज्जो च गण्डुलो रस्स, वामना तु लकुण्डको।
पङ्गुलो पीठसप्पी च, पङ्गु छिन्निरियापथो॥

३२०.पक्खो खञ्जो तु खोण्डो थ,
मूगो सुञ्ञवचो भवे।

कुणी हत्थादिवङ्को च, वलिरो तु च केकरो॥

३२१.निक्केससीसो खल्लाटो,
मुण्डो तु भण्डु मुण्डिको।
काणो अक्खीन मेकेन,
सुञ्ञो **अन्धो** द्वयेन थ॥

३२२.बधिरो सुतिहीनो थ, गिलानो ब्याधिता'तुरा।
उम्मादवति उम्मत्तो, खुज्जादी वाच्चलिङ्गिका॥

३२३.आतङ्को आमयो ब्याधि, गदो रोगो रुजापि च।
गेलञ्ञाकल्ल माबाधो,
सोसो तु च खयो सिया॥

३२४.पीनसो [पीनासोतिपि पाठो] नासिकारोगो,
घाने **सिङ्घानिका** स्सवो।
ञेय्यं त्व'रु वणो नित्थी, फोटो तु पिळका भवे॥

३२५.पुब्बो पूयो थ रत्ताति, सारो पक्खन्दिका प्यथ।
अपमारो अपस्मारो, पादफोटो विपादिका॥

३२६.वुड्ढिरोगो तु वातण्डं, सीपदं भारपादता।
कण्डू कण्डूति कण्डूया, खज्जु कण्डूवनं प्यथ॥

३२७.पामं वितच्छिका कच्छु, सोथो तु सयथू'दितो।
दुन्नामकञ्च अरिसं, छद्दिका वमथू'दितो॥

३२८.दवथु परितापो थ, तिलको तिलकाळको।
विसूचिका इति महा, विरेको थ भगन्दलो [भगन्दरो (क॰)]॥

३२९.मेहो जरो कास सासा, कुट्ठं सूला**मयन्तरा।**
वुत्तो वेज्जो भिसक्को च, रोगहारी तिकिच्छको॥

३३०.सल्लवेज्जो सल्लकत्तो, तिकिच्छा तु पतिक्रिया।
भेसज्ज मगदो चेव, भेसजं मो'सधं प्यथ॥

३३१.कुसला नामया रोग्यं,
अथ कल्लो निरामयोति,

नरवग्गो निट्ठितो।

४. चतुब्बण्णवग्ग

खत्तियवग्ग

३३२.कुलं वंसो च सन्ताना, भिजना गोत्त मन्वयो।
थियं सन्तत्य थो **वण्णा,** चत्तारो खत्तियादयो॥

३३३.कुलीनो सज्जनो साधु,
सभ्यो चाय्यो महाकुलो।
राजा भूपति भूपालो, पत्थिवो च नराधिपो॥

३३४भूनाथो जगतिपालो, दिसम्पति जनाधिपो।
रट्ठाधिपो नरदेवो, भूमिपो भूभुजो प्यथ॥

३३५राजञ्ञो खत्तियो खत्तं, मुद्धाभिसित्त बाहुजा।
सब्बभुम्मो चक्कवत्ती, भूपोञ्ञो **मण्डलिस्सरो॥**

३३६.पुमे लिच्छवि वज्जी च, सक्यो तु साकियो थ च।
भद्दकच्चाना [भद्दा कच्चाना (टी०)] राहुल, माता बिम्बा यसोधरा॥

३३७क्कोटीनं हेट्ठिमन्तेन, सतं येसं निधानगं।
कहापणानं दिवस, वळञ्जो वीसतम्बणं॥

३३८.ते **खत्तियमहासाला,** सीति कोटिधनानि तु।
निधानगानि दिवस, वळञ्जो च दसम्बणं॥

३३९.येसं **द्विजमहासाला,** तदुपड्ढे निधानगे।
वळञ्जे च **गहपति, महासाला** धने सियुं॥

३४०महामत्तो पधानञ्च, मतिसजीवो मन्तिनी।
सजीवो सचिवा, मच्चो, सेनानी तु चमूपति॥

३४१न्यासादीनं विवादानं, **अक्खदस्सो** पदट्ठरि।
दोवारिको पतीहारो, द्वारट्ठो द्वारपालको॥

३४२**अनीकट्ठो**ति राजूनं, अङ्गरक्खगणो मतो।

कञ्चुकी सोविदल्लो च, अनुजीवी तु सेवको॥

३४३अज्झक्खो धिकतो चेव,
हेरञ्ञिको तु निक्खिको।
सदेसानन्तरो **सत्तु, मित्तो**राजा ततो परं॥

३४४अमित्तो रिपु वेरी च, सपत्ता राति सत्व'रि। (सत्तु+अरि)
पच्चत्थिको परिपन्थी, पटिपक्खा हितापरो॥

३४५पच्चामित्तो विपक्खो च, पच्चनीक विरोधिनो।
विद्देसी च दिसो दिट्ठो,था नुरोधो नुवत्तनं॥

३४६मित्तो नित्थी वयस्सो च, सहायो [सुहज्जो (टी०)] सुहदो सखा।
सम्भत्तो दळ्हमित्तो थ, **सन्दिट्ठो** दिट्ठमत्तको॥

३४७चरो च गुळ्हपुरिसो, पथावी पथिको'द्धगू।
दूतो तु सन्देसहरो, गणको तु मुहुत्तिको॥

३४८लेखको लिपिकारो च, वण्णो तु अक्खरो प्यथ।
भेदो दण्डो साम दाना, **न्युपाया** चतुरो इमे॥

३४९उपजापोतु भेदो च, दण्डो तु साहसं दमो।
३५०स्साम्य' मच्चो सखा कोसो, दुग्गञ्च विजितं बलं।
रज्जङ्गानीति सत्तेते, सियुं पकतियो पिच॥

३५१पभावु'स्साह, मन्तानं, वसा तिस्सो हि सत्तियो।
पभावो दण्डजो तेजो,
पतापो तु च कोसजो॥

३५२मन्तो च मन्तनं सो तु, **चतुक्कण्णो** द्विगोचरो।
तिगोचरो तु **छक्कण्णो,** रहस्सं गुय्ह मुच्चते॥

३५३तीसु विवित्त विजन, छन्ना, रहो रहो ब्ययं।
विस्सासो तु च विस्सम्भो,
युत्तं त्वो'पायिकं तिसु॥

३५४ओवादो चानुसिट्ठित्थी, पुमवज्जे नुसासनं।
आणा च सासनं ञेय्यं, उद्दानं तु च बन्धनं॥

३५५आगु वुत्त [मन्तु (क०)] मपराधो, करो तु बलि मुच्चते।
पुण्णपत्तो तुट्ठिदायो, उपदा तु च पाभतं॥

३५६तथो'पायन मुक्कोचो, पण्णाकारो पहेणकं।
सुङ्कं त्वनित्थी गुम्बादि, देय्ये था'यो धनागमो॥

३५७आतपत्तं तथा छत्तं, रञ्ञं तु हेममासनं।
सीहासनं अथो वाळ, बीजनीत्थी च चामरं॥

३५८खग्गो च छत्त मुण्हीसं, पादुका वालबीजनी।
इमे **ककुधभण्डानि,** भवन्ति पञ्च राजुनं॥

३५९.भद्दकुम्भो पुण्णकुम्भो, भिङ्कारो जलदायको।
हत्थि,स्स,रथ,पत्ती तु, **सेना** हि चतुरङ्गिनी॥

३६०.कुञ्जरो वारणो हत्थी, मातङ्गो द्विरदो गजो।
नागो द्विपो इभो दन्ती,
यूथजेट्ठो तु यूथपो॥

३६१.काळावक गङ्गेय्या, पण्डर तम्बा च पिङ्गलो गन्धो।
मङ्गल हेमो'पोसथ,
छद्दन्ता **गजकुलानि** एतानि॥

३६२.कलभो चेव भिङ्कोथ, पभिन्नो मत्त गज्जिता।
हत्थिघटा तु गजता, हत्थीनी तु करेणुका॥

३६३.**कुम्भो** हत्थिसिरोपिण्डा, कण्णमूलं तु **चूलिका।**
आसनं खन्धदेसम्हि, पुच्छमूलं तु **मेचको॥**

३६४आलान माळ्हको थम्भो, नित्थीतु निगळो'न्दुको।
सङ्खलं तीस्वथो गण्डो,
कटो दानं तु सो मदो॥

३६५सोण्डो तु द्वीसु हत्थो थ,
करग्गं पोक्खरं भवे।
मज्झम्हि बन्धनं **कच्छा, कप्पनो** तु कुथादयो॥

३६६.ओपवय्हो राजवय्हो, सज्जितो तु च कप्पितो।

तोमरो नित्थियं पादे, सिया विज्झनकण्टको॥

३६७**तुत्तं** तु कण्णमूलम्हि, मत्थकम्हि तु **अङ्कुसो।**
हत्थारोहो हत्थिमेण्डो,
हत्थिपो हत्थिगोपको॥

३६८**गामणीयो** तु मातङ्ग, हयाद्याचरियो भवे।
हयो तुरङ्गो तुरगो,
वाहो अस्सो च सिन्धवो॥

३६९.भेदो **अस्सतरो** तस्सा,
जानियो तु कुलीनको।
सुखवाही **विनीतो** थ,
किसोरो हयपोतको॥

३७०घोटको तु खळुङ्को थ, जवनो च जवाधिको।
मुखाधानं खलीनो वा, **कसा** त्व स्साभिताळिनी॥

३७१**कुसा** तु नासरज्जुम्हि, वळवा'स्सा खुरो सफं।
पुच्छ मनित्थी नङ्गुट्ठं, वालहत्थो च वालधि॥

३७२सन्दनो च रथो **फुस्स, रथो** तु नरणाय सो।
चम्मावुतो च **वेयग्घो,**
देप्पो ब्यग्घस्स दीपिनो॥

३७३सिविका याप्ययानञ्चा, नित्थी तु सकटो प्य'नं [(सकटो पि+अनं)]।
चक्कं रथङ्ग माख्यातं, तस्सन्तो **नेमि** नारियं॥

३७४तम्मज्झे पिण्डिका **नाभि,** कुब्बरो तु युगन्धरो।
अक्खग्गकीले **आणी**त्थी, वरुथो रथगुत्य'थ॥

३७५**धुरो** मुखे **रथस्सङ्गा,** त्व क्खो पक्खरआदयो।
यानञ्च वाहनं योग्गं, सब्बहत्थ्यादिवाहने॥

३७६रथचारी तु सूतो च, पाजिता चेव सारथी।
रथारोहो च रथिको,
रथी योधो तु यो भटो॥

३७७पदाति पत्ती तु पुमे, पदगो पदिको मतो।
सन्नाहो कङ्कटो वम्मं, कवचो वा उरच्छदो॥

३७८जालिका थ च सन्नद्धो, सज्जो च वम्मिको भवे।
आमुक्को पटिमुक्को थ, पुरेचारी पुरेचरो॥

३७९पुब्बङ्गमो पुरेगामी, मन्दगामी तु मन्थरो।
जवनो तुरितो वेगी, जेतब्बं **जेय्य** मुच्चते॥

३८०.सूर वीरा तु विक्कन्तो, सहायो नुचरो समा।
सन्नद्धप्पभुती तीसु, पाथेय्यं तु च सम्बलं॥

३८१.वाहिनी धजिनी सेना, चमू चक्कं बलं तथा।
अनीको वा थ विन्यासो,
ब्यूहो सेनाय कथ्यते॥

३८२हत्थी द्वादसपोसो,ति,
पुरिसो **तुरगो, रथो।**
चतुपोसोति एतेन, लक्खणेना धमन्ततो॥

३८३हत्थानीकं हयानीकं, रथानीकं तयो तयो।
गजादयो ससत्था तु, **पत्तानीकं** चतुज्जना॥

३८४सट्ठिवंसकलापेसु, पच्चेकं सट्ठिदण्डिसु।
धूलीकतेसु सेनाय, यन्तिया **क्खोभनी** [अक्खोभिणी (क०)] त्थियं॥

३८५सम्पत्ति सम्पदा लक्खी, सिरी विपत्ति आपदा।
अथा वुधञ्च [आयुधन्तिपि पाठो] हेति'त्थी, सत्थं पहरणं भवे॥

३८६मुत्तामुत्त ममुत्तञ्च, पाणितो मुत्तमेव च।
यन्तमुत्तन्ति सकलं, **आयुधं** तं **चतुब्बिधं॥**

३८७मुत्तामुत्तञ्च यट्ठ्यादि, **अमुत्तं** छुरिकादिकं।
पाणिमुत्तं तु सत्यादि, **यन्तमुत्तं** सरादिकं॥

३८८इस्सासो धनु कोदण्डं, चापो नित्थी सरासनं।
अथो गुणो जिया ज्या थ,
सरो पत्ति च सायको॥

३८९.वाणो कण्ड मुसु द्वीसु, खुरप्पो [उरप्पो (क०)] तेजना'सनं।
तूणीत्थियं कलापो च, तूणो तूणीर वाणधि॥

३९०.पक्खो तु वाजो **दिद्धो** तु, विसप्पितो सरो भवे।
लक्खं वेज्झं सरब्यञ्च, सराभ्यासो तु'**पासनं॥**

३९१.मण्डलग्गो तु नेत्तिंसो, असि खग्गो च सायको।
कोसित्थी तब्बिधाने थो, **थरु** खग्गादिमुट्ठियं॥

३९२.खेटकं फलकं चम्मं, इल्ली तु करपालिका।
छुरिका सत्य'सिपुत्ती, लगुळो तु च मुग्गरो॥

३९३.सल्लो नित्थि सङ्कु पुमे, वासी तु तच्छनीत्थियं।
कुठारी [कुधारी (टी०)] त्थीफरसुसो, टङ्को पासाणदारणो॥

३९४क्रणयो भिन्दिवाळो च, चक्कं कुन्तो गदा तथा।
सत्या'दी **सत्थभेदा** थ,
कोणो'स्सो कोटि नारियं॥

३९५निय्यानं गमनं यात्रा, पट्ठानञ्च गमो गति।
चुण्णो पंसु रजो चेव, धूली'त्थी रेणु च द्विसु॥

३९६.मागधो मधुको वुत्तो, वन्दी तु थुतिपाठको।
वेताळिको बोधकरो,
चक्किको तु च घण्टिको॥

३९७क्रेतु धजो पटाका च, कदली केतनं प्यथ।
यो'हंकारो'ञ्ञमञ्ञस्स, सा' **हमहमिका** भवे॥

३९८.बलं थामो सहं सत्ति, **विक्कमो** त्वतिसूरता।
रणे जितस्स यं पानं, **जयपान**न्ति तं मतं॥

३९९.सङ्गामो सम्पहारो चा, नित्थियं समरं रणं।
आजित्थी आहवो युद्ध, मायोधनञ्च संयुगं॥

४००भण्डनं तु विवादो च, विग्गहो कलह मेधगा।
मुच्छा मोहो थ पसय्हो,
बलक्कारो हठो भवे॥

४०१. **उप्पादो** [उप्पातो (क॰)१०२७-गाथा पस्सितब्बा] भूतविकति, या सुभासुभसूचिका।
ईति त्वित्थी अजञ्‍ञञ्‍च, उपसग्गो उपद्दवो॥

४०२. **निब्बुद्धं** [नियुद्धं (क॰)] मल्लयुद्धम्हि, जयो तु विजयो भवे।
पराजयो रणे भङ्गो, पलायन मपक्‍कमो॥

४०३. मारणं हननं घातो, नासनञ्‍च निसूदनं।
हिंसनं सरणं हिंसा, वधो ससन घातनं॥

४०४. मरणं कालकिरिया, पलयो मच्‍चु अच्‍चयो।
निधनो नित्थियं नासो, कालो’न्तो चवनं भवे॥

४०५. तीसु पेतो परेतो च,
मतो थ चितको चितो।
आळहनं सुसानञ्‍चा, नित्थियं कुणपो छवो॥

४०६. **कबन्धो** नित्थियं देहो, सिरोसुञ्‍ञो सहक्रियो।
अथ **सिवथिका** वुत्ता, सुसानस्मिञ्हि आमके॥

४०७. वन्दीत्थियं करमरो, पाणो त्व’सु पकासितो।
कारा तु बन्धनागारं, कारणा तु च यातना॥

इति खत्तियवग्गो।

४०८. ब्रह्मबन्धु द्विजो विप्पो, ब्रह्मा भोवादी ब्राह्मणो।
सोत्तियो छन्दसो सो थ,
सिस्स’ न्तेवासिनो पुमे॥

४०९. ब्रह्मचारी गहट्ठो च, वनप्पत्थो च भिक्खुति।
भवन्ति **चत्तारो** एते, **अस्समा** पुन्नपुंसके॥

४१०. चरन्ता सह सीलादी, **सब्रह्मचारिनो** मिथु।
उपज्झायो उपज्झा था, चरियो निस्सयदादिको [निस्सयदायको (टी॰)]॥

४११. उपनीया थवा पुब्बं, वेद मज्झापये द्विजो।
यो सङ्गं सरहस्सञ्‍चा, **चरियो** ब्राह्मणेसु सो॥

४१२. पारम्परिय मेतिह्यं, उपदेसो तथे’तिहा।

यागो तु कतु यञ्ञो थ, **वेदी**त्थी भू परिक्खता॥

४१३.अस्समेधो च पुरिस, मेधो चेव निरग्गळो।
सम्मापासो वाजपेय्य, मिति **यागा महा** इमे॥

४१४इत्विजो [इदित्विजो (टी॰)] याजको चाथ,
सभ्यो सामाजिको प्यथ।
परिसा सभा समज्जा च, तथा समिति संसदो॥

४१५**चतस्सो परिसा** भिक्खु, भिक्खुनी च उपासका।
उपासिकायोति इमा, थवा **ट्ठ परिसा** सियुं॥

४१६तावतिंस,द्विज,क्खत्त,मार,ग्गहपतिस्स च।
समणानं वसा चातु, महाराजिक, ब्रह्मुनं॥

४१७गायत्तिप्पमुखं **छन्दं,** चतुवीस'क्खरं तु यं।
वेदान मादिभूतं सा, **सावित्ती** तिपदं सिया॥

४१८हब्यपाके **चरु** मतो, **सुजा** तु होमदब्बियं।
परमन्नं तु **पायासो,** हब्यं तु हवि कथ्यते॥

४१९.**यूपो** थूणायं निम्मन्त्य, दारुम्हि **त्व'रणी** द्विसु।
गाहप्पच्चा'हवनीयो, दक्खिणग्गि तयो' **ग्गयो॥**

४२०चागो विस्सज्जनं दानं, वोस्सग्गो चापदेसनं।
विस्साणनं वितरणं, विहायिता पवज्जनं॥

४२१.पञ्च **महापरिच्चागो,** वुत्तो सेट्ठ, धनस्स च।
वसेन पुत्त दारानं, रज्जस्स' ङ्गान मेव च॥

४२२अन्नं पानं घरं वत्थं, यानं माला विलेपनं।
गन्धो सेय्या पदीपेय्यं, **दानवत्थू** सियुं दस॥

४२३मतत्थं तदहे दानं, तीस्वेत **मुद्धदेहिकं।**
पितुदानं तु **निवापो, सद्धं** तु तंव सात्थतो॥

४२४पुमे अतिथि आगन्तु, पाहुना वेसिका प्यथ।
अञ्ञत्थ गन्तु मिच्छन्तो, **गमिको** था ग्घ मग्घियं॥

४२५**पज्जं** पादोदकादो थ, सत्ता'गन्त्वादयो तिसु।
अपचित्य'च्चना पूजा, पहारो बलि मानना॥

४२६नमस्सा तु नमक्कारो, वन्दना चाभिवादनं।
पत्थना पणिधानञ्च, पुरिसे पणिधीरितो॥

४२७**अज्झेसना** तु सक्कार, पुब्बङ्गमनियोजनं।
४२८परियेसना न्वेसना, परियेट्ठि गवेसना।
उपासनं तु सुस्सूसा, सा पारिचरिया भवे॥

४२९मोन मभासनं तुण्ही, भावो थ पटिपाटि सा।
अनुक्कमो परियायो, अनुपुब्ब्य'पुमे कमो॥

४३०तपो च संयमो सीलं, नियमो तु वतञ्च वा।
वीतिक्कमो' ज्झचारो थ, विवेको पुथुगत्तता॥

४३१खुद्दानुखुद्दकं **आभि, समाचारिक** मुच्चते।
आदिब्रह्मचरियं तु, तदञ्ञं सील मीरितं॥

४३२यो पापेहि उपावत्तो, वासो सद्धिं गुणेहि सो।
उपवासोति विञ्ञेय्यो, सब्बभोगविवज्जितो॥

४३३तपस्सी भिक्खु समणो, पब्बजितो तपोधनो।
वाचंयमो तु मुनि च, तापसो तु इसी रितो॥

४३४येसंयतिन्द्रियगणा, **यतयो वसिनो** च ते।
सारिपुत्तो'पतिस्सो तु, धम्मसेनापती रितो॥

४३५कोलितो मोग्गल्लानो थ,
अरियो धिगतो सिया।
सोतापन्नादिका **सेखा,** नरियो तु पुथुज्जनो॥

४३६अञ्ञा तु अरहत्तञ्च, थूपो तु चेतियं भवे।
धम्मभण्डागारिको च, आनन्दो द्वे समा थ च॥

४३७विसाखा मिगारमाता, सुदत्तो' नाथपिण्डिको।
४३८भिक्खुपि सामणेरो च, सिक्खमाना च भिक्खुनी।

सामणेरीति कथिता, पञ्चेते **सहधम्मिका**॥

४३९ पत्तो तिचीवरं काय, बन्धनं वासि सूचि च।
परिस्सावन मिच्चेते, **परिक्खारा’ट्ठ** भासिता॥

४४० सामणेरो च समणु, द्देसो चाथ दिगम्बरो।
अचेळको निगण्ठो च, जटिलो तु जटाधरो॥

४४१ कुटीसकादिका चतु, त्तिंस द्वासट्ठि दिट्ठियो।
इति छन्नवुति एते, **पासण्डा** सम्पकासिता॥

४४२ पवित्तो पयतो पूतो, चम्मं तु अजिनं प्यथ।
दन्तपोणो दन्तकट्ठं, वक्कलो वा तिरीटकं॥

४४३ पत्तो पातित्थियंनित्थी, कमण्डलु तु कुण्डिका।
अथालम्बणदण्डस्मिं, **कत्तरयट्ठि** नारियं॥

४४४ यं देहसाधनापेक्खं, निच्चं कम्ममयं **यमो।**
आगन्तुसाधनं कम्मं, अनिच्चं **नियमो** भवे॥

इति ब्राह्मणवग्गो।

४४५ वेस्सो च वेसियानो थ, जीवनं वुत्ति जीविका।
आजीवो वत्तनं चाथ, कसिकम्मं कसित्थियं॥

४४६ वाणिज्जञ्च वणिज्जा थ, गोरक्खा पसुपालनं।
वेस्सस्स **वुत्तियो** तिस्सो, गहट्ठा’गारिका गिहि॥

४४७ खेत्ताजीवो कस्सको थ, खेत्तं केदार मुच्चते।
लेड्डु’त्तो मत्तिकाखण्डो, खणित्ति’त्थ्य’वदारणं॥

४४८ दात्तं लवित्त मसितं [“असित” सद्दो पुंनपुंसके-१००५-गाथा पस्सितब्बा], पतोदो तुत्त पाजनं।
योत्तं तु रज्जु रस्मित्थी, फालो तु कसको भवे॥

४४९ नङ्गलञ्च हलं सीरो, ईसा नङ्गलदण्डको।
सम्मा तु युगकीलस्मिं, सीता तु हलपद्धति॥

४५० मुग्गादिके **परण्ण**ञ्च, **पुब्बण्णं** सालिआदिके।

सालि वीहि च कुद्रूसो, गोधुमो वरको यवो।
कङ्गूति **सत्त धञ्ञानि, नीवारादी** तु तब्भिदा॥

४५१चणको च कळायो थ,
सिद्धत्थो सासपो भवे॥

४५२अथ कङ्गु पियङ्गु'त्थी, उम्मा तु अतसी भवे।
किट्ठञ्च सस्सं धञ्ञञ्च [विञ्ञेय्यं (टी॰)], वीहि थम्बकरी [थम्भकरी (क॰)] रितो॥

४५३कण्डो तु नाळ मथ सो, **पलालं** नित्थि निप्फलो।
भुसं कलिङ्गरो चाथ, **थुसो** धञ्ञत्तचे थ च॥

४५४सेतट्टिका सस्सरोगो,
कणो तु कुण्डको भवे।
खलो च धञ्ञकरणं, **थम्बो** [थम्भो (क॰)] गुम्बो तिणादिनं॥

४५५अयोग्गो मुसलो नित्थी, कुल्लो सुप्प मनित्थियं।
अथो'द्धनञ्च चुल्लि'त्थी, किलञ्जो तु कटो भवे॥

४५६कुम्भी'त्थी पिठरो कुण्डं, खळोप्यु'क्खलि थाल्यु'खा।
कोलम्बो चाथ मणिकं, भाणको च अरञ्जरो॥

४५७घटो द्वीसु कुटो नित्थी, कुम्भो कलस, वारका।
कंसो भुञ्जनपत्तो था, मत्तं पत्तो च भाजनं॥

४५८अण्डुपकं चुम्बटकं, सरावो तु च मल्लको।
पुमे कटच्छुदब्बि'त्थी, कुसूलो कोट्ठ मुच्चते॥

४५९साको अनित्थियं डाको, सिङ्गीवेरंतु अद्दकं।
महोसधं तु तं सुक्खं, मरिचं तु च कोलकं॥

४६०सोवीरं कञ्जियं वुत्तं, आरनाळं थुसोदकं।
धञ्ञम्बिलं बिळङ्गो थ, लवणं लोण मुच्चते॥

४६१सामुद्दं सिन्धवो नित्थी, काळलोणं तु उब्भिदं।
बिळकं [बिळाल (क॰)] चेति पञ्चेते, **पभेदा** लवणस्स हि॥

४६२गुळो च फाणितं खण्डो, मच्छण्डी सक्खरा इति।

इमे **उच्छुविकारा** थ, गुळस्मिं **विसकण्टकं**॥

४६३लाजा सिया'क्खतं चाथ, **धाना** भट्ठयवे भवे।
अबद्धसत्तु **मन्थो** च, पूपा' पूपा तु पिट्ठको॥

४६४भत्तकारो सूपकारो, सूदो आळारिको तथा।
ओदनिको च रसको, सूपो तु ब्यञ्जनं भवे॥

४६५ओदनो वा कुरं भत्तं, भिक्खा चा'न्न मथा सनं।
आहारो भोजनं घासो,
तरलं यागु नारियं॥

४६६खज्जं तु भोज्ज लेय्यानि, पेय्यन्ति चतुधा'**सनं।**
निस्सावो च तथा'चामो,
आलोपो कबळो भवे॥

४६७**मण्डो** नित्थीरसग्गस्मिं, **विघासो** भुत्तसेसके।
विघासादो च दमको, पिपासा तु च तस्सनं॥

४६८खुद्दा जिघच्छा, मंसस्स, **पटिच्छादनियं** रसो।
उद्रेको चेव उग्गारो, सोहिच्चं तित्ति तप्पनं॥

४६९कामं त्विट्ठं निकामञ्च, परियत्तं यथच्छितं।
कयविक्कयिको सत्थ,वाहा' पणिक वाणिजा॥

४७०विक्कयिको तु विक्केता,
कयिको तु च कायिको।
उत्तमण्णो च धनिको, धमण्णो तु इणायिको॥

४७१उद्धारो तु इणं वुत्तं, मूलं तु पाभतं भवे।
सच्चापनं सच्चंकारो, विक्केय्यं पणिय्यं तिसु॥

४७२पटिदानं परिवत्तो, न्यासो तू'पनिधी रितो।
४७३**अट्ठारसन्ता** सङ्ख्येय्ये, सङ्ख्या **एकादयो** तिसु।
सङ्ख्याने तु च सङ्ख्येय्ये, एकत्ते **वीसता**दयो।
वग्गभेदे बहुत्तेपि, ता **आनवुति** नारियं॥

४७४सतं सहस्सं नियुतं [नहुतं-नयुतं (कत्थचि)], लक्खं कोटि पकोटियो।

कोटिपकोटि नहुतं, तथा निन्नहुतम्पि च॥

४७५अक्खोभनीत्थियं [अक्खोभिणी (क०)] बिन्दु, अब्बुदञ्च निरब्बुदं।
अहहं अबबं चेवा, टटं सोगन्धि कुप्पलं॥

४७६कुमुदं पुण्डरीकञ्च, पदुमं कथानम्पि च।
महाकथाना'सङ्ख्येय्या, नि'च्चेतासु सतादि च॥

४७७कोट्यादिकं दसगुणं, सतलक्खगुणं कमा।
चतुत्थो'ड्ढेन **अड्ढुड्ढो,**
ततियो **ड्ढतियो** तथा॥

४७८अड्ढतेय्यो **दियड्ढो** तु,
दिवड्ढो दुतियो भवे।
तुला, पत्थ, ङ्गुलि, वसा, तिधा **मान** मथो सिया॥

४७९चत्तारो विहयो **गुञ्जा,**
द्वे गुञ्जा **मासको** भवे।
द्वे **अक्खा** मासका पञ्च, क्खानं **धरण**मट्ठकं॥

४८०**सुवण्णो** पञ्चधरणं, **निक्खं** त्वनित्थि पञ्च ते।
पादो भागे चतुत्थे थ, धरणानि **पलं** दस॥

४८१**तुला** पलसतं चाथ, **भारो** वीसति ता तुला।
अथो कहापणो नित्थी, कथ्यते करिसापणो॥

४८२**कुडुवो** पसतो एको,
पत्थो ते चतुरो सियुं।
आळहको चतुरो पत्था, **दोणं** वाचतुरा'ळहकं॥

४८३**मानिका** चतुरो दोणा, **खारी**त्थी चतुमानिका।
खारियो वीस **वाहो** थ,
सिया **कुम्भो** दसम्बणं॥

४८४आळहको नित्थियं तुम्भो, पत्थोतु नाळि नारियं।
वाहो तु सकटो चेका,
दस दोणा तु **अम्बणं॥**

४८५पटिवीसो च कोट्ठासो,
अंसो भागो धनं तु सो।
दब्बं वित्तं सापतेय्यं, वस्व'त्थो विभवो भवे॥

४८६**कोसो हिरञ्ञ**ञ्च कता, कतं कञ्चन, रूपियं।
कुप्पं तदञ्ञं तम्बादि, **रूपियं** द्वय माहतं॥

४८७सुवण्णं कनकं जात, रूपं सोण्णञ्च कञ्चनं।
सत्थुवण्णो हरी कम्बु, चारु हेमञ्च हाटकं॥

४८८तपनियं हिरञ्ञं **त, ब्भेदा** चामीकरम्पि च।
सातकुम्भं तथा जम्बु, नदं सिङ्गी च नारियं॥

४८९रूपियं रजतं सज्झु, रूपी सज्झं अथो वसु।
रतनञ्च मणि द्वीसु, **पुप्फरागा**दी तब्भिदा॥

४९०सुवण्णं रजतं मुत्ता, मणि वेळुरियानि च।
वजिरञ्च पवाळन्ति, सत्ता'हु **रतनानि**' मे॥

४९१लोहितङ्को च पदुम, रागो रत्तमणि प्यथ।
वंसवण्णो वेळुरियं, पवाळं वा च विद्दुमो॥

४९२मसारगल्लं कबरमणि, अथ मुत्ता च मुत्तिकं।
रीति [रीरी (टी०)] त्थी आरकूटो वा, अमलं त्व'ब्भकं भवे॥

४९३लोहो नित्थी अयो काळा,
यसञ्च पारदो रसो।
काळतिपु तु सीसञ्च, हरितालं तु पीतनं॥

४९४चिनपिट्ठञ्च सिन्दूरं, अथ तूलो तथा पिचु।
खुद्दजं तु मधु खुद्दं, मधुच्छिट्ठं तु सित्थकं॥

४९५गोपालो गोप गोसङ्ख्या,
गोमा तु गोमिको प्यथ।
उसभो बलीबद्धो [बलिबद्द (क०)] च, गोणो गोवसभो वुसो॥

४९६वुद्धो **जरग्गवो** सो थ, दम्मो वच्छतरो समा।
धुरवाही तु धोरय्हो, **गोविन्दो** धिकतो गवं॥

४९७**वहो** च खन्धदेसो थ, ककुधो [ककुदो (क०)] ककु वुच्चते।
अथो विसाणं सिङ्गञ्च, रत्तगावी तु रोहिणी॥

४९८गावी च सिङ्गिनी गो च, **वञ्झा** तु कथ्यते **वसा।**
नवप्पसूतिका **धेनु,** वच्छकामा तु **वच्छला॥**

४९९गग्गरी मन्थनीत्थी द्वे, सन्दानं दाममुच्चते।
गोमिळ्हो गोमयो नित्थी, अथो सप्पि घतं भवे॥

५००नवुद्धटं तु **नोनीतं,** दमिमण्डं तु मत्थु च,
खीरं दुद्धं पयो थञ्ञं, तक्कं तु मथितं प्यथ॥

५०१खीरं दधि घतं तक्कं, नोनीतं पञ्च **गोरसा।**
उरब्भो मेण्ड मेसा च, उरणो अवि एळको॥

५०२वस्सो त्वजो छगलको,
ओट्ठो तु करभो भवे।
गद्रभो तु खरो वुत्तो, उरणी तु अजी अजा॥

इति वेस्सवग्गो।

५०३सुद्दो'न्तवण्णो वसलो, **संकिण्णा** मागधादयो।
मागधो सुद्दखत्ताजो, **उग्गो** सुद्दाय खत्तजो॥

५०४द्विजाखत्तियजो **सूतो,** कारुतु सिप्पिकोपुमे।
सङ्घातोतु सजातीनं, तेसं **सेणी** द्विसुच्चते॥

५०५तच्छको तन्तवायो च, रजको च नहापितो।
पञ्चमो चम्मकारोति, **कारवो** पञ्चिमे सियुं॥

५०६तच्छको वड्ढकी मतो, पलगण्डो थपत्यपि।
रथकारो थ सुवण्ण, कारो नाळिन्धमो भवे॥

५०७तन्तवायो पेसकारो,
मालाकारो तु मालिको।
कुम्भकारो कुलालो थ,
तुन्नवायो च सूचिको॥

५०८.चम्मकारो रथकारो, कप्पको तु नहापितो।
रङ्गाजीवो चित्तकारो, पुक्कुसो पुप्फछड्डको॥

५०९.वेनो विलीवकारो च, नळकारो समा तयो।
चुन्दकारो भमकारो,
कम्मारो लोहकारको॥

५१०.निन्नेजको च रजको, नेत्तिको उदहारको।
वीणावादी वेणिको थ, उसुकारो' सुवड्ढकी॥

५११.वेणुधमो वेणविको,
पाणिवादो तु पाणिघो [पाणियो (कत्थचि)]।
पूपियो पूपपणियो, सोण्डिको मज्जविक्कयी॥

५१२.माया तु सम्बरी माया, कारो तु इन्दजालिको।
५१३.ओरब्भिका सूकरिका, मागविका ते च साकुणिका।
हन्त्वा जीवन्ते'ळक, सूकर, मिग, पक्खिनो कमतो॥

५१४.वागुरिको जालिको थ,
भारवाहो तु भारिको।
वेतनिको तु भतको, कम्मकरो थ किं करो।
दासो च चेटको पेस्सो, भच्चो च परिचारिको॥

५१५.अन्तोजातो धनक्कीतो, दासब्यो'पगतो सयं।
दासा करमरानीतो, च्चेवं ते **चतुधा** सियुं॥

५१६.अदासो तु **भुजिस्सो** थ,
नीचो जम्मो निहीनको।
निक्कोसज्जो अकिलासु,
मन्दो तु अलसो प्यथ॥

५१७.सपाको चेव चण्डालो, मातङ्गो सपचो भवे।
तब्भेदा मिलक्खजाती, **किरात, सवरा**दयो॥

५१८.नेसादो लुद्दको ब्याधो,
मिगवो तु मिगब्यधो।
सारमेय्यो च सुनखो, सुनो सोणो च कुक्कुरो॥

५१९.स्वानो सुवानो साळूरो,
सूनो सानो च सा पुमे।
उम्मत्तादित मापन्नो, **अळक्को**ति सुनो मतो॥

५२०सावन्धनं तु गद्दूलो, दीपको तु च चेतको।
बन्धनं गण्ठि पासो थ, वागुरा [वाकरा (सी॰ टी॰)] मिगबन्धनी॥

५२१.थियं कुवेणी कुमीनं, आनयो जाल मुच्चते।
आघातनं वधट्ठानं, सूना तु अधिकोट्टनं॥

५२२तक्करो मोसको चोरो,
थेने'कागारिको समा।
थेय्यञ्च चोरिका मोसो,
वेमो वायनदण्डको॥

५२३सुत्तं तन्तु पुमे तन्तं, **पोत्थं** लेप्यादिकम्मनि।
पञ्चालिका पोत्थलिका, वत्थदन्तादिनिम्मिता॥

५२४उग्घाटनं घटीयन्तं, कूपम्बुब्बाहनं भवे।
मञ्जूसा पेळा पिटको, त्वित्थियं पच्छि पेटको॥

५२५ब्याभङ्गी त्वित्थियं काजो, **सिक्का** त्वत्रा'वलम्बनं।
उपाहनो वा पादु'त्थी, तब्भेदा **पादुका** प्यथ॥

५२६वरत्ता वद्धिका नद्धि, भस्ता चम्मपसिब्बकं।
सोण्णाद्यावत्तनी **मूसा,**
थ कूटं वा अयोघनो॥

५२७**कम्मारभण्डा** सण्डासो, मुट्ठ्या'धिकरणीत्थीयं।
तब्भस्ता **गग्गरी** नारी, सत्तं तु **पिप्फलं** भवे॥

५२८साणो तु निकसो वुत्तो,
आरा तु सूचिविज्झनं।
खरो च ककचो नित्थी, **सिप्पं** कम्मं कलादिकं॥

५२९.पटिमा पटिबिम्बञ्च, बिम्बो पटिनिधीरितो।
तीसु समो पटिभागो, सन्निकासो सरिक्खको॥

५३०समानो सदिसो तुल्यो,
सङ्कासो सन्निभो निभो।
ओपम्म मुपमानं चु, पमा भति तु नारियं॥

५३१निब्बेसो वेतनं मूल्यं, जूतं त्वनित्थि केतवं।
धुत्तो'क्खधुत्तो कितवो, जूतकार, क्खदेविनो॥

५३२पाटिभोगोतु पटिभू, अक्खो तु पासको भवे।
पुमेवा' **ट्ठपदं** [अट्ठापदं (टी० सी०)] सारि, फलके थ पणो, ब्भुतो॥

५३३**किण्णं** तु मदिराबीजे, **मधु** मध्वासवे मतं।
मदिरा वारुणी मज्जं, सुरा भवो तु मेरयं॥

५३४सरको चसको नित्थी, आपानं पानमण्डलं।
५३५ये'त्र भूरिप्पयोगत्ता, योगिकेकस्मि मीरिता।
लिङ्गन्तरेपि ते ञेय्या, **तद्धम्मत्ता**'ञ्ञवुत्तियन्ति॥

इति सुद्दवग्गो।

चतुब्बण्णवग्गो निट्ठितो।

५. अरञ्ञवग्ग

५३६अरञ्ञं काननं दायो, गहनं विपिनं वनं।
अटवी'त्थी महारञ्ञं, त्व, **रञ्ञानी**त्थियं भवे॥

५३७नगरा नातिदूरस्मिं, सन्तेहि यो भिरोपितो।
तरुसण्डो स **आरामो,** तथो **पवन** मुच्चते॥

५३८सब्बसाधारणा'रञ्ञं, रञ्ञ **मुय्यान** मुच्चते।
ञेय्यं तदेव **पमद, वन** मन्तेपुरोचितं॥

५३९पन्ति वीथ्या'वलि सेणी, पाळि लेखा तु राजि च।
पादपो विटपी रुक्खो, अगो सालो महीरुहो॥

५४०दुमो तरु कुजो साखी, **गच्छो** तु खुद्दपादपो।
फलन्ति ये विना पुप्फं, ते वुच्चन्ति **वनप्पती॥**

५४१फ़लपाकावसाने यो,
मरत्यो **सधि** सा भवे।
तीसु **वञ्च्या**'फला चाथ, फलिनो फलवा फली॥

५४२सम्फुल्लितो तु विकचो, फुल्लो विकसितो तिसु।
सिरो'ग्गं सिखरो नित्थी, साखा तु कथिता लता॥

५४३दलं पलासं छदनं, पण्णं पत्तं छदो प्यथ।
पल्लवो वा किसलयं, नवुब्भिन्ने तु **अङ्कुरो॥**

५४४मकुलं वा कुटुमलो, खारको तु च जालकं।
कलिका कोरको नित्थी, **वण्टं** पुप्फादिबन्धनं॥

५४५पसवो कुसुमं पुप्फं, **परागो** पुप्फजो रजो।
मकरन्दो मधु मतं, थवको तु च गोच्छको॥

५४६फ़ले त्वा'मे **सलाटु**'त्तो,
फलं तु पक्क मुच्चते।
चम्पक'म्बादिकुसुम, फलनामं नपुंसके॥

५४७मल्लिकादी तु कुसुमे, सलिङ्गा **वीहयो** फले।
जम्बू'त्थी जम्बवं जम्बू, विटपो विटभी'त्थियं॥

५४८मूल मारब्भ साखन्तो, **खन्धो** भागो तरुस्स थ।
कोटरो नित्थियं रुक्ख, च्छिद्दे कट्ठं तु दारु च॥

५४९बुन्दो मूलञ्च पादो थ, सङ्कु'त्तो खाणुनित्थियं।
करहाटं तु कन्दो थ, कळीरो मत्थको भवे॥

५५०वल्लरी मञ्जरी नारी, वल्ली तु कथिता लता।
थम्भो गुम्बो च अक्खन्धे, लता **विरू** पतानिनी॥

५५१अस्सत्थो बोधि च द्वीसु, निग्रोधो तु वटो भवे।
कबिट्ठो च कपित्थो च, यञ्ञङ्गो तु उदुम्बरो॥

५५२क्रोविळारो युगपत्तो, उद्दालो वातघातको।
राजरुक्खो कतमाली, न्दीवरो ब्याधिघातको॥

५५३दन्तसठो च जम्भीरो, वरणो तु करेरि च।
किं सुको पालिभद्दोथ, वञ्जुलो तु च वेतसो॥

५५४अम्बाटकोपीतनको, मधुको तु मधुद्दुमो।
अथो गुळफलो पीलु, सोभञ्जनो च सिग्गु च॥

५५५सत्तपण्णि छत्तपण्णो, तिनिसो त्व तिमुत्तको।
किं सुको तु पलासो थ,
अरिट्ठो फेनिलो भवे॥

५५६मालूर बेलुवाबिल्लो, पुन्नागो तु च केसरो।
सालवो तु च लोद्दो थ, पियालो सन्नकद्दु च॥

५५७लिकोचको तथा'ङ्कोलो,
अथ गुग्गुलु कोसिको।
अम्बो चूतो **सहो** त्वेसो,
सहकारो सुगन्धवा॥

५५८पुण्डरीको च सेतम्बो, सेलु तु बहुवारको।
सेपण्णी कास्मिरी चाथ, कोली च बदरीत्थियं॥

५५९कोलं चानित्थी बदरो, पिलक्खो पिप्पली'त्थियं।
पाटली कण्हवन्ता च, सादुकण्टो विकङ्कतो॥

५६०तिन्दुको काळक्खन्धो च, तिम्बरूसक तिम्बरू।
एरावतो तु नारङ्गो, कुलको काकतिन्दुको॥

५६१.कदम्बो पियको नीपो, भल्ली भल्लातको तिसु।
झावुको पिचुलो चाथ, तिलको खुरको भवे॥

५६२चिञ्चा च तिन्तिणी चाथ, गद्दभण्डो कपीतनो।
सालो'स्सकण्णो सज्जो थ,
अज्जुनो ककुधो भवे॥

५६३निचुलो मुचलिन्दो च, नीपो थ पियको तथा।
असनो पीतसालो थ,
गोलीसो झाटलो भवे॥

५६४खीरिका राजायतनं, कुम्भी कुमुदिका भवे।
यूपो [पूगो (क॰)] तु कमुको चाथ, पट्टि लाखापसादनो॥

५६५इङ्गुदी तापसतरु, भुजपत्तो तु आभुजी।
पिच्छिला सिम्बली द्वीसु, रोचनो कोटसिम्बली॥

५६६पकिरियो पूतिको थ, रोही रोहितको भवे।
एरण्डो तु च आमण्डो, अथ सत्तुफला समी॥

५६७नत्तमालो करञ्जो थ, खदिरो दन्तधावनो।
सोमवक्को तु कदरो, सल्लोतु मदनो भवे॥

५६८अथापि इन्दसालो च, सल्लकी खारको सिया।
देवदारु भद्ददारु, चम्पेय्यो तु च चम्पको॥

५६९पनसो कण्टकिफलो, अभया तु हरीतकी।
अक्खो विभीतको तीसु, अमता'मलकी तिसु॥

५७०लबुजो लिकुचो चाथ, कणिकारो दुमुप्पलो।
निम्बो'रिट्ठो पुचिमन्दो, करको तु च दाळिमो॥

५७१सरलो पूतिकट्ठञ्च, कपिला तु च सिंसपा।
सामा पियङ्गु कङ्गुपि, सिरीसो तु च भण्डिलो॥

५७२सोणको दीघवन्तो च,
वकुलो तु च केसरो।
काकोदुम्बरिका फेग्गु, नागो तु नागमालिका॥

५७३असोको वञ्जुलो चाथ, तक्कारी वेजयन्तिका।
तापिञ्छो च तमालो थ, कुटजो गिरिमल्लिका॥

५७४**इन्दयवो** फले तस्सा, गिमन्थो कणिका भवे।
निगुण्ठि'त्थी सिन्दुवारो, तिणसुञ्ञं [तिणसूलं (टी॰)] तु मल्लिका॥

५७५सेफालिका नीलिका थ, अप्फोटा वनमल्लिका।
बन्धुको जयसुमनं, भण्डिको बन्धुजीवको॥

५७६सुमना जातिसुमना, मालती जाति वस्सिकी।

यूथिका मागधी चाथ, सत्तला नवमल्लिका॥

५७७वासन्ती,त्थी अतिमुत्तो, करवीरो'स्समारको।
मातुलुङ्गो बीजपूरो, उम्मत्तो तु च मातुलो॥

५७८करमन्दो सुसेनो च, कुन्दं तु माघ्य मुच्चते।
देवतासो [देवताडो (सी॰ अमरकोस)] तु जीमूतो,
था'मिलातो महासहा॥

५७९अथो सेरेय्यको दासी,
किं किरातो कुरण्टको।
अज्जुको सितपण्णासो, समीरणो फणिज्जको॥

५८०जपा तु जयसुमनं, करीरो ककचो भवे।
रुक्खादनी च वन्दाका, चित्तको त्व'ग्गिसञ्ञितो॥

५८१.अक्को विकीरणो तस्मिं,
त्व' **ळक्को** सेतपुप्फके।
पूतिलता गळोची च, मुब्बा मधुरसा प्यथ॥

५८२कपिकच्छु दुफस्सो थ, मञ्जिट्ठा विकसा भवे।
अम्बट्ठा च तथा पाठा, कटुका कटुरोहिणी॥

५८३अपामग्गो सेखरिको, पिप्पली मागधी मता।
गोकण्टको च सिङ्घाटो, कोलवल्ली'भपिप्पली॥

५८४गोलोमी तु वचा चाथ, गिरिकण्य'पराजिता।
सीहपुच्छी पञ्हिपण्णी, सालपण्णी तु च'त्थिरा। (चथिरा)॥

५८५निदिद्धिका तु ब्यग्घी च, अथ नीली च नीलिनी।
जिञ्जुको [जिञ्जुका (क॰)] चेव गुञ्जा थ, सतमूली सतावरी॥

५८६महोसधं त्व'तिविसा, बाकुची सोमवल्लिका।
दाब्बी दारुहलिद्दा थ, बिळङ्गं चित्रतण्डुला॥

५८७नुही चेव महानामो, मुद्दिका तु मधुरसा।
अथापि मधुकं यट्ठि, मधुकामधुयट्ठिका [मधुलट्ठिका (सी॰ टी॰)]॥

५८८व्रातिङ्गणो च भण्डाकी, वात्ताकी ब्रहती प्यथ।
नागबला चेव झसा, लाङ्गली तु च सारदी॥

५८९रम्भा च कदली मोचो, कप्पासी बदरा भवे।
नागलता तु तम्बूली, अग्गिजाला तु धातकी॥

५९०तिवुता तिपुटा चाथ, सामा काळा च कथ्यते।
अथो सिङ्गी च उसभो, रेणुका कपिळा भवे॥

५९१.हिरिवेरञ्च वालञ्च, रत्तफला तु बिम्बिका।
सेलेय्य' मस्मपुप्फञ्च, एला तु बहुला भवे॥

५९२कुट्ठञ्च ब्याधि कथितो, वानेय्यं तु कुटन्नटं।
ओसधि जातिमत्तम्हि, **ओसधं** सब्ब' मजातियं॥

५९३मूलं पत्तं कळीर'ग्गं, कन्दं मिञ्जा फलं तथा।
तचो पुप्फञ्च छत्तन्ति, **साकं** दसविधं मतं॥

५९४प्पुन्नाटो एळगलो,
तण्डुलेय्यो'प्पमारिसो।
जीवन्ति जीवनी चाथ, मधुरको च जीवको॥

५९५महाकन्दो च लसुणं, पलण्डु तु सुकन्दको।
पटोलो तित्तको चाथ, भिङ्गराजो च मक्कवो॥

५९६पुनन्नवा सोथघाती, वितुन्नं सुनिसण्णकं।
कारवेल्लो तु सुसवी, तुम्ब्या'लाबु च लाबु सा॥

५९७एळालुकञ्च कक्कारी, कुम्भण्डो तु च वल्लिभो।
इन्दवारुणी विसाला, वत्थुकं वत्थुलेय्यको॥

५९८मूलको नित्थियं चुच्चु, तम्बको च कलम्बको।
साकभेदा कासमद्द, झज्झरी फग्गवा'दयो॥

५९९सद्दलो चेव दुब्बा च, **गोलोमी** सा सिता भवे।
गुन्दा च भद्दमुत्तञ्च, रसालो तु'च्छु वेळु तु॥

६००तचसारो वेणु वंसो, पब्बं तु फलु गण्ठिसो।

कीचका ते सियुं वेणू, ये नदन्त्या'निलद्धुता॥

६०१.नळो च धमनो पोट, गलो तु कास मित्थि न।
तेजनो तु सरो, मूलं, तू' **सीरं** बीरणस्स हि॥

६०२.कुसो वरहिसं दब्बो, भूतिणकं तु भूतिणं।
घासो तु यवसो चाथ,
पूगो तु कमुको भवे॥

६०३.तालो विभेदिका चाथ, खज्जुरी सिन्दि वुच्चति।
६०४.हिन्ताल, ताल, खज्जूरी, नालिकेरा तथेव च।
ताली च केतकी नारी, पूगो च **तिणपादपा**ति॥

इति अरञ्ञवग्गो।

६. अरञ्ञादिवग्ग

६०५.पब्बतो गिरि सेलो'द्दि, नगा'चल, सिलुच्चया।
सिखरी भूधरोथ ब्भ, पासाणा'स्मो'पलो सिला॥

६०६.गिज्झकूटो च वेभारो, वेपुल्लो'सिगिली **नगा।**
विञ्झो पण्डव वङ्कादी, पुब्बसेलो तु चो'दयो।
मन्दरो परसेलो'त्थो, हिमवा तु हिमाचलो॥

६०७.गन्धमादन केलास, चित्तकूट सुदस्सना।
कालकूटो तिकूटा'स्स, पत्थो तु सानु नित्थियं॥

६०८.कूटो वा सिखरं सिङ्गं, पपातो तु तटो भवे।
नितम्बो कटको नित्थी, **निज्झरो** पसवो'म्बुनो॥

६०९.दरी'त्थी कन्दरो द्वीसु, लेणं तु गब्भरं गुहा।
सिलापोक्खरणी सोण्डी, कुञ्जं निकुञ्ज मित्थि न॥

६१०.उद्ध **मधिच्चका** सेल, स्सासन्ना भूम्यु **पच्चका।**
पादो तु'पन्तसेलो थ,
धातु'त्तो गेरिकादिको॥

इति सेलवग्गो।

६११.मिगिन्दो केसरी सीहो, तरच्छो तु मिगादनो।
ब्यग्घो तु पुण्डरीको थ, सद्दूलो दीपिनी'रितो॥

६१२.अच्छो इक्को च इस्सो तु,
काळसीहो इसो प्यथ।
रोहिसो रोहितो चाथ,
गोकण्णो गणि कण्टका॥

६१३.खग्ग खग्गविसाणा तु, पलासादो च गण्डको।
ब्यग्घादिके **वाळमिगो, सापदो** थ प्लवङ्गमो॥

६१४मक्कटो वानरो साखा, मिगो कपि वलीमुखो।
पलवङ्गो, कण्हतुण्डो,
गोनङ्गुलो [गोनङ्गलो (टी०)] ति सो मतो॥

६१५.सिङ्गालो [सिगालो (सी०)] जम्बुको कोत्थु, भेरवो च सिवा प्यथ।
बिळारो बब्बु मञ्जारो, कोको तु च वको भवे॥

६१६.महिंसो [महिसो (सी०)] च लुलायो थ,
गवजो गवयो समा।
सल्लो तु सल्लको था'स्स,
लोमम्हि सललं सलं॥

६१७हरिणो मिग सारङ्गा, मगो अजिनयोनि च।
सूकरो तु वरोहो थ,
पेलको च ससो भवे॥

६१८.एणेय्यो एणीमिगो च, पम्पटको तु पम्पको।
वातमिगो तु चलनी, मूसिको त्वा'खु उन्दुरो॥

६१९.चमरो पसदो चेव, कुरुङ्गो मिगमातुका।
रुरु रङ्कु च नीको च, सरभादी **मिगन्तरा॥**

६२०.पियको चमूरु कदली, मिगादी **चम्मयोनयो।**
मिगा तु **पसवो** सीहा, दयो सब्बचतुप्पदा॥

६२१.लूता तु लूतिका उण्ण, नाभि मक्कटको सिया।

विच्छिको त्वा'ळि कथितो, सरबू घरगोळिका॥

६२२.गोधा कुण्डो प्यथो कण्ण, जलूका सतपद्यथ।
कलन्दको काळका थ, नकुलो मङ्गुसो भवे॥

६२३.ककण्टको च सरटो, कीटो तु पुळवो किमि।
पाणको चाप्यथो उच्चा,
लिङ्गो लोमसपाणको॥

६२४विहङ्गो विहगो पक्खी, विहङ्गम खग'ण्डजा।
सकुणो च सकुन्तो वि, पतङ्गो सकुणी द्विजो॥

६२५वक्कङ्गो पत्तयानो च, पतन्तो नीळजो भवे।
तब्भेदा वट्टका जीव, ञ्जीवो चकोर तित्तिरा॥

६२६.साळिका करवीको च, रविहंसो कुकुत्थको।
कारण्डवो च पिलवो [बिलवो (टी॰)], पोक्खरसातका'दयो॥

६२७पतत्तं पेखुणं पत्तं, पक्खो पिञ्छं छदो गरु।
अण्डं तु पक्खिबीजे थ, नीळो नित्थी कुलावकं॥

६२८.सुपण्णमाता **विनता, मिथुनं** थीपुमद्वयं।
युगं तु युगलं द्वन्दं, यमकं यमलं यमं॥

६२९.समूहो गण सङ्घाता, समुदायो च सञ्चयो।
सन्दोहो निवहो ओघो, विसरो निकरो चयो॥

६३०.कायो खन्धो समुदयो, घटा समिति संहति।
रासि पुञ्जो समवायो, पूगो जातं कदम्बकं॥

६३१.ब्यूहो वितान गुम्बा च, कलापो जाल मण्डलं।
समानानं गणो **वग्गो,**
सङ्घो सत्थो तु जन्तुनं॥

६३२.सजातिकानं तु **कुलं, निकायो** तु सधम्मिनं।
यूथो नित्थी सजातिय, तिरच्छानानमुच्चते॥

६३३.सुपण्णो वेनतेय्यो च, गरुळो विहगाधिपो।

परपुट्ठो परभतो, कुणालो कोकिलो पिको॥

६३४मोरो मयूरो वरही, नीलगीव सिखण्डिनो।
कलापी च सिखी केकी, चूळा तु च सिखा भवे॥

६३५सिखण्डो वरहञ्चेव, कलापो पिञ्छ मप्यथ।
चन्दको मेचको चाथ, छप्पदो च मधुब्बतो॥

६३६.मधुलीहो मधुकरो, मधुपो भमरो अलि।
पारावतो कपोतो च, ककुटो च पारेवतो॥

६३७गिज्झो गद्धोथ कुललो, सेनो ब्यग्घीनसो प्यथ।
तब्भेदा सकुणग्घि'त्थी, आटो दब्बिमुखद्विजो॥

६३८.उहुङ्कारो उलूको च, कोसियो वायसारि च।
काको त्व'रिट्ठो धङ्को च, बलिपुट्ठो च वायसो॥

६३९.काकोलो वनकाको थ,
लापो लटुकिका प्यथ।
वारणो हत्थिलिङ्गो च, हत्थिसोण्डविहङ्गमो॥

६४०उक्कुसो कुररो कोल,द्विपक्खिम्हि च कुक्कुहो।
सुवो तु कीरो च सुको, तम्बचूळो तु कुक्कुटो॥

६४१वनकुक्कुटो च निज्जिव्हो, अथ कोञ्चा च कुन्तनी।
चक्कवाको तु चक्कव्हो, सारङ्गोतु च चातको॥

६४२तुलियो पक्खिबिळालो,
सतपत्तो तु सारसो।
बको तु सुक्ककाकोथ,
बलाका विसकण्ठिका॥

६४३लोहपिट्ठो तथा कङ्को, खञ्जरीटो तु खञ्जनो।
कलविङ्को तु चाटको, दिन्दिभो तु किकी भवे॥

६४४कादम्बो काळहंसोथ, सकुन्तो भासपक्खिनि।
धूम्याटो तु कलिङ्गोथ,
दात्यूहो काळकण्ठको॥

६४५**खुद्दा**दी मक्खिकाभेदा, डंसो पिङ्गलमक्खिका।
आसाटिका मक्खिकाण्डं, पतङ्गो सलभो भवे॥

६४६सूचिमुखो च मकसो, चीरी तु झल्लिका [झिल्लिका (क०)] थ च।
जतुका जिनपत्ता थ, हंसो सेतच्छदो भवे॥

६४७ते **राजहंसा** रत्तेहि, पादतुण्डेहि भासिता।
मल्लिका’ख्या **धतरट्ठा,** मलीनेह्य’सितेहि च॥

६४८. तिरच्छो तु तिरच्छानो, तिरच्छानगतो सियाति।

इति अरञ्ञादिवग्गो।

७. पातालवग्ग

६४९अधोभुवनं पातालं, नागलोको रसातलं।
रन्धं तु विवरं छिद्दं, कुहरं सुसिरं बिलं॥

६५०सुसि’त्थी छिग्गलं सोब्भं, सच्छिद्दे **सुसिरं** तिसु।
थियं तु कासु आवाटो, सप्पराजा तु वासुकी॥

६५१अनन्तो नागराजा थ, वाहसो’जगरो भवे।
गोनसो तु तिलिच्छो थ,
देड्डुभो राजुलो भवे॥

६५२**कम्बलो’स्सतरो** मेरु, पादे नागाथ धम्मनी।
सिलुत्तो घरसप्पो थ, नीलसप्पो सिलाभु च॥

६५३आसिविसो भुजङ्गो’हि, भुजगो च भुजङ्गमो।
सरीसपो फणी सप्पा, लगद्दा भोगि पन्नगा॥

६५४द्विजिव्हो उरगो वाळो, दीघो च दीघपिट्ठिको।
पादूदरो विसधरो, **भोगो** तु फणिनो तनु॥

६५५आसी’त्थी सप्पदाठा थ, निम्मोको कञ्चुको समा।
विसं त्व’नित्थी गरळं, तब्भेदा वा **हलाहलो॥**

६५६**काळकूटा**दयो चाथ, वाळग्गात्य’हितुण्डिको।

६५७निरयो दुग्गति'त्थी च, नरको, सो **महा'ट्ठधा।**
सञ्जीवो काळसुत्तो च, महारोरुव रोरुवा।
पतापनो अवीचि'त्थी, सङ्घातो तापनो इति॥

६५८थियं **वेतरणी लोह, कुम्भी** तत्थ जलासया।
कारणिको निरयपो,
नेरयिको तु नारको॥

६५९.अण्णवो सागरो सिन्धु, समुद्दो रतनाकरो।
जलनिझु' दधि, तस्स, भेदा **खीरण्णवा**दयो॥

६६०वेला'स्स कूलदेसो थ,
आवट्टो सलिलब्भमो।
थेवो तु बिन्दु फुसितं, भमो तु जलनिग्गमो॥

६६१.आपो पयो जलं वारि, पानीयं सलिलं दकं।
अण्णो नीरं वनं वालं, तोयं अम्बु'दकञ्च कं॥

६६२.तरङ्गो च तथा भङ्गो, ऊमि वीचि पुमित्थियं।
उल्लोलो तु च **कल्लोलो,** महावीचीसु कथ्यते॥

६६३.जम्बालो कललं पङ्को, चिक्खल्लं कद्दमो प्यथ।
पुलिनं वालुका वण्णु, मरू'रु सिकता भवे॥

६६४अन्तरीपञ्च **दीपो** वा, जलमज्झगतं थलं।
तीरं तु कूलं रोधञ्च, पतीरञ्च तटं तिसु॥

६६५पारं परम्हि तीरम्हि, ओरं त्व'**पार** मुच्चते।
उळुम्पो [उळुपो (क०)] तु प्लवो कुल्लो, तरो च पच्चरी'त्थियं॥

६६६.तरणी तरि नावा च, कूपको तु च कुम्भकं।
पच्छाबन्धो गोटविसो, कण्णधारो तु नाविको॥

६६७अरित्तं केनिपातो थ,
पोतवाहो नियामको।
संयत्तिका तु नावाय, वाणिज्जमाचरन्ति ये॥

६६८.नावाय'ङ्गा' लङ्कारो च, वटाकारो फियादयो।

पोतो पवहनं वुत्तं, दोणि त्वि'त्थी तथा'म्बणं [अम्मणं (सी०)]॥

६६९.गभीर निन्न गम्भीरा, थो **त्तानं** तब्बिपक्खके।
अगाधं त्व'तलम्फस्सं, अनच्छो कलुसा'विला॥

६७०.अच्छो पसन्नो विमलो, गभीरप्पभुती तिसु।
धीवरो मच्छिको मच्छ, बन्ध केवट्ट जालिका॥

६७१.मच्छो मीनो जलचरो, पुथुलोमो'म्बुजो झसो।
रोहितो मग्गुरो सिङ्गी, बलजो मुञ्ज पावुसा॥

६७२.सत्तवङ्को सवङ्को च, नळमीनो च गण्डको।
सुसुका सफरी **मच्छ, प्पभेदा** मकरादयो॥

६७३.**महामच्छा** तिमि तिमि, ङ्गलो तिमिरपिङ्गलो।
आनन्दो तिमिनन्दो च, अज्झारोहो महातिमि॥

६७४.पासाणमच्छो पाठीनो, वङ्को तु बळिसो भवे।
सुसुमारो [संसुमारो (टी०), सुंसुमारो (सी०)] तु कुम्भीलो,
नक्को कुम्मो तु कच्छपो॥

६७५.कक्कटको कुळीरो च, जलूका तु च रत्तपा।
मण्डूको दद्दुरो भेको।
गण्डुप्पादो महीलता॥

६७६.अथ सिप्पी च सुत्ति'त्थी, सङ्खे तु कम्बु'नित्थियं।
खुद्दसङ्ख्ये सङ्खनखो, जलसुत्ति च सम्बुको॥

६७७.जलासयो जलाधारो, गम्भीरो **रहदो** थ च।
उदपानो पानकूपो, खातं पोक्खरणी'त्थियं॥

६७८.तळाको च सरो'नित्थी, वापी च सरसी'त्थियं।
दहो'म्बुजाकरो चाथ, **पल्ललं** खुद्दको सरो॥

६७९.अनोतत्तो तथा कण्ण, मुण्डो च रथकारको।
छद्दन्तो च कुणालो च, वुत्ता मन्दाकिनी'त्थियं॥

६८०.तथा सीहप्पपातोति, एते **सत्त महासरा।**

आहावो तु निपानञ्चा, खातं तु देवखातकं॥

६८१.सवन्ती निन्नगा सिन्धु, सरिता आपगा नदी।
भागीरथी तु गङ्गा थ, सम्भेदो सिन्धुसङ्गमो॥

६८२.गङ्गा'चिरवती चेव, यमुना सरभू (सरबू [सरयू (क॰)]) मही।
इमा **महानदी** पञ्च, चन्दभागा सरस्सती [सरस्वती (सी॰ टी॰)]॥

६८३.नेरञ्जरा च कावेरी, नम्मदादी च **निन्नगा।**
वारिमग्गो पणाली'त्थी [पनाळी (टी॰)], पुमे **चन्दनिका** तु च॥

६८४जम्बाली ओलिगल्लो च, गामद्वारम्हि कासुयं।
सरोरुहं सतपत्तं, अरविन्दञ्च वारिजं॥

६८५अनित्थी पदुमं पङ्कं, रुहं नलिन पोक्खरं।
मुळालपुप्फं कमलं, भिसपुप्फं कुसेसयं॥

६८६.पुण्डरीकं सितं, रत्तं, **कोकनदं कोकासको।**
किञ्जक्खो केसरो नित्थी, दण्डो तु **नाल** मुच्चते॥

६८७भिसं मुळालो नित्थी च, बीजकोसो तु कण्णिका।
पदुमादिसमूहे तु, भवे **सण्ड**मनित्थियं॥

६८८उप्पलं कुवलयञ्च, नीलं त्वि'**न्दीवरं** सिया।
सेतेतु **कुमुद**ञ्चस्स, कन्दो **सालूक** मुच्चते॥

६८९.सोगन्धिकं कल्लहारं, दकसीतलिकं प्यथ।
सेवालो नीलिका चाथ, भिसिन्य'म्बुजिनी भवे॥

६९०. सेवाला तिलबीजञ्च, सङ्खं च पणकादयोति।

इति पातालवग्गो।

भूकण्डो दुतियो।

३. सामञ्ञकण्ड

१. विसेस्याधीनवग्ग

६९१.विसेस्याधीन संकिण्णा, नेकत्थेह्य'ब्ययेहि च।
सा'ङ्गो'पाङ्गेहि कथ्यन्ते, कण्डे वग्गा इह क्कमा॥

६९२.गुणदब्बक्रियासद्दा, सियुं सब्बे विसेसना।
विसेस्याधीनभावेन, विसेस्यसमलिङ्गिनो॥

६९३.सोभनं रुचिरं साधु, मनुञ्ञं चारु सुन्दरं।
वग्गु मनोरमं कन्तं, हारी मञ्जु च पेसलं॥

६९४भद्दं वामञ्च कल्याणं, मनापं लद्धकं सुभं।
उत्तमो पवरो जेट्ठो, पमुखा'नुत्तरो वरो॥

६९५मुख्यो पधानं पामोक्खो, पर मग्गञ्ञ मुत्तरं।
पणीतं परमं सेय्यो, गामणी सेट्ठ सत्तमा॥

६९६.विसिट्ठा'रिय नागे'को, सभग्गा मोक्ख पुङ्गवा।
सीह कुञ्जर सद्दूला, दी तु समासगा पुमे॥

६९७चित्त'क्खि पीतिजनन, **मब्यासेक मसेचनं।**
इट्ठं तु सुभगं हज्जं, दयितं वल्लभं पियं॥

६९८.तुच्छञ्च रित्तकं सुञ्ञं, अथा'सारञ्च फेग्गु च।
मेज्झं पूतं पवित्तो थ, अविरद्धो अपण्णको॥

६९९.उक्कट्ठो च पकट्ठो थ, निहीनो हीन लामका।
पतिकिट्ठं निकिट्ठञ्च, इत्तरा'वज्ज कुच्छिता॥

७००अधमो'मक गारय्हा,
मलीनो तु मलीमसो।
ब्रहा महन्तं विपुलं, विसालं पुथुलं पुथु॥

७०१.गरु'रु वित्थिण्ण मथो, पीनं थूलञ्च पीवरं।
थुल्लञ्च वठरञ्चा थ, आचितं निचितं भवे॥

७०२सब्बं समत्त मखिलं, निखिलं सकलं तथा।
निस्सेसं कसिणा'सेसं, समग्गञ्च अनूनकं,

७०३भूरि पहुतं पचुरं, भिय्यो सम्बहुलं बहु।

येभुय्यं बहुलं चाथ, बाहिरं परिबाहिरं॥

७०४**परोसता**दी ते, येसं, परं मत्तं सतादितो।
परित्तं सुखुमं खुद्दं, थोक मप्पं किसं तनु॥

७०५चुल्लं मत्ते'त्थियं लेस,
लवा'णुहि कणो पुमे।
समीपं निकटा'सन्नो, पकट्ठा'भ्यास सन्तिकं॥

७०६अविदूरञ्च सामन्तं, सन्निकट्ठ मुपन्तिकं।
सकासं अन्तिकं ञत्तं, दूरं तु विप्पकट्ठकं॥

७०७निरन्तरं घनं सन्दं, विरळं पेलवं तनु।
अथा यतं दीघ मथो, नित्तलं वट्ट वट्टुलं॥

७०८उच्चो तु उन्नतो तुङ्गो, उदग्गो चेव उच्छितो।
नीचो रस्सो वामनो थ, अजिम्हो पगुणो उजु॥

७०९अळारं वेल्लितं वङ्कं, कुटिलं जिम्ह कुञ्चितं।
धुवो च सस्सतो निच्चो, सदातन सनन्तना॥

७१०.**कूटट्ठो** त्वे'करूपेन, कालब्यापी पकासितो।
लहु सल्लहुकं चाथ, सङ्ख्यातं गणितं मितं॥

७११.तिण्हं तु तिखिणं तिब्बं, चण्डं उग्गं खरं भवे।
जङ्गमञ्च चरञ्चेव, तसं ञेय्यं चराचरं॥

७१२.कम्पनं चलनं चाथ, अतिरित्तो तथा'धिको।
थावरो जङ्गमा अञ्ञो, लोलं तु चञ्चलं चलं॥

७१३.तरलञ्च पुराणो तु, पुरातन सनन्तना।
चिरन्तनो थ पच्चग्घो, नूतनो'भिनवो नवो॥

७१४कुरूरं कठिनं दळ्हं, निट्ठुरं कक्खळं भवे।
अनित्थ्य'न्तो परियन्तो, पन्तो च पच्छिम'न्तिमा॥

७१५जिघञ्ञं चरिमं पुब्बं, त्व'ग्गं पठम मादि सो।
पतिरूपो नुच्छविकं, अथ मोघं निरत्थकं॥

७१६.ब्यत्तं पुट [फुटं (सी॰)] ञ्च मुदु तु, सुकुमारञ्च कोमलं।
पच्चक्खं इन्द्रियग्गय्हं, **अपच्चक्खं** अतिन्द्रियं॥

७१७इतरा'ञ्ञतरो एको, अञ्ञो बहुविधो तु च।
नानारूपो च विविधो, अबाधं तु निरग्गलं॥

७१८.अथे'काकी च एकच्चो, एको च एकको समा।
साधारणञ्च सामञ्ञं, सम्बाधो तु च संकटं॥

७१९.वामं कळेवरं **सब्यं। अपसब्यं** तु दक्खिणं।
पटिकूलं त्व'पसब्यं, गहनं कलिलं समा॥

७२०उच्चावचं बहुभेदं, संकिण्णा' किण्ण संकुला।
कतहत्थो च कुसलो, पवीणा'भिञ्ञ सिक्खिता॥

७२१.निपुणो च पटु छेको, चातुरो दक्ख पेसला।
बालो दत्तु जलो मूळ्हो, मन्दो विञ्ञू च बालिसो॥

७२२पुञ्ञवा सुकती धञ्ञो, महुस्साहो महाधिति।
महातण्हो महिच्छो थ, हदयी हदयालु च॥

७२३सुमनो हट्ठचित्तो थ, दुम्मनो विमनो प्यथ।
वदानियो वदञ्ञू च, दानसोण्डो बहुप्पदो॥

७२४ख्यातो पतीतो पञ्ञातो,
भिञ्ञातो पथितो सुतो,
विस्सुतो विदितो चेव, पसिद्धो पाकटो भवे॥

७२५इस्सरो नायको सामी, पती'सा'धिपती पभू।
अय्या'धिपा'धिभू नेता,
इब्भो त्व'ड्ढो तथा धनी॥

७२६द्दानारहो दक्खिणेय्यो, सिनिद्धो तु च वच्छलो।
परिक्खको कारणिको,
आसत्तो तु च तप्परो॥

७२७कारुणिको दयालुपि, सूरतो **उस्सुको** तु च।
इट्ठत्थे उय्युतो चाथ, दीघसुत्तो चिरक्रियो॥

७२८पराधीनो परायत्तो, आयत्तो तु च सन्तको।
परिग्गहो अधीनो च, सच्छन्दो तु च सेरिनि॥

७२९अनिसम्मकारी जम्मो, अतितण्हो तु लोलुपो।
गिद्धो तु लुद्धो लोलो थ,
कुण्ठो मन्दो क्रियासु हि॥

७३०कामयिता तु कमिता, कामनो कामि कामुको।
सोण्डो मत्तो विधेय्यो तु,
अस्सवो सुब्बचो समा॥

७३१पगब्भो पटिभायुत्तो, भीसीलो भीरु भीरुको।
अधीरो [अवीरो (टी०)] कातरो चाथ,
हिंसासीलो च घातुको॥

७३२क्कोधनो रोसनो [दोसनो (सी०)] कोपी,
चण्डो त्वच्चन्तकोधनो।
सहनो खमनो खन्ता, तितिक्खवा च खन्तिमा॥

७३३सद्धायुत्तो तु सद्धालु, धजवा तु धजालु च [लज्जालुतु च लज्जवा (क०)]।
निद्दालु निद्दासीलो थ, भस्सरो भासुरो भवे॥

७३४नग्गो दिगम्बरो'वत्थो, घस्मरो तु च भक्खको।
एळमूगो तु वत्तुञ्च, सोतुं चा'कुसलो भवे॥

७३५मुखरो दुम्मुखा'बद्ध, मुखा चाप्पियवादिनि।
वाचालो बहुगारय्ह, वचे वत्ता तु सो वदो॥

७३६निजो सको अत्तनियो,
विम्हयो'च्छरिय'ब्भुतो।
विहत्थो ब्याकुलो चाथ,
आततायी वधुद्यतो॥

७३७सीसच्छेज्जम्हि **वज्झो** थ, निकतो च सठो'नुजु।
सूचको पिसुणो कण्णे,
जपो धुत्तो तु वञ्चको॥

७३८अनिसम्म हि यो किच्चं, पुरिसो वधबन्धनादि माचरति।
अविनिच्छितकारित्ता, सोखलु **चपलो**ति विञ्ञेय्यो॥

७३९खुद्दो कदरियो थद्ध, मच्छरी कपणो प्यथ।
अकिञ्चनो दलिद्दो च, दीनो निद्धन दुग्गता॥

७४०असम्भावितसम्पत्तं, **काकतालिय** मुच्चते।
अथ याचनको अत्थी, याचको च वनिब्बको॥

७४१**अण्डजा** पक्खिसप्पादी, नरादी तु **जलाबुजा।**
सेदजा किमिडंसादी, देवादी त्वो' **पपातिका॥**

७४२जण्णुतग्घो जण्णुमत्तो, **कप्पो** तु किञ्चिदूनके।
अन्तग्गतं भु परिया, पन्न मन्तोगधो'गधा॥

७४३साधितो साधितो चाथ, निप्पक्कं कुथितं भवे।
आपन्नो त्वा'पदप्पत्तो, विवसो त्ववसो भवे॥

७४४नुण्णो नुत्ता'त्त, खित्ता चे', रिता विद्धा थ कम्पितो।
धूतो आधूत चलिता, निसितं तु च तेजितं॥

७४५पत्तब्बं गम्म मापज्जं [आसज्जं (क०)], पक्कं परिणतं समा।
वेठितं तु वलयितं, रुद्धं संवुत मावुतं॥

७४६परिक्खित्तञ्च निवुतं, विसटं वित्थतं ततं।
लित्तो तु दिद्धो गूळ्हो तु,
गुत्तो पुट्ठो तु पोसितो॥

७४७लज्जितो हीळितो चाथ, सनितं धनितं प्यथ।
सन्दानितो सितो बद्धो,
कीलितो संयतो भवे॥

७४८सिद्धे निप्फन्न निब्बत्ता, दारिते भिन्न भेदिता।
छन्नो तु छादिते चाथ, विद्धे छिद्दित वेधिता॥

७४९आहटो आभता'नीता,
दन्तो तु दमितो सिया।
सन्तो तु समितो चेव,

पुण्णो तु पूरितो भवे॥

७५०अपचायितो महितो, पूजिता'रहितो'च्चितो।
मानितो चा'पचितो च, तच्छितं तुतनूकते॥

७५१सन्तत्तो धूपितो चोप,
चरितो तु उपासितो।
भट्ठं तु गलितं पन्नं, चुतञ्च धंसितं भवे॥

७५२पीतो पमुदितो हट्ठो,
मत्तो तुट्ठो थ कन्तितो।
सञ्छिन्नो लून दाता थ,
पसत्थो वण्णितो थुतो॥

७५३तिन्तो'ल्ल'द्द किलिन्नो'न्ना, मग्गितं परियेसितं।
अन्वेसितं गवेसितं, लद्धं तु पत्त मुच्चते॥

७५४रक्खितं गोपितं गुत्तं, तातं गोपायिता'विता।
पालितं अथ ओस्सट्ठं, चत्तं हीनं समुज्झितं॥

७५५भासितं लपितं वुत्ता, भिहिता'ख्यात जप्पिता।
उदीरितञ्च कथितं, गदितं भणितो'दिता॥

७५६अवञ्ञाता'वगणिता, परिभूता'वमानिता।
जिघच्छितो तु खुदितो,
छातो चेव बुभुक्खितो॥

७५७बुद्धं ञातं पटिपन्नं, विदिता'वगतं मतं।
गिलितो खादितो भुत्तो,
भक्खितो'ज्झोहटा'सिता॥

इति विसेस्याधीनवग्गो।

२. संकिण्णवग्ग

७५८ञेय्यं लिङ्ग मिह क्वापि, पच्चयत्थवसेन च।
क्रिया तु किरियं कम्मं,
सन्ति तु समथो समो।

दमो च दमथो दन्ति, **वत्तं** तु सुद्धकम्मनि।
अथो आसङ्गवचनं, तीसु वुत्तं परायणं॥

७५९भेदो विदारो फुटनं, तप्पनं तु च पीणनं।
अक्कोसन मभिसङ्गो,
भिक्खा तु याचना'त्थना॥

७६०निन्निमित्तं यदिच्छा था', पुच्छना नन्दनानि च।
सभाजन मथो ञायो,
नयो फाति तु वुद्धियं॥

७६१किलमथो किलमनं, पसवो तु पसूतियं।
उक्कंसो त्वतिसयो थ,
जयो च जयनं जिति॥

७६२व्सो कन्ति, ब्यधो वेधो,
गहो गाहो वरो वुति।
पचा पाको हवो हुति [हूभि (सी॰ अमरकोस)],
वेदो वेदन मित्थि वा॥

७६३ञीरणं जानि ताणं तु, रक्खणं पमितिप्पमा।
सिलेसो सन्धि च खयो,
त्वपचयो रवो रणो॥

७६४निगादो निगदो मादो, मदो पसिति बन्धनं।
आकरो त्विङ्गितं इङ्गो,
अथ'त्थापगमो ब्ययो॥

७६५अन्तरायो च पच्चूहो,
विकारो तु विकत्य'पि।
पविसिलेसो विधुरं, उपवेसनमासनं॥

७६६अज्झासयो अधिप्पायो, आसयो चाभिसन्धि च।
भावो धिमुत्ति छन्दो थ,
दोसो आदीनवो भवे॥

७६७आनिसंसो गुणो चाथ,

मज्झं वेमज्झ मुच्चते।
मज्झन्हिको [मज्झन्तिको (टी॰ सी॰ पी॰)] तु मज्झन्हो, वेमत्तं तु च नानता॥

७६८व्रा जागरो जागरियं [जागरियो (टी॰)], पवाहो तु पवत्ति च।
ब्यासो पपञ्चो वित्थारो,
यामो तु संयमो यमो॥

७६९सम्बाहनं मद्दनञ्च, पसरो तु विसप्पनं।
सन्थवो तु परिचयो,
मेलको सङ्ग सङ्गमा॥

७७०सन्निधि सन्निकट्ठम्हि, विनासो तु अदस्सनं।
लवो भिलावो लवनं,
पत्थावो'वसरो समा॥

७७१ओसानं परियोसानं, उक्कंसो'तिसयो भवे [अवसानं समापनं (?)]।
सन्निवेसो च सण्ठानं, अथा'ब्भन्तर मन्तरं॥

७७२पाटिहीरं पाटिहेरं, पाटिहारिय मुच्चते।
किच्चं तु करणीयञ्च, सङ्खारो वासना भवे॥

७७३पवनं पव निप्पावा, तसरो सुत्तवेठनं।
सङ्कमो दुग्गसञ्चारो, पक्कमो तु उपक्कमो॥

७७४पाठो निपाठो निपठो, विचयो मग्गना पुमे।
आलिङ्गनं परिस्सङ्गो, सिलेसो उपगूहनं॥

७७५आलोकनञ्च निज्झानं, इक्खणं दस्सनं प्यथ।
पच्चादेसो निरसनं, पच्चक्खानं निराकति॥

७७६विपल्लासो'ञ्ञथाभावो, ब्यत्तयो विपरीययो।
विपरियासो'तिक्कमो, त्व'तिपातो उपच्चयो॥

इति संकिण्णवग्गो।

३. अनेकत्थवग्ग

७७७अनेकत्थे पवक्खामि, गाथा'द्धपादतो कमा।

एत्थ लिङ्गविसेसत्थ, मेकस्स पुनरुत्तता॥

७७८**समयो** समवाये च, समूहे कारणे खणे।
पटिवेधे सिया काले, पहाने लाभ दिट्ठिसु॥

७७९**वण्णो** सण्ठान रूपेसु, जाति,च्छवीसु कारणे।
पमाणे च पसंसायं, अक्खरे च यसे गुणे॥

७८०उद्देसे पातिमोक्खस्स, पण्णत्तिय **मुपोसथो।**
उपवासे च अट्ठङ्गे, उपोसथदिने सिया॥

७८१रथङ्गे लक्खणे धम्मो, रचक्के'स्वीरियापथे।
चक्कं सम्पत्तियं चक्क, रतने मण्डले बले॥

७८२कुलालभण्डे आणाय, मायुधे दान रासिसु।
७८३दानस्मिं **ब्रह्मचरिय,** मप्पमञ्ञासु सासने।
मेथुनारतियं वेय्या, वच्चे सदारतुट्ठियं।
पञ्चसीला'रियमग्गो, पोसथङ्ग धितीसु [ठितीसु (क०)] च॥

७८४**धम्मो** सभावे परियत्तिपञ्ञा,
ञायेसु सच्चप्पकतीसु पुञ्ञे।
ञेय्ये गुणा'चार समाधिसूपि,
निस्सत्तता'पत्तिसु कारणादो॥

७८५**अत्थो** पयोजने सद्दा, भिधेय्ये वुद्धियं धने।
वत्थुम्हि कारणे नासे, हिते पच्छिमपब्बते॥

७८६ञेभुय्यता'ब्यामिस्सेसु, विसंयोगे च **केवलं।**
दळ्हत्थे'नतिरेके चा, नवसेसम्हि तं तिसु॥

७८७**आणो** पटल रासीसु, आनिसंसे च बन्धने।
अप्पधाने च सीलादो, सुक्कादिम्हि जियाय च॥

७८८रुक्खादो विज्जमाने चा, रहन्ते खन्धपञ्चके।
भूतो सत्त महाभूता, मनुस्सेसु न नारियं॥

७८९**वाच्चलिङ्गो** अतीतस्मिं, जाते पत्ते समे मतो।
७९०.

सुन्दरे दळ्हिकम्मे चा, याचने सम्पटिच्छने।
सज्जने सम्पहंसायं, **साध्वा**'भिधेय्यलिङ्गिकं॥

७९१.**अन्तो** नित्थी समीपे चा, वसाने पदपूरणे।
देहावयवे कोट्ठासे, नास सीमासु लामके॥

७९२.निकाये सन्धि सामञ्ञ, प्पसूतीसु कुले भवे।
विसेसे सुमनायञ्च, **जाति** सङ्खतलक्खणे॥

७९३.भवभेदे पतिट्ठायं, निट्ठा'ज्झासयबुद्धिसु।
वासट्ठाने च गमने, विसटत्ते [विसरत्त विसदत्ते] **गती**रिता॥

७९४.फले विपस्सना दिब्ब, चक्खु सब्बञ्ञुतासु च।
पच्चवेक्खणञाणम्हि, मग्गे च **ञाणदस्सनं**॥

७९५.कम्मारुद्धन अङ्गार, कपल्ल दीपिकासु च।
सुवण्णकारमूसायं, **उक्का** वेगे च वायुनो॥

७९६.केसोहारण, जीवित, वुत्तिसु वपने च वापसमकरणे।
कथने पमुत्तभाव, ज्झेनादो [ज्झेसनादो (सी॰)] **वुत्त** मपि तीसु॥

७९७.गमने विस्सुते चा'व, धारितो'पचितेसु च।
अनुयोगे किलिन्ने च, **सुतो**' भिधेय्यलिङ्गिको॥

७९८.सोतविञ्ञेय्य सत्थेसु, **सुतं** पुत्ते **सुतो** सिया।
७९९.**कप्पो** काले युगे लेसे, पञ्ञत्ति परमायुसु।
सदिसे तीसु समण, वोहार कप्पबिन्दुसु।
समन्तत्थे'न्तरकप्पा, दिके तक्के विधिम्हि च॥

८००.निब्बान मग्ग विरति, सपथे सच्चभासिते।
तच्छे चा'रियसच्चम्हि, दिट्ठियं **सच्च** मीरितं॥

८०१.सञ्जातिदेसे हेतुम्हि, वासट्ठाना'करेसु च।
समोसरणट्ठाने चा, **यतनं** पदपूरणे॥

८०२.**अन्तरं** मज्झ वत्थ'ञ्ञ, खणो'कासो'धि हेतुसु।
ब्यवधाने विनट्ठे च, भेदे छिद्दे मनस्य'पि॥

८०३.आरोग्ये **कुसलं** इट्ठ, विपाके **कुसलो** तथा।
अनवज्जम्हि छेके च, कथितो **वाच्चलिङ्गिको॥**

८०४द्रवा'चारेसु वीरिये, मधुरादीसु पारदे।
सिङ्गारादो धातुभेदे, किच्चे सम्पत्तियं **रसो॥**

८०५**बोधि** सब्बञ्ञुतञ्ञाणे, रियमग्गे च नारियं।
पञ्ञत्तियं **पुमे'** स्सत्थ, रुक्खम्हि पुरिसित्थियं॥

८०६.सेवितो येन यो निच्चं, तत्थापि **विसयो** सिया।
रूपादिके जनपदे, तथा देसे च गोचरे॥

८०७.**भावो** पदत्थे सत्ताय, मधिप्पाय क्रियासु च।
सभावस्मिञ्च लीलायं, पुरिसि'त्थिन्द्रियेसु च॥

८०८.**सो** बन्धवे'त्तनि च **सं, सो** धनस्मि मनित्थियं।
सा पुमे सुनखे वुत्तो, त्तनिये **सो** तिलिङ्गिको॥

८०९.**सुवण्णं** कनके वुत्तं, **सुवण्णो** गरुळे तथा।
पञ्चधरणमत्ते च, छवि सम्पत्तियम्पि च॥

८१०.**वरो** देवादिका [देवादितो (सी॰)] इट्ठे, जामातरि पतिम्हि च,
उत्तमे **वाच्चलिङ्गो** सो, **वरं** मन्दप्पिये ब्ययं॥

८११.मकुले धनरासिम्हि, सिया **कोस** मनित्थियं।
नेत्तिंसादि पिधाने च, धनुपञ्चसतेपि च॥

८१२.पितामहे जिने सेट्ठे, ब्राह्मणे च पितूस्वपि।
ब्रह्मा वुत्तो तथा **ब्रह्मं,** वेदे तपसि वुच्चते॥

८१३.हत्थीनं मज्झबन्धे च, पकोट्ठे कच्छबन्धने।
मेखलायं मता **कच्छा, कच्छो** वुत्तो लताय च॥

८१४तथेव बाहुमूलम्हि, अनूपम्हि तिणेपि च।
८१५.**पमाणं** हेतु सत्थेसु, माने च सच्चवादिनि।
पमातरि च निच्चम्हि, मरियादाय मुच्चते॥

८१६.**सत्तं** दब्ब'त्तभावेसु, पाणेसु च बले, सिया [बले सक्का (टी॰)]।

सत्तायञ्च, जने**सत्तो,** आसत्ते सो तिलिङ्गिको॥

८१७.सेम्हादो रसरत्तादो, महाभूते पभादिके।
धातु द्वीस्व'ट्ठिचक्खा'दि, भ्वा'दीसु गेरिकादिसु॥

८१८.अमच्चादो सभावे च, योनियं **पकती**'रिता।
सत्वादिसाम्या'वत्थायं, पच्चया पठमेपि च॥

८१९.**पदं** ठाने परित्ताणे, निब्बानम्हि च कारणे।
सद्दे वत्थुम्हि कोट्ठासे, पादे तल्लञ्छने मतं॥

८२०.लोहमुग्गर मेघेसु, **घनो,** तालादिके **घनं,।**
निरन्तरे च कठिने, वाच्चलिङ्गिक मुच्चते॥

८२१.**खुद्दा** च मक्खिकाभेदे, मधुम्हि **खुद्द,** मप्पके।
अधमे कपणे चापि, बहुम्हि चतूसु त्तिसु॥

८२२.तक्के मरणलिङ्गे च, **अरिट्ठं** असुभे सुभे,।
अरिट्ठो आसवे काके, निम्बे च फेनिलद्दुमे॥

८२३.मानभण्डे पलसते, सदिसत्ते **तुला** तथा।
गेहानं दारुबन्धत्थ, पीठिकायञ्च दिस्सति॥

८२४.मित्तकारे लञ्जदाने, बले रासि विपत्तिसु [बलरासि विपत्तिसु (क॰)]।
युद्धे चेव पटिञ्ञायं, **सङ्गरो** सम्पकासितो॥

८२५.खन्धे भवे निमित्तम्हि, **रूपं** वण्णे च पच्चये।
सभाव सद्द सण्ठान, रूपज्झान वपूसु च॥

८२६.वत्थु किलेस कामेसु, इच्छायं मदने रते।
कामो, कामं निकामे, चा, नुञ्ञायं **काम** मब्ययं॥

८२७.**पोक्खरं** पदुमे देहे, वज्जभण्डमुखेपि च।
सुन्दरत्ते च सलिले, मातङ्गकरकोटियं॥

८२८.रासिनिच्चल मायासु, दम्भा'सच्चेस्व'योघने।
गिरिसिङ्गम्हि सीरङ्गे, यन्ते **कूट** मनित्थियं॥

८२९.वुद्धियं जनने काम, धात्वादीम्हि च पत्तियं।
सत्तायञ्चेव संसारे, **भवो** सस्सतदिट्ठियं॥

८३०.पटिवाक्यो'त्तरासङ्गे, सु'**त्तरं उत्तरो** तिसु।
सेट्ठे दिसादिभेदे च, परस्मि मुपरी'रितो॥

८३१.**नेक्खम्मं** पठमज्झाने, पब्बज्जायं विमुत्तियं।
विपस्सनाय निस्सेस, कुसलम्हि च दिस्सति॥

८३२.**सङ्खारो** सङ्खते पुञ्ञा, भिसङ्खारादिकेपि च।
पयोगे कायसङ्खारा, द्य'भिसङ्खरणेसु च॥

८३३.आरम्मणे च संसट्ठे, वोकिण्णे निस्सये तथा।
तब्भावे चाप्यभिधेय्य, लिङ्गो **सहगतो** भवे॥

८३४तीसु **छन्नं** पतिरूपे, छादिते च निगूहिते।
निवासन पारुपने, रहो पञ्ञत्तियं पुमे॥

८३५बुद्धसमन्तचक्खूसु, **चक्खु** पञ्ञाय मीरितं।
धम्मचक्खुम्हि च मंस, दिब्बचक्खुद्वयेसु च॥

८३६वाच्चलिङ्गो **अभिक्कन्तो,** सुन्दरम्हि अभिक्कमे।
अभिरूपे खये वुत्तो, तथेव'ब्भनुमोदने॥

८३७कारणे देसनायञ्च, वारे वेवचनेपि च।
पाकारस्मिं [पकारस्मिं (क०)] अवसरे, **परियायो** कथीयति॥

८३८.विञ्ञाणे चित्तकम्मे च, विचित्ते **चित्त** मुच्चते।
पञ्ञत्ति चित्तमासेसु, **चित्तो,** तारन्तरे थियं॥

८३९.**सामं** वेदन्तरे सान्त्वे, तं पीते सामले तिसु।
सयमत्थे ब्ययं **सामं, सामा** च सारिवायपि॥

८४०पुमे आचरियादिम्हि, **गरु** [गुरु (क० टी०)] मातापितूस्वपि।
गरु तीसु महन्ते च, दुज्जरा'लहुकेसु च॥

८४१.अच्चिते विज्जमाने च, पसत्थे सच्च साधुसु।
खिन्ने च समिते चेव, **सन्तो**भिधेय्यलिङ्गिकोति॥

इति गाथाअनेकत्थवग्गो।

८४२**देवो** विसुद्धिदेवा'दो, मेघ मच्चु नभेसु च।
अथोपि तरुणे सत्ते, चोरेपि **माणवो** भवे॥

८४३आदि कोट्ठास कोटीसु, पुरतो'**ग्गं**वरे तीसु।
पच्चनीको'त्तमेस्व'ञ्ञे, पच्छाभागे **परो** तिसु॥

८४४योनि काम सिरि'स्सरे, धम्मु'य्याम यसे **भगं।**
उळारो तीसु विपुले, सेट्ठे च मधुरे सिया॥

८४५**सम्पन्नो** तीसु सम्पुण्णे, मधुरे च समङ्गिनि।
सङ्खा तु ञाणे कोट्ठास, पञ्ञत्ति गणनेसु च॥

८४६**ठानं** इस्सरियो'कास, हेतूसु ठितियम्पि च।
अथो माने पकारेच, कोट्ठासेच **विधो** द्विसु॥

८४७पञ्ञो'पवास खन्तीसु, **दमो** इन्द्रियसंवरे।
ञाणे च सोमनस्सेच, **वेदो** छन्दसि चो'च्चते॥

८४८खन्धकोट्ठास, पस्साव, मग्ग, हेतूसु **योनि** सा [योनि सो (टी०)]।
काले तु कूले सीमायं, **वेला** रासिम्हि भासिता॥

८४९**वोहारो** सद्द पण्णत्ति, वणिज्जा चेतनासु च।
नागो तु'रग हत्थीसु, नागरुक्खे तथु'त्तमे॥

८५०सेट्ठा'सहाय सङ्ख्या'ञ्ञ,
तुल्येस्वे'**को**तिलिङ्गिको।
रागे तु **मानसो** चित्ता, रहत्तेसु च **मानसं॥**

८५१**मूलं** भे सन्तिके मूल, मूले हेतुम्हि पाभते।
रूपाद्यं'स पकण्डेसु, **खन्धो** रासि गुणेसु च॥

८५२**आरम्भो** वीरिये कम्मे, आदिकम्मे विकोपने।
अथो हदयवत्थुम्हि, चित्ते च **हदयं** उरे॥

८५३पच्छातापा'नुबन्धेसु, रागादो'**नुसयो** भवे।
मातङ्गमुद्धपिण्डे तु, घटे **कुम्भो** दसम्बणे॥

८५४**परिवारो** परिजने, खग्गकोसे परिच्छदे।
आलम्बरो तु सारम्भे, भेरिभेदे च दिस्सति॥

८५५**खणो** कालविसेसे च, निब्यापारट्ठितिम्हि च।
कुले त्व'**भिजनो** वुत्तो, उप्पत्तिभूमियम्पि च॥

८५६**आहारो** कबळीकारा, हारादीसु च कारणे।
विस्सासे याचनायञ्च, पेमे च **पणयो** मतो॥

८५७णादो सद्धा, चीवरादि, हेत्वा'धारेसु **पच्चयो।**
कीळा दिब्बविहारादो, **विहारो** सुगतालये॥

८५८स्रमत्थने मतो चित्ते, कग्गतायं **समाधि** च।
योगो सङ्गति [सङ्गे च (टी॰)] कामादो,
झानो'पायेसु युत्तियं॥

८५९**भोगो** सप्पफण'ङ्गेसु, कोटिल्ले भुञ्जने धने।
भूमिभागे किलेसे च, मले चा'**ङ्गण** मुच्चते॥

८६०धनादिदप्पे पञ्ञाय, **अभिमानो** मतो थ च।
अपदेसो निमित्ते च, छले च कथने मतो॥

८६१.चित्ते काये सभावे च, सो **अत्ता** परम'त्तनि।
अथ **गुम्बो** च थम्बस्मिं [थम्भस्मिं (टी॰)], समूहे बलसज्जने॥

८६२.अन्तोघरे कुसूले च, **कोट्ठो** न्तोकुच्छियं प्यथ।
सोपानङ्गम्हि **उण्हीसो,** मकुटे सीसवेठने॥

८६३.निय्यासे सेखरे द्वारे, **निय्यूहो** नागदन्तके।
अथो सिखण्डे तूणीरे, **कलापो** निकरे मतो॥

८६४चूळा संयतकेसेसु, मकुटे **मोळि** च द्विसु।
सङ्खो त्व'नित्थियं कम्बु, नलाट'ट्ठीसु [ललाटट्ठीसु (सी॰)] गोप्फके॥

८६५**पक्खो** काले बले साध्ये, सखी वाजेसु पङ्गुले।
देसे'ण्णवे पुमे **सिन्धु,** सरितायं स नारियं॥

८६६.गजे **करेणु** पुरिसे, सो हत्थिनिय मित्थियं।

रतने **वजिरो** नित्थी, मणिवेधि'न्दहेतिसु॥

८६७**विसाणं** तीसु मातङ्ग, दन्ते च पसुसिङ्गके।
कोटियं तु मतो **कोणो,** तथा वादित्तवादने॥

८६८वणिप्पथे च नगरे, वेदे च **निगमो** थ च।
विवादादो' **धिकरणं,** सिया'धारे च कारणे॥

८६९पसुम्हि वसुधायञ्च, वाचादो **गो** पुमित्थियं।
हरिते तु सुवण्णे च, वासुदेवे **हरी**'रितो॥

८७०आयत्ते परिवारे च, भरियायं **परिग्गहो।**
उत्तंसो त्व' **वतंसो** च, कण्णपूरे च सेखरे॥

८७१विज्जुयं वजिरे चेवा, **सनि**'त्थिपुरिसे प्यथ।
कोणे सङ्ख्याविसेसस्मिं, उक्कंसे **कोटि** नारियं॥

८७२चूळा जाला पधान'ग्ग, मोरचूळासु सा **सिखा।**
सप्पदाठाय **मासी**'त्थी, इट्ठस्सा'सीसनायपि॥

८७३**वसा** विलीन तेलस्मिं, वसगा वञ्झगाविसु।
अभिलासे तु किरणे, अभिसङ्गे **रुचि**'त्थियं॥

८७४**सञ्ञा** सञ्जानने नामे, चेतनायञ्च दिस्सति।
अंसे सिप्पे **कला** काले, भागे चन्दस्स सोळसे॥

८७५बीजकोसे घरकूटे, कण्णभूसाय **कण्णिका।**
आगामिकाले दीघत्ते, पभावे च मता'**यति॥**

८७६**उण्णा** मेसादिलोमे, च, भूमज्झे रोमधातुयं।
वारुणी त्वित्थियं वुत्ता, नट्टकी मदिरादिसु॥

८७७क्रियचित्ते च करणे, **किरियं** कम्मनि **क्रिया।**
सुनिसायं तु कञ्ञाय, जायाय च **वधू** मता॥

८७८प्रमाणि'स्सरिये **मत्ता,** अक्खरावयवे'प्पके।
सुत्तं पावचने रिट्ठे [सिद्धे (टी॰)], तन्ते तं सुपिते तिसु॥

८७९.राजलिङ्गो'सभङ्गेसु, रुक्खे च **ककुदो** [ककुधो (टी॰ सी॰)] प्यथ।
निमित्त'क्खर सूपेसु, **ब्यञ्जनं** चिहने पदे॥

८८०.वोहारे जेतु मिच्छायं, कीळादो चापि **देवनं।**
भरियायं तु केदारे, सरीरे **खेत्त** मीरितं॥

८८१.सुस्सूसायञ्च विञ्ञेय्यं, इस्साभ्यासे प्यु'**पासनं।**
सूलं तु नित्थियं हेति, भेदे संकु रुजासु च॥

८८२.**तन्ति** वीणागुणे, **तन्तं,** मुख्यसिद्धन्त तन्तुसु।
रथाद्यङ्गे तु च **युगो,** कप्पम्हि युगले **युगं॥**

८८३.इत्थिपुप्फे च रेणुम्हि, **रजो** पकतिजे गुणे।
न्यासप्पणे तु दानम्हि, **निय्यातन** मुदीरितं॥

८८४.गारु'पाया'वतारेसु, **तित्थं** पूतम्बु दिट्ठिसु।
पण्डके **जोति** नक्खत्त, रंसीस्व'ग्गिम्हि **जोति** सो॥

८८५.**कण्डो** नित्थी सरे दण्डे, वग्गे चावसरे प्यथ।
उद्धंबाहुद्वयमाने [बाहुद्वयुम्माने (सी॰ क॰)], सूरत्तेपि च **पोरिसं॥**

८८६.**उट्ठानं** पोरिसे'हासु, निसिन्नाद्यु'ग्गमे प्यथ।
अनिस्सयमहीभागे, त्वि'**रीणं** ऊसरे सिया॥

८८७.**आराधनं** साधने च, पत्तियं परितोसने।
पधाने तु च सानुम्हि, विसाणे **सिङ्ग** मुच्चते॥

८८८.दिट्ठा'दिमग्गे ञाण'क्खि, क्खण लद्धीसु **दस्सनं।**
हेमे पञ्चसुवण्णे च, **निक्खो** नित्थी पसाधने॥

८८९.तिथिभेदे च साखादि, फळुम्हि **पब्ब** मुच्चते।
नागलोके तु **पातालं,** भासितं बलवामुखे॥

८९०.कामजे कोपजे दोसे, **ब्यसन**ञ्च विपत्तियं।
अथो'पकरणे सिद्धि, कारकेसु च **साधनं॥**

८९१.तीस्वीरितो [तीस्वितो (टी॰)] दानसीले, **वदञ्ञू** वग्गुवादिनि।
पुरक्खतो भिसित्ते च, पूजिते पुरतोकते॥

८९२.**मन्दो** भाग्यविहीने चा, प्पके मूळ्हा'पटूस्वपि।
वुद्धियुत्ते समुन्नद्धे, उप्पन्ने **उस्सितं** भवे॥

८९३.रथङ्गे'**क्खो** सुवण्णस्मिं, पासके, **अक्ख** मिन्द्रिये।
सस्सते च **धुवो** तीसु, **धुवं** तक्के च निच्छिते॥

८९४हरे **सिवो, सिवं** भद्द, मोक्खेसु, जम्बुके **सिवा।**
सेनायं सत्तियञ्चेव, थूलत्ते च **बलं** भवे॥

८९५.सङ्ख्या नरकभेदेसु, **पदुमं** वारिजे प्यथ।
देवभेदे **वसु** पुमे, पण्डकं रतने धने॥

८९६.**निब्बानं** अत्थगमने, अपवग्गे सिया थ च।
सेतम्बुजे **पुण्डरीकं,** ब्यग्घे रुक्खन्तरे पुमे॥

८९७उपहारे **बलि** पुमे, करस्मिंचा'सुरन्तरे।
सुक्कं तु सम्भवे, **सुक्को,** धवले, कुसले तिसु॥

८९८.**दायो** दाने विभत्तब्ब, धने च पितुनं वने [धने (टी०)]।
पभुत्ता'यत्तता'यत्ता', भिलासेसु **वसो** भवे॥

८९९.**परिभासन** मक्कोसे, नियमे भासने थ च,
धनम्हि **सेळनं** योध, सीहनादम्हि दिस्सति॥

९००.**पभवो** जातिहेतुम्हि, ठाने चाद्युपलद्धियं।
अथो'**तु** नारिपुप्फस्मिं, हेमन्तादिम्हि च द्विसु॥

९०१.**करणं** साधकतमे, क्रिया गत्तेसु इन्द्रिये।
तातो [ताळो (सी०)] तु कुञ्चिकायञ्च, तूरियङ्गे दुमन्तरे॥

९०२.पुप्फे फले च **पसवो,** उप्पादे गब्भमोचने।
गायने गायके अस्से, **गन्धब्बो** देवतान्तरे॥

९०३.विना पुप्फं फलग्गाहि, रुक्खे **वनप्पति।**
आहते हेमरजते, **रूपियं** रजतेपि च॥

९०४खगादिबन्धने **पासो,** केसपुब्बो चये प्यथ।
तारा'क्खिमज्झे नक्खत्ते, **तारो** उच्चतरस्सरे॥

९०५पत्ते च लोहभेदस्मिं, **कंसो** चतुकहापणे।
मज्झिमो देहमज्झस्मिं, मज्झभवे च सो तिसु॥

९०६.**आवेसनं**भूतावेसे, सिप्पसाला घरेसु च।
सोभा सम्पत्तीसु **सिरी, लक्खी**त्थी देवताय च॥

९०७**कुमारो** युवराजे च, खन्दे वुत्तो सुसुम्हि च।
अथा'नित्थी **पवाळो** च, मणिभेदे तथा'ङ्कुरे॥

९०८.**पणो** वेतन मूलेसु, वोहारे च धने मतो।
पटिग्गहो तु गहणे, कथितो भाजनन्तरे॥

९०९.असुभे च सुभे कम्मे, **भाग्यं** वुत्तं द्वये प्यथ।
पिप्फलं तरुभेदे च, वत्थच्छेदनसत्थके॥

९१०.**अपवग्गो** परिच्चागा', वसानेसु विमुत्तियं।
लिङ्गं तु अङ्गजातस्मिं, पुमत्तादिम्हि लक्खणे॥

९११. चागे सभावे निम्माने, **सग्गो** ज्झाये दिवेप्यथ।
रोहितो लोहिते मच्छ, भेदे चेव मिगन्तरे॥

९१२.**निद्दा** निप्फत्तियं चेवा, वसानम्हि अदस्सने।
कण्टको तु सपत्तस्मिं, रुक्खङ्गे लोमहंसने॥

९१३.मुख्यो'पायेसु वदने, आदिस्मिं **मुख** मीरितं।
दब्बं भब्बे गुणाधारे, वित्ते च बुध दारुसु॥

९१४.**मानं** पमाणे पत्थादो, **मानो** वुत्तो विधाय च।
अथो परिस्समे वुत्तो, **वायामो** वीरियेपि च॥

९१५.सरोरुहे **सतपत्तं, सतपत्तो** खगन्तरे।
छिद्दे तु छिद्दवन्ते च, **सुसिरं** तूरियन्तरे॥

९१६.एकस्मिं सदिसे सन्ते, **समानं** वाच्चलिङ्गिकं।
अथो गारव भीतीसु, संवेगे **सम्भमो** मतो॥

९१७.**जुण्हा** चन्दप्पभायञ्च, तदुपेतनिसाय च।
विमानं देवतावासे, सत्तभूमिघरम्हि च॥

९१८.मासे **जेट्ठो,** तिवुद्धा'ति, प्पसत्थेसु च तीसु सो।
धम्मे च मङ्गले **सेय्यो,** सो पसत्थतरे तिसु॥

९१९.आदिच्चादिम्हि गहणे, निबन्धे च घरे **गहो।**
काचो तु मत्तिकाभेदे, सिक्कायं नयनामये॥

९२०.तीसु **गामणि** सेट्ठस्मिं, अधिपे गामजेट्ठके।
बिम्बं तु पटिबिम्बे च, मण्डले बिम्बिकाफले॥

९२१.भाजनादि परिक्खारे, **भण्डं** मूलधनेपि च।
मग्गो त्वरियमग्गे च, सम्मादिट्ठादिके, पथे॥

९२२.**समा** वस्से, **समो** खेद, सन्तीसु, सो निभे तिसु।
चापेत्वि**स्सास,** मुसुनो, **इस्सासो** खेपकम्हि च॥

९२३.**बालो** तीस्वा'दिवयसा, समङ्गिनि अपण्डिते।
रत्तं तु सोणिते, तम्बा, नुरत्त, रञ्जिते तिसु॥

९२४तचे काये च **तन्वि**त्थी, तीस्व'प्पे विरळे किसे।
उतुभेदे तु **सिसिरो,** हिमे सो सीतले तिसु॥

९२५.**सक्खरा** गुळभेदे च, कथलेपि च दिस्सति।
अनुग्गहे तु सङ्खेपे, गहणे **सङ्गहो** मतो॥

९२६.दक्खे च तिखिणे ब्यत्ते, रोगमुत्ते **पटु**त्तिसु।
राजा तु खत्तिये वुत्तो, नरनाथे पभुम्हि च॥

९२७.**खल**ञ्च धञ्ञकरणे, कक्के नीचे **खलो** भवे।
अथु'प्पादे **समुदयो,** समूहे पच्चयेपि च॥

९२८.ब्रह्मचारी गहट्ठादो, **अस्समो** च तपोवने।
भयङ्करे तु कठिने, **कुरूरो** तीसु निद्दये॥

९२९.**कनिट्ठो कनियो** तीसु, अत्यप्पे'तियुवे प्पथ।
सीघम्हि **लहु** तं, इट्ठ, निस्सारा'गरुसुत्तिसु॥

९३०.**अधरो** तीस्वधो हीने, पुमे दन्तच्छदे प्पथ।
सुस्सुसा सोतु मिच्छाय, सा पारिचरियाय च॥

९३१.**हत्थो** पाणिम्हि रतने, गणे सोण्डाय भन्तरे।
आवाटे उदपाने च, **कूपो** कुम्भे च दिस्सति॥

९३२.आदो पधाने **पठमं, पमुख**ञ्च तिलिङ्गिकं।
वज्जभेदे च **वित तं,** तं वित्थारे तिलिङ्गिकं॥

९३३.**सारो** बले थिरंसे च, उत्तमे सो तिलिङ्गिको।
भारो तु खन्धभारादो, द्विसहस्सपलेपि च॥

९३४मन्दिरे रोगभेदे च, **खयो** अपचयम्हि च।
वाळो तु सापदे सप्पे, कुरूरे सो तिलिङ्गिको॥

९३५.**सालो** सज्जद्दुमे रुक्खे, सालागेहे च दिस्सति।
सोते तु **सवनं** वुत्तं, यजने सुतियम्पि च॥

९३६.तीसु **पतो परेतो** च, मते च पेतयोनिजे।
ख्याते तु हट्ठे विञ्ञाते, **पतीतं** वाच्चलिङ्गिकं॥

९३७अधिप्पाये च आधारे, **आसयो** कथितो थ च।
पत्तं पक्खे दले, **पत्तो,** भाजने सो गते तिसु॥

९३८.कुसले **सुकतं,** सुट्ठु, कते च **सुकतो** तिसु।
तपस्सी त्व'नुकम्पाया, रहे वुत्तो तपोधने॥

९३९.तीसु सुरादिलोलस्मिं, **सोण्डो** हत्थिकरे द्विसु।
अस्सादने तु **रसनं,** जिव्हायञ्च धनिम्हि च॥

९४०**पणीतो** तीसु मधुरे, उत्तमे विहिते प्यथ।
अञ्जसे विसिखायञ्च, पन्तियं **वीथि** नारियं॥

९४१.पापस्मिं गगने दुक्खे, ब्यसने चा'**घ** मुच्चते।
समूहे **पटलं** नेत्त, रोगे वुत्तं छदिम्हि च॥

९४२**सन्धि** सङ्घट्टने वुत्तो, **सन्धि**'त्थि पटिसन्धियं।
सत्तन्नं पूरणे सेट्ठे, तिसन्ते **सत्तमो** तिसु॥

९४३**ओजा** तु यापनायञ्च, **ओजो** दित्ति बलेसु च।
अथो **निसामनं** वुत्तं, दस्सने सवनेपि च॥

९४४**गब्भो** कुच्छिट्ठसत्ते च, कुच्छि ओवरकेसु च।
खण्डने त्व'**पदान**ञ्च, इतिवुत्ते च कम्मनि॥

९४५.चित्तके रुक्खभेदे च, **तिलको** तिलकाळके।
सीलादो **पटिपत्ति**'त्थी, बोधे पत्ति पवत्तिसु॥

९४६.असुम्हि [आयुम्हि (टी॰), ४०७-गाथा पस्सितब्बा] च बले **पाणो,** सत्ते हदयगा'निले।
छन्दो वसे अधिप्पाये, वेदे'च्छा'नुट्ठुभादिसु॥

९४७.कामोघादो, समूहस्मिं, **ओघो**वेगे जलस्स च।
कपालं सिरसट्ठिम्हि, घटादि सकलेपि च॥

९४८.वेण्वादिसाखाजालस्मिं, लग्गकेसे **जटा**'लये।
सरणं तु वधे गेहे, रक्खितस्मिञ्च रक्खणे॥

९४९.थियं **कन्ता** पिये, **कन्तो,** मनुञ्ञे, सो तिलिङ्गिको।
गवक्खे तु समूहे च, **जालं** मच्छादिबन्धने॥

९५०.पुच्छायं गरहायञ्चा, नियमे **किं** तिलिङ्गिकं।
ससद्धे तीसु निवापे, **सद्धं, सद्धा** च पच्चये॥

९५१.**बीजं** हेतुम्हि अट्ठिस्मिं, अङ्गजाते च दिस्सति।
पुब्बो पूये'ग्गतो [अग्गते (टी॰)] आदो,
सो दिसादो तिलिङ्गिको॥

९५२.फलचित्ते हेतुकते, लाभे धञ्ञादिके **फलं।**
आगमने तु दीघादि, निकायेसु च **आगमो॥**

९५३.**सन्तानो** देवरुक्खे च, वुत्तो सन्ततियं प्यथ।
उत्तरविपरीते च, सेट्ठे चा'**नुत्तरं** तिसु॥

९५४.सत्तिसम्पत्तियं वुत्तो, कन्तिमत्ते च **विक्कमो।**
छाया तु आतपाभावे, पटिबिम्बे पभाय च॥

९५५.गिम्हे **घम्मो निदाघो** च, उण्हे सेदजले प्यथ।
कप्पनं कन्तने वुत्तं, विकप्पे सज्जने'त्थियं॥

९५६.**अङ्गा** देसे बहुम्हे'**ङ्गं,** अङ्गो देसे वपुम्ह'[ङ्ग (टी॰)] तथा'वयवहेतुसु।

देवालये च थूपस्मिं, **चेतियं** चेतिय'द्दुमे॥

९५७**सज्जनो** साधुपुरिसे, **सज्जनं** कप्पने प्यथ।
सुपिनं सुपिने सुत्त, विञ्ञाणे त मनित्थियं॥

९५८पच्चक्खे सन्निधाने च, **सन्निधि** परिकित्तितो।
भिय्यो बहुतरत्थे सो, पुनरत्थे'ब्ययं भवे॥

९५९.विसलित्तसरे **दिद्धो, दिद्धो** लित्ते तिलिङ्गिको।
वासे धूमादिसङ्खारे, **धिवासो** सम्पटिच्छने॥

९६०.वुत्तो **विसारदो** तीसु, सुप्पगब्भे च पण्डिते।
अथ **सित्थं** मधुच्छिट्ठे, वुत्तं ओदनसम्भवे॥

९६१.द्रवे वण्णे रसभेदे, **कसायो** सुरभिम्हि च।
अथो **उग्गमनं** वुत्तं, उप्पत्तु'द्धगतीसु च॥

९६२.लूखे निट्ठुरवाचायं, **फरुसं** वाच्चलिङ्गिकं।
पवाहो त्व'म्बुवेगे च, सन्दिस्सति पवत्तियं॥

९६३.निस्सये तप्परे इट्ठे, **परायण**पदं तिसु।
कवचे वारवाणे च, निम्मोकेपि च **कञ्चुको॥**

९६४लोहभेदे मतं **तम्बं, तम्बो** रत्ते तिलिङ्गिको।
तीसु त्व'**वसितं** ञाते, अवसानगते मतं॥

९६५बोधने च पदाने च, विञ्ञेय्यं **पटिपादनं।**
सेले निज्जलदेसे च, देवतासु **मरू**'रितो॥

९६६.**सत्थं** आयुध गन्थेसु, लोहे, **सत्थो** च सञ्चये।
जीविकायं विवरणे, वत्तने **वुत्ति** नारियं॥

९६७वीरिये सूरभावे च, कथीयति **परक्कमो।**
अथ **कम्बु** मतो सङ्खे, सुवण्णे वलयेपि च॥

९६८.**सरो** कण्डे अकारादो, सद्दे वापिम्हि'नित्थियं।
दुप्फस्से तिखिणे तीसु, गद्रभे ककचे **खरो॥**

९६९.सुरायु'पद्दवे कामा, सवादिम्हि च **आसवो।**
देहे वुत्तो रथङ्गे च, चतुरो'पधिसू'**पधि॥**

९७०**वत्थु**'त्तं कारणे दब्बे, भूभेदे रतनत्तये।
यक्खो देवे महाराजे, कुवेरा'नुचरे नरे॥

९७१.दारुक्खन्धे पीठिकायं, आपणे **पीठ** मासने।
परिवारे **परिक्खारो,** सम्भारे च विभूसने॥

९७२वोहारस्मिञ्च ठपने, **पञ्ञत्ति**'त्थी पकासने।
पटिभानं तु पञ्ञायं, उपट्ठित गिराय च॥

९७३वचनावयवे मूले, कथितो **हेतु** कारणे।
उदरे तु तथा पाचा, नलस्मिं **गहणी**'त्थियं॥

९७४**पियो** भत्तरि, जायायं, **पिया,** इट्ठे **पियो** तिसु।
यमराजे तु युगळे, संयमे च **यमो** भवे॥

९७५मुद्दिकस्स च पुप्फस्स, रसे खुद्दे **मधू**'रितं।
उल्लोचे तु च वित्थारे, **वितानं** पुन्नपुंसके॥

९७६.अपवग्गे च सलिले, सुधायं **अमतं** मतं।
मोहे तु तिमिरे सङ्ख्या, गुणे **तम** मनित्थियं॥

९७७खरे चा'कारिये तीसु, रसम्हि पुरिसे **कटु।**
पण्डके सुकते, **पुञ्ञं,** मनुञ्ञे पवने तिसु॥

९७८**रुक्खो** दुमम्हि, फरुसा, सिनिद्धेसु च सो तिसु।
उप्पत्तियं तु हेतुम्हि, सङ्गे सुक्के च **सम्भवो॥**

९७९**निमित्तं** कारणे वुत्तं, अङ्गजाते च लञ्छने।
आदि सीमापकारेसु, समीपे'वयवे मतो॥

९८०.वेदे च मन्तने **मन्तो, मन्ता** पञ्ञाय मुच्चते।
अनयो ब्यसने चेव, सन्दिस्सति विपत्तियं॥

९८१.**अरुणो** रंसिभेदे चा, ब्यत्तरागे च लोहिते।
अनुबन्धो तु पकता, निवत्ते नस्सनक्खरे॥

९८२.**अवतारो**'वतरणे, तित्थम्हि विवरे प्यथ।
आकारो कारणे वुत्तो, सण्ठाने इङ्गितेपि च॥

९८३.सुद्दित्थि तनये खत्ता, **उग्गो,** तिब्बम्हि सो तिसु।
पधानं तु महामत्ते, पकत्य'ग्ग'धितीसु च॥

९८४**कल्लं** पभाते, निरोग, सज्जदक्खेसु [युत्तदक्खेसु (क०)] तीसु तं।
कुहना कूटचरियायं, **कुहनो** कुहके तिसु॥

९८५**कपोतो** पक्खिभेदे च, दिट्ठो पारावते थ च।
सारदो सारदब्भूते, अपगब्भे मतो तिसु॥

९८६.तीसु खरे च कठिने, **कक्कसो** साहसप्पिये [साहसप्पिये=साहस+अप्पिये (टी०)]।
अकारिये तु गुय्हङ्गे, चीरे **कोपीन** मुच्चते॥

९८७मिगभेदे पटाकायं, मोचे च **कदली**'त्थियं।
दक्खिणा दानभेदस्मिं, वामतो'ञ्ञम्हि **दक्खिणो॥**

९८८.**दुतिया** भरियायञ्च, द्विन्नं पूरणियं मता।
अथुप्पादे सिया **धूम, केतु** वेस्सानरेपि च॥

९८९.भवनिग्गमने याने, द्वारे **निस्सरणं** सिया।
नियामको पोतवाहे, तिलिङ्गो सो नियन्तरि॥

९९०.अपवग्गे विनासे च, **निरोधो** रोधने प्यथ।
भये **पटिभयं** वुत्तं, तिलिङ्गं तं भयंकरे॥

९९१.**पिटकं** भाजने वुत्तं, तथेव परियत्तियं।
जरासिथिलचम्मस्मिं, उदरङ्गे मता **वलि॥**

९९२.**भिन्नं** विदारिते'ञ्ञस्मिं, निस्सिते वाच्चलिङ्गिकं।
उपजापे मतो **भेदो,** विसेसे च विदारणे॥

९९३.**मण्डलं** गामसन्दोहे, बिम्बे परिधिरासिसु।
आणाय मागमे लेखे। **सासनं** अनुसासने॥

९९४अग्गे तु **सिखरं** चा'यो, मयविज्झनकण्टके।
गुणुक्कंसे च विभवे, **सम्पत्ति** चेव **सम्पदा॥**

९९५.भूखन्तीसु **खमा,** योग्ये, हिते सक्के [युत्ते (टी०) १००१-गाथा पस्सितब्बा] **खमो** तिसु।
अद्धो भागे पथे काले, एकंसे’**द्धो**’ब्ययं भवे।
अथो **करीसं** वच्चस्मिं, वुच्चते चतुरम्बणे॥

९९६.**उसभो**’सध गो [उसभो उसभे (टी०)] सेट्ठे, सू’**सभं** वीसयट्ठियं।
सेतुस्मिं तन्ति पन्तीसु, नारियं **पाळि** कथ्यते॥

९९७.**कटो** जये’त्थिनिमित्ते, किलञ्जे सो कते तिसु।
महियं **जगती** वुत्ता, मन्दिरालिन्दवत्थुम्हि॥

९९८.वितक्के मथिते **तक्को,** तथा सूचिफले मतो।
सुदस्सनं सक्कपुरे, तीसु तं दुद्दसे’तरे॥

९९९.**दीपो**’न्तरीप पज्जोत, पतिट्ठा निब्बुतीसु च।
बद्धनिस्सित सेतेसु, तीसु तं मिहिते **सितं॥**

१०००.थियं **पजापति** दारे, ब्रह्मे मारे सुरे पुमे।
वासुदेवे’न्तके **कण्हो,** सो पापे असिते तिसु॥

१००१.**उपचारो** उपट्ठाने, आसन्ने अञ्ञरोपने।
सक्को इन्दे जनपदे, साकिये, सो खमे तिसु॥

१००२.सज्जने **परिहारो** च, सक्कारे चेव रक्खणे।
सोतापन्नादिके अग्गे, **अरियो** तीसु, द्विजे पुमे॥

१००३.**सुसुको** सुसुमारे च, बालके च उलूपिनि।
इन्दीवरं मतं नीलु, प्पले उद्दालपादपे॥

१००४.**असनो** पियके कण्डे, भक्खणे खिपने’ **सनं।**
युगे’धिकारे [विकारे (टी०)] वीरिये, पधाने चा’न्तिके **धुरो॥**

१००५.काळे च भक्खिते तीसु, लवित्ते **असितो** पुमे।
पवारणा पटिक्खेपे, कथिता’ज्झेसनाय च॥

१००६.उम्मारे एसिकत्थम्भे, **इन्दखीलो** मतो थ च।
पोत्थकं मकचिवत्थे, गन्थे लेप्यादि कम्मनि॥

१००७.**धञ्ञं** साल्यादिके वुत्तं, **धञ्ञो** पुञ्ञवति त्तिसु।

पाणि हत्थे च सत्ते भू, सण्हकरणियं मतो॥

१००८ तीसु **पीतं** हलिद्दाभे, हट्ठे च पायिते सिया।
ब्यूहो निब्बिद्धरच्छायं, बलन्यासे गणे मतो॥

१००९ लोहितादिम्हि लोभे च, **रागो** च रञ्जने मतो।
पदरो फलके भङ्गे, पवुद्ध दरियं पिच॥

१०१० **सिङ्घाटकं** कसेरुस्स, फले, मग्गसमागमे।
बहुलायञ्च खेळम्हि, **एळा,** दोसे'**ळ** मीरितं॥

१०११ **आधारो** चा'धिकरणे, पत्ताधारे' लवालके।
कारो' गभेदे सक्कारे, **कारा** तु बन्धनालये॥

१०१२ **करका** मेघपासाणे, **करको** कुण्डिकाय च।
पापने च पदातिस्मिं, गमने **पत्ति** नारियं॥

१०१३ **छिद्दं रन्धञ्च विवरं,** सुसिरे दूसनेपि च।
मुत्ता तु मुत्तिके, **मुत्तं,** पस्सावे, मुच्चिते तिसु॥

१०१४ निसेधे **वारणं,** हत्थि, लिङ्ग हत्थीसु **वारणो।**
दानं चागे मदे सुद्धे, खण्डने लवने खये॥

१०१५ सन्तोसे च निब्बाने, त्थङ्गमे **निब्बुति**'त्थियं।
नेगमो निगमुब्भूते, तथा'पणोपजीविनि॥

१०१६ हरितस्मिञ्च पण्णे च, **पलासो** किं सुकद्दुमे।
पकासो पाकटेतीसु, आलोकस्मिं पुमे मतो॥

१०१७ **अक्कं** फलम्हि, तं नासु, म्मुखे [नासमुखे (क०)] परिणते तिसु।
पिण्डो आजीवने देहे, पिण्डने गोळके मतो॥

१०१८ **वट्टो** परिब्बये कम्मा, दिके, सो वट्टुले तिसु।
पच्चाहारे **पटिहारो,** द्वारे च द्वारपालके॥

१०१९ नारियं **भीरु** कथिता, भीरुके सो तिलिङ्गिको।
विकटं गूथमुत्तादो, **विकटो** विकते तिसु॥

१०२० **वामं** सब्यम्हि, तं चारु, विपरीतेसु तीस्व'थ।
सङ्ख्याभेदे सरब्ये च, चिहणे **लक्ख** मुच्चते॥

१०२१ **सेणी**'त्थी समसिप्पीनं, गणे चा'वलियं पिच।
सुधायं धूलियं **चुण्णो, चुण्ण**ञ्च वासचुण्णके॥

१०२२ ञेतब्बे'तिप्पसत्थे'ति, वुद्धे **जेय्यं** तिसू'रितं।
तक्के तु **मथितं** होत्या,
लोलिते **मथितो** तिसु॥

१०२३ **अब्भुतो**'च्छरिये तीसु, पणे चेवा'**ब्भुतो** पुमे।
मेचको पुच्छमूलम्हि, कण्हेपि **मेचको** तिसु॥

१०२४ **वसवत्ती** पुमे मारे, वसवत्तापके तिसु।
सम्भवे चा'**सुचि** पुमे, अमेज्झे तीसु दिस्सति॥

१०२५ **अच्छो** इक्के पुमे वुत्तो, पसन्नम्हि तिलिङ्गिको।
बळिसे सेलभेदे च, **वङ्को,** सो कुटिले तिसु॥

१०२६ कुणपम्हि **छवो** ञेय्यो,
लामके सो तिलिङ्गिको।
सब्बस्मिं **सकलो** तीसु, अद्धम्हि पुरिसे सिया॥

१०२७ छन्दग्गाहादिके चेवु, **प्पादो** उप्पत्तियं पिच।
पदुस्सने **पदोसो** च, कथितो संवरीमुखे॥

१०२८ रुधिरे **लोहितं** वुत्तं, रत्तम्हि **लोहितो** तिसु।
उत्तमङ्गे पुमे **मुद्धा, मुद्धो** मूळ्हे तिलिङ्गिको॥

१०२९ युद्धम्हि **विजितं** वुत्तं, जिते च **विजितो** तिसु।
परित्तं तु परित्ताणे, **परित्तो** तीसु अप्पके॥

१०३० **कुम्भण्डो** देवभेदे च, दिस्सति वल्लिजातियं।
चतुत्थंसे पदे **पादो,** पच्चन्तसेलरंसिसु॥

१०३१ **वङ्गो** लोहन्तरे **वङ्गा,** देसे पुमे बहुम्हि च।
कम्मारभण्डभेदे च, खटके **मुट्ठि** च द्विसु॥

१०३२ **अम्बणं** दोणियं चे'का, दसदोणप्पमाणके।
अधिट्ठितिय माधारे, ठाने'**धिट्ठान** मुच्चते॥

१०३३ पुमे **महेसी** सुगते, देवियं नारियं मता।
उपद्दवे **उपसग्गो,** दिस्सति पादिकेपि च॥

१०३४ **वक्कं** कोट्ठासभेदस्मिं, **वक्को** वङ्के तिसु'च्चते।
विज्जा वेदे च सिप्पे च, तिविज्जादो च बुद्धियं॥

१०३५ समाधिम्हि पुमे'**कग्गो,** नाकुले वाच्चलिङ्गिको।
पज्जं सिलोके, **पज्जो**'द्धे, **पज्जो** पादहिते तिसु॥

१०३६ **कतको** रुक्खभेदस्मिं, **कतको** कित्तिमे तिसु।
विधेय्ये **अस्सवो** तीसु, पुब्बम्ही पुरिसे सिया॥

१०३७ कल्याणे कथितं **खेमं,** तीसु लद्धत्थरक्खणे।
अथो नियोजने वुत्तं, कारियेपि **पयोजनं॥**

१०३८ **अस्सत्थो** तीसु अस्सास, प्पत्ते, बोधिद्दुमे पुमे।
तीसु **लुद्दो** कुरूरे च, नेसादम्हि पुमे सिया॥

१०३९ **विलग्गो** तीसु लग्गस्मिं, पुमे मज्झम्हि दिस्सति।
अड्ढो त्वनित्थियं भागे, धनिम्हि वाच्चलिङ्गिको॥

१०४० **कट्ठं** दारुम्हि, तं किच्छे, गहने कसिते तिसु।
ससन्ताने च विसये, गोचरे' **ज्झत्त** मुच्चतेति॥

इति अद्धानेकत्थवग्गो।

१०४१ भुवने च जने **लोको,** मोरेत्वग्गिम्हि सो **सिखी।**
सिलोको तु यसे पज्जे,
रुक्खे तु सामिके **धवो॥**

१०४२ वटब्यामेसु **निग्रोधो, धङ्को** तु वायसे बके।
वारो त्व'वसरा'हेसु, कुचेत्वब्भे **पयोधरो॥**

१०४३ उच्छङ्गे लक्खणे चा'**ङ्को, रस्मि**'त्थी जुति रज्जुसु।
दिट्ठो'भासेसु **आलोको,**

बुद्धो तु पण्डिते जिने॥

१०४४. सूरं'सूसु पुमे **भानू, दण्डो** तु मुग्गरे दमे।
देवमच्छेस्व'**निमिसो, पत्थो** तु मानसानुसु॥

१०४५. **आतङ्को** रोग तापेसु,
मातङ्गो सपचे गजे।
मिगो पसु कुरुङ्गेसु, उलूकि'न्देसु **कोसियो॥**

१०४६. **विग्गहो** कलहे काये, **पुरिसो** माणव'त्तसु।
दायादो बन्धवे पुत्ते, सिरे **सीसं** तिपुम्हि च॥

१०४७. बलिहत्थं'सूसु **करो,** दन्ते विप्पे'ण्डजे **द्विजो।**
वत्तं पज्जा'नना'चारे, धञ्ञङ्गे सुखुमे **कणो॥**

१०४८. **थम्भो** थूण जळत्तेसु, **सूपो** कुम्मास ब्यञ्जने।
गण्डो फोटे कपोलम्हि, **अग्घो** मूल्ये च पूजने॥

१०४९. **पकारो** तुल्य भेदेसु, **सकुन्तो** भासपक्खिसु।
भाग्ये **विधि** विधाने च, सरे खग्गे च **सायको॥**

१०५०. **सारङ्गो** चातके एणे, **पत्ती** तु सरपक्खिसु।
सेदे **पाको** विपाके थ,
भिक्खुभेदे चये **गणो॥**

१०५१. **रासि** पुञ्जे च मेसा'दो,
अस्से लोणे च **सिन्धवो।**
संवट्टे **पलयो** नासे, **पूगो** कमुकरासिसु॥

१०५२. अमते तु **सुधा** लेपे, **अभिख्या** नाम रंसिसु।
सत्ति सामत्थिये सत्थे, **मही** नज्जन्तरे भुवि।
लीला क्रिया विलासेसु,
सत्ते तु अत्रजे **पजा॥**

१०५३. ञाणे लाभे **उपलद्धि, पवेणी** कुथवेणिसु।
पवत्ति वुत्ति वत्तासु, वेतने भरणे **भति॥**

१०५४. आचारेपि **मरियादा, भूति** सत्ता समिद्धिसु।

सोप्पे पमादे **तन्दी** च, **यात्रा** गमन वुत्तिसु॥

१०५४ **निन्दा** कुच्छा'पवादेसु, **कङ्गु** धञ्ञ पियङ्गुसु।
मोक्खेसिवे सम**सन्ति,** विभागे **भत्ति** सेवने॥

१०५५ इच्छायं जुतियं **कन्ति,** रञ्जने सूरते **रति।**
गेहे **वसति** वासे थ, नदी सेनासु **वाहिनी॥**

१०५६ पत्थे नाळे च **नाळि**'त्थी, गणे **समिति** सङ्गमे।
तण्हा लोभे पिपासायं, मग्ग वुत्तीसु **वत्तनी॥**

१०५७ पाण्यङ्गे **नाभि** चक्कन्ते, याचे **विञ्ञत्ति** ञापने।
वित्ति तोसे वेदनायं, ठाने तु जीविते **ठिति॥**

१०५८ तरङ्गे चा'न्तरे **वीचि,** धीरत्ते धारणे **धिति।**
भू भूमियञ्च भमुके, सद्दे वेदे सवे **सुति॥**

१०५९ **गोत्तं** नामे च वंसे थ, नगरे च घरे **पुरं।**
ओकं तु निस्सये गेहे, **कुलं** तु गोत्तरासिसु॥

१०६० खेमे वित्ते **हिरञ्ञ**ञ्च, **पञ्ञाणं** त्व'ङ्क वुद्धिसु।
अथा'**म्बर**ञ्च खे वत्थे, **गुय्हं** लिङ्गे रहस्य'पि॥

१०६१ **तपो** धम्मे वते चेव, पापे त्वा'गुम्हि **किब्बिसं।**
रतनं मणि सेट्ठेसु, **वस्सं** हायन वुट्ठिसु॥

१०६२ **वनं** अरञ्ञ वारीसु, खीरम्हि तु जले **पयो।**
अक्खरं लिपि मोक्खेसु, **मेथूनं** सङ्गमे रते॥

१०६३ **सोतं** कण्णे पयोवेगे, **रिट्ठं** पापा'सुभेसु च।
आगु पापा'पराधेसु, केतुम्हि चिहने **धजो॥**

१०६४ **गोपुरं** द्वारमत्तेपि, **मन्दिरं** नगरे घरे।
वाच्चलिङ्गा परमितो, **ब्यत्तो** तु पण्डिते फुटे॥

१०६५ **वल्लभो** दयिते'ज्झक्खे, जले **थूलो** महत्यपि।
कुरूरे भेरवे **भीमो,**
लोलो तु लोलुपे चले॥

१०६७ **बीभच्छो** विकते भीमे, कोमले तिखिणे **मुदु।**
इट्ठे च मधुरे **सादु,** सादुम्हि **मधुरो** पिये॥

१०६८ सिते तु सुद्धे **ओदातो, द्विजिव्हो** सूचका'हिसु।
सक्के **समत्थो** सम्बन्धे, **समत्तं** निट्ठिता'खिले॥

१०६९ **सुद्धो** केवल पूतेसु, **जिघञ्ञो**'न्ता'धमेसु च।
पोणो'पनत निन्नेसु, अञ्ञ नीचेसु चे'**तरो॥**

१०७० **सुचि** सुद्धे सिते पूते, **पेसलो** दक्खचारुसु।
अधमो कुच्छिते ऊने, अप्पिये प्य'**लिको** भवे॥

१०७१ पापे असुद्धे **संकिण्णो, भब्बं** योग्ये च भाविनि।
सुखुमो अप्पका'णूसु, **वुद्धो** थेरे च पण्डिते॥

१०७२ सुभे साधुम्हि **भद्दो** थ, त्या'दो च विपुले **बहु।**
धीरो बुधे धितिमन्ते, **वेल्लितं** कुटिले धुते॥

१०७३ **विसदो** ब्यत्त सेतेसु, **तरुणो** तु युवे नवे।
योग्गं याने, खमे **योग्गो,**
पिण्डितं गणिते घने॥

१०७४ बुधे'**भिजातो** कुलजे, वुद्धो'रूसु **महल्लको।**
कल्याणं सुन्दरे चापि, **हिमो** तु सीतलेपि च॥

१०७५ लोले तु सीघे **चपलो,** वुत्ते **उदित** मुग्गते।
आदित्ते गब्बिते **दित्तो, पिट्ठं** तु चुण्णितेपि च॥

१०७६ विगते वायिते [वायने (क०)] **वीतं, भावितं** वड्ढितेपि च।
भज्जिते पतिते **भट्ठो, पुट्ठो** पुच्छित पोसिते॥

१०७७ **जातो** भूते चये **जातं,**
पटिभागो समा'रिसु।
सूरो वीरे रविसूरे, **दुट्ठो** कुद्धे च दूसिते॥

१०७८ **दिट्ठो**'रिम्हि'क्खिते **दिट्ठो** [दिट्ठं (क०)],
मूळ्हे पोते च **बालिसो।**
निन्दायं खेपने **खेपो, नियमो** निच्छये वते॥

१०७९ सलाकायं **कुसो** दब्भे,
बाल्यादो तु खये **वयो।**
लेप गब्बेस्व'**वलेपो, अण्डजो** मीनपक्खिसु॥

१०८० बिलाले नकुले **बब्बु, मन्थो** मन्थनसत्तुसु।
वालो केसे'स्सादिलोमे,
सङ्घातो घातरासिसु॥

१०८१ गोपगामे रवे **घोसो, सूतो** सारथिवन्दिसु।
माल्यं तु पुप्फे तद्दामे, **वाहो** तु सकटे हये॥

१०८२ खये'च्चने चा'**पचयो, कालो** समय मच्चुसु।
भे **तारका** नेत्तमज्झे, **सीमा'** वधि, ट्ठितीसु च॥

१०८३ **आभोगो** पुण्णता'वज्जे-
स्वा'**ळि'**त्थी सखि सेतुसु।
सत्ते थूले तीसु **दळ्हो, लता** साखाय वल्लियं॥

१०८४ **मुत्ति'**त्थी मोचने मोक्खे,
कायो तु देह रासिसु।
नीचे **पुथुज्जनो** मूळ्हे, **भत्ता** सामिनि धारके॥

१०८५ सिखा, पिञ्छेसु **सिखण्डो,** सत्ते त्व'त्तनि **पुग्गलो।**
सम्बाधो संकटे गुय्हे,
नासे खेपे **पराभवो॥**

१०८६ **वच्चो** रूपे करीसे थ, **जुति'**त्थी कन्तिरंसिसु।
१०८७ **भब्भं** युत्ते च लद्धब्बे, खण्डे पण्णे **दलं** मतं।
सल्लं कण्डे सलाकायं, सुचित्ते **धावनं** गते।
भन्तत्थे **विब्भमो** हावे, **मोहो'**विज्जाय मुच्छने॥

१०८८ **सेदो** घम्मजले पाके,
गोळे उच्छुमये **गुळो।**
मित्ते सहाये च **सखा, विभू** निच्चप्पभूसु सो॥

१०८९ खग्गे कुरूरे **नेत्तिंसो,** परस्मिं अत्र तीस्व'**मु।**
कलङ्को'ङ्का'पवादेसु,

देसे **जनपदो** जने॥

१०९० पज्जे **गाथा** वचीभेदे, **वंसो** त्व'न्वयवेणुसु।
यानं रथादो गमने, सरूपस्मिं अधो **तलं**॥

१०९१ **मज्झो** विलग्गे वेमज्झे, **पुप्फं** तु कुसुमो'तुसु।
सीलं सभावे सुब्बते, **पुङ्गवो** उसभे वरे॥

१०९२ कोसे खगादिबीजे'**ण्डं, कुहरं** गब्भरे बिले।
नेत्तिंसे गण्डके **खग्गो, कदम्बो** तु दुमे चये॥

१०९३ भे'धेनुयं **रोहिणी**'त्थी, **वरङ्गं** योनियं सिरे।
अक्कोसे सपथे **सापो, पङ्कं** पापे च कद्दमे॥

१०९४ भोगवत्यु'रगे **भोगी, स्सरो** तु सिवसामिसु।
बले पभावे **वीरियं, तेजो** तेसु च दित्तियं॥

१०९५ **धारा** सन्तति खग्गङ्गे, **वानं** तण्हाय सिब्बने।
खत्ता सूते पटिहारे, वित्ति पीळासु **वेदना**॥

१०९६ थियं **मति**'च्छापञ्ञासु, पापे युद्धे रवे **रणो**।
लवोतु बिन्दु'च्छेदेसु, पलाले' [पलासे (टी॰), पलापे-टी (४५३-११२४) गाथा पस्सितब्बा] तिसये **भुसं**॥

१०९७ **बाधा** दुक्खे निसेधे च, मूलपदेपि **मातिका**।
स्नेहो तेले'धिकप्पेमे,
घरा'पेक्खासु **आलयो**॥

१०९८ केतुस्मिं **केतनं** गेहे, ठाने **भूमि**'त्थियं भुवि।
लेख्ये **लेखो** राजि **लेखा**, पूजिते **भगवा** जिने॥

१०९९ **गदा** सत्थे **गदो** रोगे, निसज्जा पीठेस्वा'**सनं**।
तथागतो जिने सत्ते,
चये देहे **समुस्सयो**॥

११०० **बिलं** कोट्ठास छिद्देसु, **वज्जं** दोसे च भेरियं।
काले दीघञ्जसे'**द्धानं**, आलियं **सेतु** कारणे॥

११०१ **ओकासो** कारणे देसे,

सभा गेहे च संसदे।
यूपो थम्भे च पासादे, **अयनं** गमने पथे॥

११०२ **अक्को** रुक्खन्तरे सूरे,
अस्सो कोणे हयेपि च।
अंसो खन्धे च कोट्ठासे,
जालं सूस्व'**च्चि** नो पुमे॥

११०३ भासा'सत्तेस्व' **भावो** थ,
अन्न मोदन भुत्तिसु।
जीवं पाने जने **जीवो,**
घासो त्व'न्ने च भक्खणे॥

११०४ छदने'**च्छादनं** वत्थे, **निकायो** गेहरासिसु।
अन्नादो **आमिसं** मंसे। **दिक्खा** तु यजने'च्चने॥

११०५ क्रियायं **कारिका** पज्जे,
केतु तु चिहने धजे।
कुसुमं थीरजे पुप्फे, वानरे तु बुधे **कवि॥**

११०६ अधरे खरभे **ओट्ठो, लुद्दो** तु लुद्दकेपि च।
कलुसं त्वा'विले पापे, पापे **कलि** पराजये॥

११०७ **कन्तारो** वन, दुग्गेसु, **चरो** चारम्हि चञ्चले।
जनावासे गणे **गामो, चम्मं** तु फलके तचे॥

११०८ **आमोदो** हास गन्धेसु,
चारु तु कनकेपि च।
सत्तायं **भवनं** गेहे, लेसे तु खलिते **छलं॥**

११०९ **वेरं** पापे च पटिघे, **तचो** चम्मनि वक्कले।
उच्चे'धिरोहे **आरोहो, नेत्तं** वत्थन्तर'क्खिसु॥

१११० पटिहारे मुखे **द्वारं,** पेते ञाते **मतो** तिसु।
मासो परण्ण कालेसु, **नग्गो** त्व'चेलकेपि च॥

११११ दोसे घाते च **पटिघो,** मिगादो छगले **पसु।**

अरूपे चा'व्हये **नामं, दरो** दरथ भीतिसु॥

१११२ याचने भोजने **भिक्खा,**
भारे त्व'तिसये **भरो।**
दब्बि'न्दजायासु **सुजा,** मेघे त्व'**ब्भं** विहायसे॥

१११३ **मोदको** खज्जभेदेपि, मणिके रतने **मणि।**
सेला'रामेसु **मलयो,**
सभाव'ङ्केसु **लक्खणं॥**

१११४ **हवि** सप्पिम्हि होतब्बे, **सिरो** सेट्ठे च मुद्धनि।
विचारेपि **विवेको** थ, **सिखरी** पब्बते दुमे॥

१११५ **वेगो** जवे पवाहे च, **सङ्कु** तु खिलहेतिसु।
निग्गहीते कणे **बिन्दु, वराहो** सूकरे गजे॥

१११६ नेत्तन्ते चित्तके'**पाङ्गं, सिद्धत्थो** सासपे जिने।
हारो मुत्तागुणे गाहे,
खारको मकुळे रसे॥

१११७ **अच्चयो'** तिक्कमे दोसे,
सेलरुक्खेस्व'**गो नगो।**
स्वप्पे'वधारणे **मत्तं, अपचित्य'**च्चने खये॥

१११८ छिद्दो'तरणेस्वो'**तारो,**
ब्रह्मे च जनके **पिता।**
पितामहो'य्यके ब्रह्मे,
पोतो नावाय बालके॥

१११९ रुक्खे वण्णे सुने **सोणो,**
सग्गे तु गगने **दिवो।**
वत्थे गन्धे घरे **वासो, चुल्लो** खुद्दे च उद्धने॥

११२० **कण्णो** कोणे च सवणे,
माला पुप्फे च पन्तियं।
भागो भाग्ये'कदेसेसु,
कुट्ठं रोगे' जपालके॥

११२१ **सेय्या** सेनासने सेने, चुन्दभण्डम्हि च'**ब्भमो।**
वत्थादिलोमं'**सु** करे, **निपातो** पतने'ब्यये॥

११२२ साखायं **विटपो** थम्भे, **सत्तु** खज्जन्तरे दिसे।
सामिको पति'यिरेसु, **पट्ठानं** गति हेतुसु॥

११२३ रागे **रङ्गो** नच्चट्ठाने, **पानं** पेय्ये च पीतियं।
इणु'क्खेपेसु **उद्धारो,** उम्मारे **एळको** अजे॥

११२४ **ब्यहारो** पोथने यामे,
सरदो हायनो'तुसु।
कुण्डिकाया'ळहके **तुम्बो,**
पलालो [पलापो (क०) ४५३-गाथा पस्सितब्बा] तु भुसम्हि च॥

११२५ खता'वाटे चये **कासु, पनिसा** कारणे रहो।
कासो पोटगले रोगे,
दोसो कोधे गुणे'तरे॥

११२६ चुत्य'ट्टाल'ट्टितेस्व'**ट्टो,** कीळायं कानने **दवो।**
उप्पत्तियं चो'**प्पतनं, उय्यानं** गमने वने॥

११२७ **वोकारो** लामके खन्धे, मूलो'पदासु **पाभतं।**
दसा' वत्था पटन्तेसु, **कारणं** घात, हेतुसु॥

११२८ हत्थिदाने **मदो** गब्बे, **घटा** घटन रासिसु।
उपहारो'भिहारेपि, **चयो** बन्धन रासिसु॥

११२९ **गन्धो** थोके घायनीये,
चागो तु दानहानिसु।
पाने पमोदे **पीति'**त्थी, इणे **गिवा** गलेपि च॥

११३० **पतिट्ठा** निस्सये ठाने, बलक्कारेपि **साहसं।**
भङ्गो भेदे पटे **भङ्गं, छत्तं** तु छवकेपि च॥

११३१ ञाणे भुवि च **भूरि'**त्ती, अनङ्गे **मदनो** दुमे।
पमातरिपि **माता** थ, वेठु'णीसेसु **वेठनं॥**

११३२ **सारिसो** तण्डुलेय्ये'य्ये,

मोक्खो निब्बान मुत्तिसु।
इन्दो’धिपति सक्केस्वा, **रम्मणं** हेतु गोचरे॥

११३३ अङ्के **सण्ठान** माकारे,
खेत्ते [वप्पे (पाकारमूले नेत्तजले उसुमे च वप्पो-टी)] वप्पो तटेपि च।
सम्मुत्य’नुञ्ञा वोहारे, स्व’थ लाजासु चा’**क्खतं**॥

११३४ **सत्रं** यागे सदादाने,
सोमो तु ओसधि’न्दुसु।
सङ्घातो युगगेहङ्गे, **खारो** ऊसे च भस्मनि॥

११३५ **आतापो** वीरिये तापे,
भागे सीमाय **ओधि** चाति॥

इति पादानेकत्थवग्गो।

अनेकत्थवग्गो निट्ठितो।

३. सामञ्ञकण्ड

४. अब्ययवग्ग

११३६ अब्ययं वुच्चते दानि, चिरस्सं तु चिरं तथा।
चिरेन चिररत्ताय, सह सद्धिं समं अमा॥

११३७ पुनप्पुनं अभिण्हञ्चा, सकिं चा’भिक्खणं मुहुं।
वज्जने तु विना नाना, अन्तरेन रिते पुथु॥

११३८ बलवं सुट्ठु चा’तीवा, **तिसये** किमुत स्व’ति।
अहो तु किं किमू’ दाहु, विकप्पे किमुतो’द च॥

११३९ **अव्हाने** भो अरे अम्भो,
हम्भो रे जे’ङ्ग आवुसो।
हे हरे थ कथं किंसु, ननु कच्चि नु किं समा॥

११४० अधुने’तरही’दानि, सम्पति अञ्ञदत्थु तु।
तग्घे’ **कंसे** ससक्कञ्चा, द्धा कामं जातु वे हवे॥

११४१ यावता तावता याव, ताव कित्तावता तथा।
एत्तावता च कीवे'ति, **परिच्छेदत्थवाचका॥**

११४२ यथा तथा यथेवे'वं, यथानाम यथाहि च।
सेय्यथाप्ये'वमेवं, वा, तथेव च यथापि च॥

११४३ **एवम्पि** च सेय्यथापि, नाम यथरिवा'पि च।
पटिभागत्थे यथाच, विय तथरिवा'पि च॥

११४४ सं. सामञ्च सयं चाथ, आम साहु लहू'पि च।
ओपायिकं पतिरूपं, साध्वे'वं **सम्पटिच्छने॥**

११४५ यं. तं यतो ततो येन,
तेने'ति कारणे सियुं।
असाकल्ये तु **चन चि,** निप्फले तु **मुधा** भवे॥

११४६ कदाचि जातु तुल्या'थ, सब्बतो च समन्ततो।
परितो च समन्तापि, अथ मिच्छा मुसा भवे॥

११४७ **निसेधे** न अनोमा'लं, नहि चेतु सचे यदि।
अनुकुल्ये तु **सद्ध**ञ्च,
नत्तं [रत्तं (टी०)] दोसो **दिवा** त्व'हे॥

११४८ ईसं किञ्चि मनं **अप्पे, सहसा** तु अतक्किते।
पुरे **ग्गतो** तु **पुरतो, पेच्चा'मुत्र**भवन्तरे॥

११४९ **अहो ही** विम्हये **तुण्ही,**
तु मोने था'वि पातु च।
तङ्खणे सज्जु सपदि, बलक्कारे **पसय्ह** च॥

११५० सुदं खो [वो (क०)] अस्सु यग्घे वे,हा'दयो **पदपूरणे।**
अन्तरेन'न्तरा अन्तो, **वस्सं नून** च निच्छये॥

११५१ आनन्दे **स**ञ्च **दिट्ठा** थ, विरोधकथने **ननु।**
कामप्पवेदने **कच्चि,** उसूयोपगमे'**त्थु** च॥

११५२ **एवा**'वधारणे ञेय्यं, यथात्तं तु यथातथं।
नीचं अप्पे, महत्यु'**च्चं,** अथ पातो पगे समा॥

११५३ निच्चे **सदा सनं** [सना (क०)] **पायो,**
बाहुल्ये बाहिरं बहि।
बहिद्धा बाहिरा बाह्ये, सीघेतु **सणिकं** भवे॥

११५४ **अत्थं** अदस्सने **दुट्ठु,** निन्दायं, वन्दने **नमो।**
सम्मा सुट्ठु पसंसायं, अथो सत्ताय **मत्थि** च॥

११५५ **सायं** साये'**ज्ज** अत्रा'हे,
सुवे तु **स्वे** अनागते।
ततो परे **परसुवे, हिय्यो**तु दिवसे गते॥

११५६ यत्थ यत्र यहिंचाथ, तत्थ तत्र तहिंतहं।
अथो उद्धञ्च उपरि, हेट्ठा तु च अधो समा॥

११५७ चोदने **इङ्घ हन्दा**'थ, आरादूरा च आरका।
परम्मुखा तु च रहो, सम्मुखा त्वा'वि पातु च॥

११५८ **संसयत्थम्हि** अप्पेव, अप्पेवनाम नू'ति च।
निदस्सने इति'त्थञ्च, एवं, किच्छे **कथञ्चि** च॥

११५९ **हा** खेदे **सच्छि** पच्चक्खे,
धुवं थिरे'वधारणे।
तिरो तु तिरियं चाथ, कुच्छायं **दुट्ठु कु**'च्चते॥

११६० **सुवत्थि** आसिट्ठत्थम्हि, निन्दायं तु **धी** [धि (क०)] कथ्यते।
कुहिञ्चनं कुहिं कुत्र, कुत्थ कत्थ कहं क्व थ॥

११६१ इहे'धा'त्र तु एत्था'त्थ,
अथ सब्बत्र सब्बधि।
कदा कुदाचनं चाथ, तदानि च तदा समा॥

११६२ आदिकम्मे भुसत्थे च, सम्भवो'तिण्ण तित्तिसु।
नियोगि'स्सरिय'प्पीति, दान पूजा'ग्ग, सन्तिसु॥

११६३ दस्सने तप्परे सङ्गे, पसंसा, गति, सुद्धिसु।
हिंसा, पकारन्तो'भाव, वियोगा'वयवेसु च।
पो'पसग्गो दिसायोगे, पत्थना, धितिआदिसु॥

११६४ **परा**सद्दो परिहानि, पराजय गतीसु च।
भुसत्थे पटिलोमत्थे, विक्कमा'मसनादिसु॥

११६५ निस्सेसा'भाव सन्यास, भुसत्थ मोक्ख रासिसु।
गेहा'देसो'पमाहीन, पसादनिग्गता'च्चये॥

११६६ निस्सनो'साननिक्खन्ता, धोभागेस्व'वधारणे।
सामीप्ये बन्धने छेक, न्तोभागो'परतीसु च॥

११६७ पातुभावे वियोगे च, निसेधादो **नि** दिस्सति।
अथो नीहरणे चेवा, वरणादो च **नी** सिया॥

११६८ उद्धकम्म वियोग त्त, लाभ तित्ति समिद्धिसु।
पातुभाव'च्चयाभाव, पबलत्ते पकासने।
दक्ख'ग्गतासु कथने, सत्तिमोक्खादिके **उ** च॥

११६९ **दु** कुच्छिते'सदत्थेसु, विरूपत्ते प्य'सोभने।
सिया'भावा'समिद्धीसु, किच्छे चा'नन्दनादिके॥

११७० **सं** समोधान सङ्खेप, समन्तत्त समिद्धिसु।
सम्मा भुस सह प्पत्था, भिमुखत्थेसु सङ्गते।
विधाने पभवे पूजा, पुनप्पुनक्रियादिसु॥

११७१ विविधा'तिसया'भाव, भुसत्ति'स्सरिया'च्चये।
वियोगे कलहे पातु, भावे भासे च कुच्छने॥

११७२ दूरा'नभिमुखत्तेसु, मोहा'नवट्ठितीसु च।
पधान दक्खता खेद, सहत्थादो **वि** दिस्सति॥

११७३ वियोगे जानने चा'धो,भाग निच्छय [भाग'निच्छय (भाग+अनिच्छय-टी)] सुद्धिसु।
ईसदत्थे परिभवे, देस ब्यापन हानिसु।
वचोक्रियाय थेय्ये च, ञाणप्पत्तादिके **अव**॥

११७४ पच्छा भुसत्त सादिस्या, नुपच्छिन्ना'नुवत्तिसु।
हीने च ततियत्था'धो, भागेस्व'नुगते हिते।
देसे लक्खण विच्छे'त्थ, म्भूत भागादिके **अनु**॥

११७५ समन्तत्थे परिच्छेदे, पूजा'लिङ्गन वज्जने।

दोसक्खाने निवासना, वञ्‍ञा'धारेसु भोजने।
सोक ब्यापन तत्वेसु, लक्खणादो सिया **परि**॥

११७६ आभिमुख्य विसिट्ठु'द्ध, कम्मसारुप्पवुद्धिसु।
पूजा'धिक कुला'सच्च, लक्खणादिम्हि चाप्य'**भि**॥

११७७ अधिकि'स्सर, पाठा'धि, ट्ठान, पापुणनेस्व'**धि**।
निच्छये चोपरित्ता'धि, भवने च विसेसने॥

११७८ पटिदाननिसेधेसु, वामा'दाननिवत्तिसु।
सादिसे पटिनिधिम्हि, आभिमुख्यगतीसु च॥

११७९ पतिबोधे पतिगते, तथा पुनक्रियाय च।
सम्भावने पटिच्चत्थे, **पती**ति लक्खणादिके।
सु सोभने सुखे सम्मा, भुस सुट्ठु समिद्धिसु॥

११८० आभिमुख्य, समीपा'दि, कम्मा'लिङ्गन पत्तिसु।
मरियादु'द्धकम्मि'च्छा, बन्धना'भिविधीसु **आ**॥
११८१ निवासा'व्हान गहण, किच्छे'सत्थ निवत्तिसु।
अप्पसादा'सि सरण, पतिट्ठा'विम्हयादिसु॥

११८२ अन्तोभाव भुसत्ता'ति, सय पूजास्व'तिक्कमे।
भूतभावे पसंसायं, दळ्हत्थादो सिया **अति**॥

११८३ सम्भावने च गरहा, पेक्खासु च समुच्चये।
पञ्हे संवरणे चेव, आसीसत्थे **अपी**'रितं॥

११८४ निद्देसे वज्जने पूजा, पगते वारणेपि च।
पदुस्सने च गरहा, चोरिका'दो सिया **अप**॥

११८५ समीपपूजा सादिस्स, दोसक्खानो'पपत्तिसु।
भुसत्तो'पगमा'धिक्य, पुब्बकम्मनिवत्तिसु।
गय्हाकारो'परित्तेसु, **उपे**'त्य [उपेत्य=उप+इति]'नसना'दिके॥

११८६ **एवं** निदस्सना'कारो, पमासु सम्पहंसने।
उपदेसे च वचन, पटिग्गाहे'वधारणे।
गरहाये'दमत्थे च, परिमाने च पुच्छने॥

११८७समुच्चये समाहारे, न्वाचये चे’तरीतरे।
पदपूरणमत्ते च, **च**सद्दो अवधारणे॥

११८८**इति** हेतुपकारेसु, आदिम्हि चा’वधारणे।
निदस्सने पदत्थस्स, विपल्लासे समापने॥

११८९समुच्चये चो’पमायं, संसये पदपूरणे।
ववत्थितविभासायं, **वा**’वस्सग्गे विकप्पने॥

११९०भूसने वारणे चा’**लं,** वुच्चते परियत्तियं।
अथो’**था**’नन्तरा’रम्भ, पञ्हेसु पदपूरणे॥

११९१पसंसागरहासञ्ञा, सीकारादो [स्वीकार (टी०)] पि **नाम** थ।
निच्छये चा’नुमानस्मिं, सिया **नून** वितक्कने॥

११९२पुच्छा’वधारणा’नुञ्ञा, सान्त्वना’लपने [सन्तनालपने (क०)] **ननु।**
वते’कंस, दया, हास, खेदा’लपन, विम्हये॥

११९३वाक्यारम्भ, विसादेसु, **हन्द** हासे’नुकम्पने।
याव तु **ताव** साकल्य, माना’वध्य’वधारणे॥

११९४पाची, पुर, ङ्गतोत्थेसु, **पुरत्था** पठमे प्यथ।
पबन्धे च चिरातीते, निकटागामिके **पुरा॥**

११९५निसेधवाक्यालङ्कारा, वधारणपसिद्धिसु।
खल्वा’सन्ने तु **अभितो**-
भिमुखो’भयतोदिके॥

११९६**कामं** यद्यपिसद्दत्थे, एकंसत्थे च दिस्सति।
अथो **पन** विसेसस्मिं, तथेव पदपूरणे॥

११९७**हि** कारणे विसेसा’व, धारणे पदपूरणे।
तु हेतुवज्जे तत्था’थ, **कु** पापे’सत्थ’कुच्छने॥

११९८**नु** संसये च पञ्हे थ, **नाना**’ नेकत्थ वज्जने।
किं तु पुच्छाजिगुच्छासु, **कं** तु वारिम्हि मुद्धनि॥

११९९**अमा** सहसमीपे थ, भेदे अप्पठमे **पुन।**

किरा’नुस्सवा’रुचिसु, **उदा**’प्यत्थे विकप्पने॥

१२०० पतीची चरिमे **पच्छा, सामि** त्वद्धे जिगुच्छने।
पकासे सम्भवे **पातु,**
अञ्ञोञ्ञे तु रहो **मिथो॥**

१२०१ **हा** खेदसोकदुक्खेसु, खेदे त्व’**हह** विम्हये।
भिंसापने [हिंसापने (टी॰)] **धी** [धि (क॰)] निन्दायं, पिधाने तिरियं **तिरो॥**

१२०२ तुन त्वान तवे त्वा तुं, धा सो था क्खत्तु, मेव च।
तो थ त्र हिञ्चनं हिंहं, धि ह हि ध धुना रहि॥

१२०३ तानि वोदाचनं दाज्ज, थं तत्तं ज्झ ज्जु आदयो।
समासो चा’ब्ययीभावो,
यादेसो चा’ब्ययं भवेति॥

इति अब्ययवग्गो।

सामञ्ञकण्डो ततियो।

अभिधानप्पदीपिका समत्ता।

निगमन

१. **सग्गकण्डो** च **भूकण्डो,** तथा **सामञ्ञकण्डि**ति।
कण्डत्तयान्विता एसा, अभिधानप्पदीपिका॥

२. तिदिवे महियं भुजगावसथे,
सकलत्थसमव्हयदीपनि’यं।
इह यो कुसलो मतिमा स नरो,
पटु होति महामुनिनो वचने॥

३. **परक्कमभुजो** नाम, भूपालो गुणभूसनो।
लङ्काय मासि तेजस्सी, जयी केसरिविक्कमो॥

४. विभिन्नं चिरं भिक्खुसङ्घं निकाय-
त्तयस्मिञ्च कारेसि सम्मा समग्गे।
सदेहं’व निच्चादरो दीघकालं,

महग्घेहि रक्खेसि यो पच्चयेहि॥

५. येन लङ्का विहारेहि, गामा'रामपुरीहि च।
किन्तिया विय सम्बाधी, कता खेत्तेहि वापिहि॥

६. यस्सा'साधारणं पत्वा, नुग्गहं सब्बकामदं।
अहम्पि गन्थकारत्तं, पत्तो विबुधगोचरं॥

७. कारिते तेन पासाद, गोपुरादिविभूसिते।
सग्गखण्डे'व तत्तोया, सयस्मिं पतिबिम्बिते॥

८. **महाजेतवना**'ख्यम्हि, विहारे साधुसम्मते।
सरोगामसमूहम्हि, वसता सन्तवुत्तिना॥

९. सद्धम्मट्ठितिकामेन, **मोग्गल्लानेन** धीमता।
थेरेन रचिता एसा, **अभिधानप्पदीपिका**ति॥